वापूके पत्र — ४ मणिवहन पटेलके नाम

[१२-२-'२१ से १३-१-'४८]

संपादिका

मणिबहन पटेल

अनुवादक

रामनारायण चौघरी



भूदक और प्रकासका जीवणणी हाह्याभाशी दैसाली -न्वेंशीवन-मुदेशस्त्रेय, अनुमदीवाद-१४

नवजीवन दूस्ट, १९६०
 पर्टन परपारोगः

पहली आवृत्ति ३०००

LIBRATY 31630

प्रकाशकका निवेदन

राष्ट्रपिता गांधीजीने अपने संपर्कमें आनेवाले असंस्य लोगोंको असंस्य पत्र विविध विषयों पर लिखे हैं। व्यक्ति, समाज और राष्ट्रके निर्माणमें अनका बहुत वड़ा महत्त्व है।। अस महत्त्वको ध्यानमें रखकर ही नवजीवन ट्रस्टने गांधीजीके पत्रोंके प्रकाशनका काम हाथमें लिया है। अभी तक हम 'वापूके पत्र;— १: आश्रमकी वहनोंको ', 'वापूके पत्र— २: सरदार वल्लभभाओके नाम ', 'वापूके पत्र— ३: कुसुमवहन देसाओके नाम 'तथा 'वापूके पत्र मीराके नाम '— शीर्षकसे गांधीजीके चार पत्र-संग्रह प्रकाशित कर चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक अनके पत्र-संग्रहकी पांचवी पुस्तक है। भविष्यमें हम जल्दी ही 'वापूके पत्र – ५: कु० प्रेमावहन कंटकके नाम 'पुस्तक प्रकाशित करेंगे। असका गांधीजीके पत्र-संग्रहमें अपना अक विशिष्ट स्थान है।

श्री मणिवहनके नाम लिखे गये अिन पत्रोंमें हम आदिसे अन्त तक अंक वात्सल्यपूर्ण पिताका हृदय घड़कता हुआ अनुभव कर सकते हैं। श्री मणिवहनने छोटी अुमरमें माताका आश्रय खो दिया था। और कुछ सामाजिक रूढ़ियों और पारिवारिक मर्यादाओं के कारण वहुत वड़ी अुमर तक वे पिताके प्रेमका भी अनुभव नहीं कर सकी थीं, अिन परिस्थितियों में पली हुआ श्री मणिवहनको गांधीजीने अपनी गोदमें लेकर पिता और माता दोनों का स्थान संभाला और अुस कमीको पूरा किया तथा अुनके जीवन-निर्माणका काम अपने हाथमें लेकर खूव सावधानीसे अिस तरह अुन्हें तैयार किया कि अुनकी सारी शक्तियां राष्ट्रसेवाके कार्यमें प्रयुक्त हो सकें। यह निर्माण अुन्होंने किस प्रकार किया, असकी झांकी अिन पत्रोंमें वहुत अच्छी तरह देखनेको मिलती है। गांधीजीके जीवनका यह पहलू कितना

अधिक गुप्त रहा होगा। क्योंकि अस पहलूका ययार्थ दर्गन तो असे निजी पत्रोमें ही होता है। अस दृष्टिमे यह पत्र-मग्रह जेक कीमती दस्तावेज है।

जिनके पास गाधीजीके पत्र हों असे दूसरे भाओ-बहनोको भी यदि अससे अपने पासके पत्र हमारे पास भेजनेकी प्रेरणा मिले, तो यह माला अधिक समृद्ध होगीत मूल पत्र सुरक्षित क्यमें वापस भेज दिये जायने।

ं आसा है जिस पत्र-सम्महका भी जिससे पहलेकी पुस्तकोंकी तरह ही स्वागत किया जायगा।

१५-७-150 " --

्ञित पत्रोंके सम्बन्धमें

पू० वापूजीका अवसान होने पर नवजीवन ट्रस्टने सोचा कि अनका साहित्य, अनके लिखे हुं पत्र आदि प्रकाशित करके लोगों में अनके विचारोंका भरसक प्रचार किया जाय और लोगों में असके लिखे जो भूख है असका समाधान किया जाय। अस विचारके अनुसार नवजीवन ट्रस्टने पू० वापूजीके पत्रोंकी मालामें तीन संग्रह प्रकाशित किये हैं। यह चौया संग्रह है। वापूजी पत्रों हारा मनुष्यको किस प्रकार बनाते थे और अससे जो काम लेना तिय किया हो अस कामके लिखे असे कैसे तैयार करते थे, यह संग्रह असका अक नमूनों है। ये पत्र जैसे मेरे जीवनके निर्माणमें मेरे लिखे अपयोगी सिद्ध हुं वैसे ही पाठेंकोंके लिखे भी होंगे, यह समझकर अन्हें प्रकाशित करनेकी मुझे प्रेरणा हुं बी है। अनसे अनेक विपयोंके सम्बन्धमें पाठकोंको पू० बापूजीके विचार जाननेको मिलेंगे और कुछ न कुछ सीखनेको भी मिलेगा असा मेरी खयाल है।

सन् १९२० में मैं मैट्रिककी कक्षामें अध्ययन कर रही थीं।
परीक्षामें छह मास बाकी रहें थे। बितनेमें पूर्ण वापूजीने विद्यार्थियोंसे
स्कूल-कॉलेजींका बहिष्कार करनेकी पुकार की। बिस पुकारके अनुसार
सितम्बर १९२० में मैंने सरकारी स्कूल छोड़ दिया। सन् १९२१ के
आरम्भसे बिस पत्र-संग्रहकी शुरुआत होती है। मेरे शाला-जीवनके
अन्तक साथ ही गुरू हुआ यह पत्र-व्यवहार ठेठ वापूजीके जीवनका बेकाबेक बन्त हुआ बुसके थोड़े दिन पहले तक चला। जनवरी १९३० से
सितम्बर १९४६ में जब पूर्ण बापू दिल्ली रहने गये तब तक हमारा
कोशी स्थायी घर नहीं था। फिर भी ये सब पत्र सुरक्षित रहे, यह
बीश्वरकी कृपा ही कही जायगी। का जिल्ला करने

मुझे बनातेमें पू० बापूजीने किनना परिश्रम किया है! मुझ पर अन्होंने कितना प्रेम बरमाया है! आज मुझमें जो भी अच्छे गुण मा आदर्ने हैं वे सब मेरे जीवनके दो निर्मानाओं — पू० बापूजी और पू० बापू — द्वारा मेरे लिओ किये गये परिश्रमके कारण है। अनके वास्मत्य- भरे परिश्रमके बावजूद मुझमें कोजी किमया अथवा दोय रहे हो तो ये मेरी अशक्तिके कारण है। मेरा यह दुर्भाग्य है कि दो दो महापुरयों के प्रयत्नाके बावजूद मैं अपनी कमजोरीके कारण अपने दोय दूर न कर सकी।

सितम्बर १९४९ में डॉक्टर लोग पू॰ बापूको जिलाजके लिखे आग्रह करके बम्बभी ले गये थे। पू॰ बापू वहा बिडला-भवनमें ठहरे थे। नरहरिमाशी वहा अनकी दुराल पूछने आये थे। श्रुम समय जिन पत्रोकी नक्लोका सग्रह मैंने अनके हायमें, रखा। अन्हींने जिन सब-पत्रोको पढ़ लिया और सुझाया कि पत्रोमें जहा जरूरी हो वहा नीचे टिप्पणिया जोड दी जाय। मेरे लिखे यह नमा ही काम या और मुझे शका यी कि भें जुसे कर सक्गी या नहीं। परन्तु अन्होंने कहा कि अक्साय नहीं तो समय मिलने पर योडा योडा लिखने रहना। अनके बाद अन्तमें में अक बार देख लगा,।

१९४८ में मैंने जिन मद पत्रोंको जमा करके नकल कराना शुरू किया। असके बाद श्री नरहिरिमात्रीके अपरोक्त सुझावके अनुसार १९४९ में मैंने सम्पादनका नाम शुरू किया। वह पूरा होने पर श्री नरहिरिमात्रीने अन्हे देख लिया था। परन्तु अन्हें अतिम रूप देनेका काम किमी न किमी कारणसे टलता रहा। अन्तमें आज असे पूरा करके जनताके सामने रख सनी हूं, और सिरका अक बडा बोझा अनर जानेकी निश्चितता अनुसव करती हूं।, असा मालूम होता है मानी आज जनताके-अणसे मुख हद तक मैं मुक्त हुआ हूं।

मेरी सनत आवहमरी माग स्वीकार करके अपनी तन्दुरुस्ती ठीक न होने हुअ भी पू० बापूक जीवन-चरित्रके दो माग --- अगस्त १९४२ तक लिखने और पू० वापूके नाम लिखे गये पू० वापूजीके पत्रोंका संग्रह तथा मेरे नाम लिखे गये पत्रोंका यह संग्रह देख लेनेके लिओ मैं श्री नरहरिभाजीकी अृणी हूं। अनके आग्रह और प्रोत्साहनके कारण ही मैं अन दो संग्रहोंके लिओ परिश्रम करनेका साहस कर सकी हूं।

भाजी मूलशंकर भट्टने अवकाश निकालकर भिक्तपूर्वक सभी पत्रोंकी सावधानीसे नकलें कर दीं, अिसके लिओ मैं अनकी भी आभारी हूं।

मेरे भाओ चि॰ डाह्याभाओ तथा अनके पुत्रके नाम लिखे गये पत्रोंका समावेश भी अस संग्रहमें ही कर लिया गया है।

अन्तमें पाठकोंको समझनेमें परेशानी न हो, अिसके लिओ अेक स्पष्टता कर दूं। हम महात्माजीको वापूजी और अपने पिताको वापू कहते थे। अिसलिओ अिस संग्रहमें जहां 'वापूजी' हो वहां महात्माजी और जहां 'वापू' हो वहां हमारे पिताजीका अुल्लेख है, असा समझा जाय।*

नओ दिल्ली २०-११-'५७ मणिवहन पटेल

^{*} गुजराती संस्करणकी प्रस्तावना।

_{बापूके} पत्र—४ मणिबहन पटेलके नाम

· [१२-२-'२१ ते १३-१-'४८]

दिल्ली, १२–२–'२१

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे मिला। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। तुम भाओ-बहन आव घंटा रोज कातो को लिससे स्वराज्य नहीं मिलेगा। तुममें बुत्साह हो तो तुम जरूर चार घंटे रोज कातो। महावरेसे बच्छा कातना आ जायगा।

अभी श्री दास¹ वहां नहीं आ सकते। मुझे पत्र लिखा करो। आजकल क्या पढ़ती हो, यह वताना।

वापूके आशीर्वाद

पुनश्च: अभी तो मुझे वहुत भटकना पड़ता है। आज दिल्लीमें हूं। अभी पंजाब जाना है, वादमें छलनअू, वहांसे वेजवाड़ा। अिसलिओ पता नहीं अहमदाबाद कव आना होगा। वापूसे कहना कि कांग्रेसकी तैयारी करें।

चि॰ मणिवहन,
ठि॰ भाक्षी वल्लभभाक्षी पटेल वैरिस्टर,
भद्र, अहमदावाद

१. स्व० देशवन्वु दास।

२. अहमदावादमें होनेवाले कांग्रेसके ३६ वें अधिवेशनकी।

वेजवाडा, मीनवार (४-४-'२१)

चि० मणि,

अिंग समय मुदहके पाच बजे हैं। मछ शिष्ट्रम ले जानेवाली मोटरका जितजार कर रहा है।

रानको अक वजे मैं अलोरसे यहा आया। ये तीनो जगहें नव शैमें देख लेना।

आने ही तुम्हारा पत्र मिला और मैने पदा।

टॉक्टर कानूगाने' अच्छा काम किया है। हाह्यामाश्री पिकेटिंग करने जाता है, यह अच्छा है। असे मेरी वधाश्री पहुंचा देना।

चार घटे कासनेका नियम रावा, यह ठीक है। सून मजपूत और क्षेत्रसा निकालनेका प्रयत्न करमा। यह भी देखना कि रोज कितना निकलना है।

मेरा तो विश्वास दिन-दिन वढता जा रहा है कि स्वराज्य मृत पर निर्भर है।

मैं काममें व्यस्त रहा और भटक्ता रहा, अिमलिये मैंने पेंसिलमें लिला। परन्तु तुम्हे तो स्वाही और देशी कलममें ही लिखनेका अभ्यास रखना चाहिये।

१ स्व० वलवन्तराय कानूगा। अहमदावादके प्रसिद्ध डॉक्टर।
पू० बापूने १९३० में अपना अहमदाबादवाला मकान छोड दिया पुसके
बाद जब भी वे अहमदाबाद आने तब डॉ० कानूगाके यहा हरने थे।
खास-बाजारके शरावलाने पर पिकेटिंग करते हुआ पत्थर लगनेमे डॉ०
कानूगाकी आलगें चोट पहुची थी।

२ मेरे भाशी।

वापूकी सेवा करना और तुम भाओ-बहनके वारेमें अनकी चिन्ताको कम करना।

गुजराती दिन-प्रतिदिन सुवारना । ध्यानपूर्वक 'नवजीवन 'पढ़नेवाले अपनी गुजराती अच्छी कर सकते हैं।

मैं मंगलवार १२ तारीखको अहमदावाद पहुंचूंगा। वापूको खबर देना और कहना कि मुझे आशा है कि अस वीच अुन्होंने खूव रुपया जमाकर लिया होगा।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन, ठि॰ वैरिस्टर वल्लभभाकी, भद्र, अहमदावाद

3

वम्बओ, गुरुवार (१६–६–'२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने काका (विट्ठलभाओं)को अससे पहले ही कह दिया है कि हमें मिलना है। वे पूना जा रहे हैं। हम जरूर ही मिलेंगे। मिलनेके वाद जो होगा वह लिखूंगा। वस्त्रओकी क्या गंदगी क्रिमने मानी है, वह मुझे वताना। तुम निश्चिन्त रहना। मैं काकासे पूरी वातें करनेवाला हूं।

१. तिलक स्वराज्य कोपका।

२. स्व० माननीय विट्ठलभाओ पटेल । पू० वापूके वड़े भाओ ।

३. अुस समय वम्बजीमें विदेशी कपड़ेकी वहुत वड़ी होली पू० वापूजीके हाथों की गली थी। अुस सम्वन्यमें यह अफवाह सुनी गली थी कि कपड़ेका ढेर वहुत वड़ा वतानेके लिओ नीचे देवदारके खोले रख दिये गये थे।

तुम दोनो भाशी-बहन देशवायमें पूरी तरह लग जाना। और लुम्हारे पूरी तरह लग जानेवा अर्थ यह है कि वानने और पीजनेवा वाम यहा तरु जान लो कि अममें तुम्हें वोशी मातृ न दे मर्वे। और सन वाम क्षणिव हैं। यह वाम हमेशाका है, शैसा मानना। हमारा गारा वल जिमीमें से आयेगा।

भाओ महादेव' कल वस्वश्री आ गये हैं। कहा जायगा कि अुन्होंने चडा खब विया।

यहा बरमात अच्छी हो रही है। क्ल लगमग ५५,००० ध्यमें घाटकीपरमें मिले हैं। मैं पत्र लिखू या न लिखू, परन्तु तुम तो लिखती ही रहना। बापुके आगीर्योद

मणिबहन, ठि० श्री वल्लभभाओ पटेल, भद्र, अहमदाबाद

ጸ

सीमवार (११-७-'२१)

चि॰ मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। कपडे जलानेका हेतु तो यह है कि विदेशी कपडोकी तरफ वैराग्यवृत्ति अधिक पैदा की जाय। ये कपडे गरीबोको विये जाय, अस विचारमें भी मोह है। लाख-दो लाखके कपडे गरीबोको गमे तो क्या और न गये तो क्या? अतने दिन तक ये कपडे मगवावर हमने हिन्दुम्तानको बडा नृक्सान पहुचाया है। मैं मानना ह कि अब ये कपडे गरीबोको देनेसे भी लाभ नहीं होगा। ये कपडे विदेश भेज देनेमें कुछ रहस्य है। किर भी मैं सबकी राय लेता रहना हूं। असमें में जो सबको ठीक लगेगी यह मान लेगे। अब भी शका रहती हो तो पूछना।

१ स्व० महादेवभाओं हरिमाओं देखाओं, बापूजीके मत्री। १५ अगस्त १९४२ को आगाखा महलके कारावासमें हृदयकी गति बन्द होनेसे अकाजेक अनवा अवसान हुआ!

डाह्माभाओकी वानर-सेना अच्छा काम कर रही दीखती है। अेक वात वह याद रखें। लोगोंसे विनयपूर्वक अपनी वात कहे। जरा भी मजाक या ग्लानि (हंसी?) का भाव न रखें। शराव पीनेवाले पर दया रखी जाय।

काकासाहव विद्या शिक्षक हैं, अिसमें तो शक ही नहीं। तुम सबको वे पसन्द आये, अिससे मैं खुश हुआ हूं।

काका (विट्ठलभाओं) से मुलाकात हुओ है; काफी वातचीत हुओ। अुन्होंने अपने जिला बोर्डमें ठीक प्रस्ताव पास करवाया है। मेरे पास आने-जानेवाले लोग कहते हैं कि काकाकी अभी चरखे पर श्रद्धा नहीं है। अितना ही नहीं, मंडलियों में चरखें के प्रति अरुचि प्रकट करते रहते हैं। फिर भी अुनसे मिलूंगा तब फिर वात करूंगा। मुझ पर पिछली मुलाकातका यह असर पड़ा था कि अुनके मनका बहुत कुछ समाधान हो गया है।

मोहनदासके आशीर्वाद

मणिवहन, ठि० श्री वल्लभंभाओ झवेरभाओ पटेल, भद्र, अहमदावाद

ч

वम्वओ, शुक्रवार (१५-७-'२१)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रका लम्बा अत्तर देनेको जी करता है। परन्तु अतुतना समय नहीं। अव रातके ११ वजेंगे। परन्तु सवालका जवाव दे दूं। जो कपड़ा व्यापारके लिखे रखा गया हो असे जलाने या दे देनेका सवाल ही नहीं है।

श्री दत्तात्रेय वालकृष्ण कालेलकर, आश्रमवासी । आजकल राज्यसभाके मनोनीत सदस्य ।

पत्रिकाओं तो मैं अभी पढ़ भी नहीं सका। धराववालोकी मार हम जैसे जैसे महन करेंगे वैसे वैसे हमारा काम बढेगा। बापके आर्जावीद /

वहन मणि, ठि० श्री बल्हमभात्री झत्रेरमाओ पटेल, भद्र, अहमदाबाद

Ę

हिन्नूगढ़, आसाम, (२५-८-'२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पिछला पत्र मैं अपने साथ लिये घूमता रहा हूं। काका (विट्डलभाओं) को समझाना वडा मुस्किल काम मानता हूं। अनकी सुम्रमें और अंक प्रकारकी लडाजीमें पत्तह पानेकी मान्यता वन जानेके वाद अब अन्हें नये प्रकारको ग्रहण करना कठिन मालूम होता है। हम धीरज रखकर अनका मतभेद महन करके अपने रास्ते चलते रहे, असके सिवा और कोशी जुपाय मुझे दिखाओं नहीं पहता।

वहा वहिष्कारना और अुत्पत्ति ना काम जोरमे हो रहा होगा। आसाम अने नया ही देश लगता है। यात्राना जानने लायक भाग 'नवजीवन' में दे चुना हू। अिसलिओ यहा नही लिख रहा हू। माओ अन्दुलाल ने साथ मैंने वात कर ली है। कुमुदबहन ने साथ मैं जी मर-

१ शरावबन्दी आन्दोलन सम्बन्धी पत्रिकाओं।

२ विधान-सभामें । युस समय श्री विट्ठलभाजी बम्युओ विधान-समाके सदस्य थे।

३ सादी-अुत्पत्ति ।

४ श्री अिन्दुलाल याज्ञिक । गुजरात प्रान्तीय परिषदकी स्थापना हुओ अुन समय अुसके मत्री थे । बादमें काग्रेससे अलग हो गये ।

५. स्व॰ कुमुदबहन, श्री जिन्दुलाल याज्ञिककी पत्नी।

कर वातें करना चाहता हूं और अुन्हें शान्ति देनेका प्रयत्न करना चाहता हूं। अिसका आधार अुनकी अिच्छा और मेरी फुरसत पर रहेगा। मैं अधर अक्तूवर माससे पहले आ सकूंगा, असा नहीं लगता। तुम दोनों भाओ-वहन वापूकी खूव मदद करते होगे। अुन पर बहुत बोझा आ पड़ा है। परन्तु प्रभुकी अिच्छा होगी तो वे अुसे अुठा लेंगे।

वापूके आशीर्वाद

मेरे प्रवासका कार्यक्रम: ३१ से ३ तक चटगांव और वारीसाल; ४ से १२ तक कलकत्ता।

वहन मिणगौरी,

ठि० श्री वल्लभभाकी झवेरभाकी पटेल,
वैरिस्टर साहब,
भद्र, अहमदावाद

9

मीनवार कलकत्ता, (८-९-'२१)

चि॰ मणि,

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला। मेरी मांग तो पहननेके ही कपड़े जलानेकी है। किसीके घर विलायती जाजमें वगैरा रखी हैं, कोचों पर विदेशी कपड़े चढ़े हैं। ये सब अधिकांश लोग नहीं देंगे। असिलिओ वह मांग नहीं की। असी कोओ नसी चीज वे न लें तो अतना काफी है। हमें पहननेके कपड़ोंकी ही मांग करनी है। मैं 'नवजीवन में लिखूंगा।

पर्युपणमें अपासरे जाना तय किया, यह अच्छा है। अिन वहनोंमें से कोजी अपने कपडे देती हैं?

१२ तारीख तक तो कलकत्तेमें रहना है। वादमें क्या करना है यह सोचूंगा।

वेजवाडाकी साडियोमें अत्र धोग्वा जरूर पुमा होगा । अच्छा यही है कि युन्हें हाथ ही न लगाया जाय।

तुमुदबहनको पत्र भेजा मो अच्छा किया । पत्र लिखने रहनेसे थुक्ते आस्वामन मिलेगा।

का बहुत करके महादेव आकर मुझसे मिल जायगे।

' यहा भी तुम्हारी ही अप्तर्का मेवल खादो ही पहननेवाली खूब कुत्माह रखनेवाली दो बहनें है। वे अभी देशवधु दासकी बहनको अनके नारी-मिदिरमें मदद दे रही है।

मोहनदानके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन, ठि॰ भात्री वन्लभभात्री पटेल वैरिस्टर, भद्र, अहमदाबाद

L

रेलमें, २५–९–'२**१**

चि० मणि,

. तुम्हारे दो पत्र मेरे पाम रखे हैं। तुम्हारी प्रवृत्ति ठीक चल रही है। अब तो थोडे दिनमें वहा मिलेगे, बिसलिये युसके बारेमें बुछ नहीं लिखता।

कुमुदबहनका हाल पडकर मुझे दुख होता है। अनसे में जरूर मिलना चाहता हूं। ६ तारीखकों में अहमदाबाद आ ही जाअूगा। वहां कितने समय रहना होगा, यह तो नहीं जानता। परन्तु में वहां रहूं अस बीचमें कुमुदबहन आश्रममें आयें, तो में अनके साथ बातचीत कर सक्या। में शुनकी सेवा करना और शुन्हें शान्ति देना चाहता हूं। तुम अन्हें यह पश्र ही मेज दो हो लाम चल सकता है।

१ वेजवाडाकी साहियोर्भे मिलका सूत कामर्मे केनेकी जो शिकायत थी अुसका अुल्लेख है।

२ तारीखको मैं वस्वओ पहुंचनेकी आशा रखता हूं। ४ तारीख तक तो वहां रहना ही है।

काका (विट्ठलभाओं) का रास्ता अलग ही है। हमें अनकी चिन्ता नहीं करनी है। अुन्हें जो ठीक लगे वह भले ही वे करें और कहें। मोहनदासके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,
ठि० वल्लभभाओ वैरिस्टर,
भद्र, सह्मदावाद
(पु० वापूजीके हायका पता)

9

नेपानी, (अक्तूबर, १९२१)

चि० मणि,

तुम्हारा काम और देशके प्रति तुम्हारा प्रेम देखकर मुझे तो आश्चर्य हुआ है। दिवालीके दिनोंमें खूव चंदा अकट्ठा करना।

बापूकी सेवा तो तुम करती ही होगी, यह मैं मान लेता हूं। तुम्हारे जवावकी आशा मैं अस वार तो नहीं रखता।

मोहनदासके आशीर्वाद

(पीछे)

अहमदावादकी वहनोंका नाम लेकर मैंने पूनाकी वहनोंसे भिक्षा मांगी। अन्होंने तो मुझ पर सोनेकी चूड़ियों, अंगूठियों, लांगों और सोनेकी जंजीरोंकी भारी वर्षा कर दी। अहमदावादकी वहनोंको मात कर दिया। मोहनदास

श्री मणिवहन, ठि० वल्लभभाकी वैरिस्टर, भद्र, अहमदावाद

सीमवार (अप्रैल, १९२४)

चि॰ मणि,

भाजी मणिलाल'ने जाज खबर दी कि तुम्हारा बुखार तो चला गया, मगर अगनित है और तुम डॉक्टर कान्माके यहा चली गजी हो। मैं चाहना हूं कि बापू और डॉक्टर जिजाजत दें तो यहा आजो। आराम और शान्नि दोनों मिलेगें। तुममें तो शक्ति तुम्त था ही जायगी। जिमलिजे मैं तुमने मेबा भी लूगा। मुम पर तुम्हारे मार पड़नेका भय तुम्हें या बापूको हरगिज नहीं होना चाहिये। बोझा पड़ेगा तो जमीन पर, और जभीन काफी मजबूत है। तुम्हारे जैमी मौ बालिकाओंका बोझा तो वह जामानीस जुडा सकेगी। दूसरा बोझा रभी अये पर होना। रेवा-शक्र आनेसे मेरी चिन्ता दूर होगी, क्योंकि जो भी देशसेवक और देशसेविकाओं दूर बैठे बीमार पड़ते हैं वे मेरी चिन्तामें वृद्धि करते हैं। मेरी नजरके मामने वे सब हो तो अम हद तक मेरी चिता दूर हो जाय।

डाह्याभाओं तुम्हारे बदने चरखा अधिक समय चलाने ही होगे। वापुके आसीर्वाद

१ स्व० मणिलाल कोठारी। दहुत वर्ष तक गुजरात प्रान्तीय समिनिके भन्नी ये।

२ जुद्र। यरवडा जेलने फरवरी १९२४ में छूटनेके बाद कुछ मास आरामके लिओ पू० बापूजी जुहुमें रहे थे।

३ स्व० रेवाशंकर जगजीवन झवेरी। बम्बशीमें पू० बापूजी
' अुनके यहा मिलमवनमें अुतरते थे।

[यह पत्र मैं जुहुमें पू० वापूजीके पास थी वहां पू० वाने भेजा था। जुहुमें कुछ बीमारोंको जिकट्ठा करके पू० वापूजीने अपना छोटासा 'अस्पताल' बना लिया था।]

> (सत्याग्रह आश्रम, सावरमती) वुधवार (अप्रैल, १९२४)

चि० मणि,

अब तुम्हारी तबीयत अच्छी होती जा रही है, जिससे आनन्द होता है। जिसी तरह राघा की भी अच्छी होगी। अब सौब की की जी अच्छी होगी। जुराक तुम सब क्या लेती हो सो बताना। राघाको जिजेक्शन दिये जा रहे हैं? प्रभु क्या खुराक जाता है?

कृष्णदास मजेमें होगा। वापूजीको नियमपूर्वक तुम खुराक देती होगी। वे क्या खाते हैं? गं० स्त्र० जमनाबहन वहां हमेशा आती होंगी। अनुहें मेरे प्रणाम कहना। जिसी तरह जसवंतप्रसाद को भी कहना। आज सुबह भाशी डाह्यामाजी जाये थे। वे मजेमें हैं। ... को मैंने श्रेक पत्र लिखा है। असका शुक्तर नहीं आया। शुनकी तत्रीयत अच्छी होगी। देवदास तो क्यों लिखने लगा?

वापूजीके भतीजे स्व० मगनलाल गांबीकी पुत्री।

२. आचार्य कृपालानीकी वहन।

वापूजीके भतीजे छमनलाल गांगीके पुत्र । दक्षिण अफीकामें फिनिक्ससे पू० वापूजीके साथ थे।

४. श्री कृष्णदास गांथी। बापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र।

५. दादाभाजी नवरोजीको पौत्री श्री गोबीबहन कैप्टन और श्री पेरीनवहन कैप्टनके साथी कार्यकर्ता।

इ. पू० बापूजीके सबसे छोटे पुत्र ।

मुझे तुम सब बहुत याद आहे रहते हो। परन्तु भाग्यमें माथ रहना नहीं लिया होगा। मुझे पत्र लियना। नहीं तो लिखवाना। पूज्य रेवारावर भाओं (सबेरी) वी त्रपीयत अच्छी होगी।

यहां सब प्रमन्न है। बहावा होल लिखना। अभी भाजी मगनलाल दिल्ली गये है। अुनवे घर पर भाजी छगनलाल और वि० वासी रहते हैं। वि० मनोक वो मेरा आशीर्वाद। वहां सबकी संघायोग्य।

बापूरे आशीर्वाद

१२

(जुड़,) मोमवार (५-५-'२४)

चि० वहन मणि,

तुम्हारे पत्रकी बाट कल अुमी सरह देखी, जैसे पपीहा बरसानकी देखता है। आज मुबह प्रार्थनाके बाद पहला पत्र तुम्हारा देखा। देव-दामने कहा कि कल सापको मणिबहनका पत्र मिला।

माओ लिक्ते हैं कि यकावट रहने पर भी वहा' तबीयन यहामे अधिक अच्छी है। असी तरह चलता रहे तो हम सब वहा आ जायमे। दुर्गाबहन'की तबीयन भी वहा ठिकाने आ जाय मो कितना अच्छा हो। अनसे कहना कि मुझे पत्र लिखें। महादेवभाओको सदास नहीं भेजा। वे वापस सावरमनी पहुच गये हैं।

१ २ बापूजीके मतीजे।

रे थी छगनलाल गाधीकी पत्नी।

४ स्व० मगनलाल गाधीकी पत्नी।

५ में बीमार थी अिसलिओ पहले मुझे अपने पास रखनेको जुहू बुल्नाया। वहा फर्क न पडा तो हजीरा भेजा।

६ स्व॰ दुर्गावहम, स्व॰ महादेवभाओकी पत्नी।

यहांसे जो कुछ चाहिये वह मंगवा लेना। मांगे विना मां भी नहीं परोसती। सच तो यह है कि मां ही नहीं परोसती। दूसरोंको शिष्टता दिखानी पड़ती है। मांको शिष्टता दिखानेकी फुरसत ही नहीं होती। मां विवेककी मूर्ति है। तुम्हें मालूम है कि मैं असी 'मां' वननेकी शक्तिभर कोशिश कर रहा है।

राधा और कीकीवहन ठीक हैं, अँसा कहा जा सकता है। दोनोंका तापमान ९९° से अधिक नहीं चढ़ता।

शौकतअली दो दिन रहकर गये।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन वल्लभभाकी पटेल, खीमजी आंसर वीरजी सेनेटोरियम, हजीरा, सूरत होकर

१३

(जूह,) (৬–५–'२४)

चि० वहन मणि,

तुम्हारी डाक नियमपूर्वक आने लगी है। अससे मुझे शान्ति रहती है। धीरज और आत्म-विश्वास रखना — दवासे भी विश्वास ज्यादा फायदा करेगा। प्रभुदासका पंचगनी जाना स्थगित कर दिया है। चि० राधा ठीक है। प्रार्थनामें शामको आती है। कीकीवहन जैसी थी वैसी ही हैं। चि० गिरधारी कल अहमदावाद गया।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन वल्लभभाओ पटेल, हजीरा, सुरत होकर

१. मौलाना शौकतअली। अली भासियोंमें बड़े।

२. आचार्य कृपालानीका भतीजा।

(जुड़ू,) (११--५--²⁹⁴) रविवार

चि० दहन मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। यह मेरा चीया पत्र है। अके पत्र और दों बाड में लिय चुका हू। तुमने अके ही काटकी पहुच मेंबी है।

आतम-विश्वाम सच्चा तव कहा जावणा जब वह निराधाके समय भी अचल रहे। सत्य और विहिमामें भेरा विश्वाम हो, तो मैं नाजुक ममयमें भी अनका पालन करूणा। भेले ही वृक्षार आये तो भी आशा हरिवज न छोडी जाय। हम गाफिल न रहें, परन्तु चिन्ता न करे। 'त्यागमूनि"के बारेमें सुम्हारी आलोचना देखनेको भे आतुर हो रहा हू। मुझे पन जिस्की हरिगज न भूलना। सुम्हारे वहा और कोशी आवर रह मने अमी गुजाबिश है नया वहा वसुमितिशहन को भेजनेका जी होता है।

चि॰ मणिवहन वल्लभमानी पटेल, हजीरा, सूरत होकर

१५.

(जुः), १४–५–'२४) वृधवार

चि॰ वहन मणि,

क्ल तुम्हारे दो पत्र साथ मिले। पता नहीं चलता कि मेरे पत्र तुम्हें मिलते हैं या नहीं। सप्ताहमें अंक लिखतेके वजाय मैंने लगभग हर तीसरे दिन लिले हैं। बुकार जरूर जायगा। साया जाता है और

१ स्वियोंके प्रशोके बारेमें बापूचीके छेखीका सग्रह । (प्रकासक : नवजीवन प्रकासन मन्दिर, अहमदाबाद-१४)

२. अक आसमवासी।

दस्त ठीक आता है, अिसलिओ मैं मानता हूं-कि न जानेका सवाल ही नहीं रहता। बीमारी पुरानी है, अिसलिओ देर हो रही है। 'त्यागमूर्ति' के वारेमें आलोचना लिखना।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ वहन मणि वल्लभभाओ पटेल, सेठ आसरका सेनिटोरियम, हजीरा, सूरत होकर

१६

(जुहू, १५–५–'२४) वै० सु० १२

चि॰ मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम २० तारीख तक चली जाओ, यह तो विलकुल ठीक नहीं होगा। वहां यह मास तो पूरा करना ही चाहिये। मेरा वहां आना तो हो ही कैसे सकता है? २९ तारीखको मुझे सावरमती जरूर पहुंचना है। वसुमतीवहन आना चाहेगी तो वताखूंगा। आशा कम है।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन, सेठ आसरका आरोग्य-भवन, हजीरा, सूरत होकर

80.

(जुहू, १७–५–'२४)

चि॰ मणि,

अहमदाबाद पहुंचनेके वाद देखेंगे कि दवा ली जाय या नहीं। विलकुल अच्छी हुओ दिना वहांसे हरगिज नहीं निकलना है। वसुमती-वहन कदाचित् सोमवारको चलकर वहां आयेंगी। भाओ . . . अुनका सूरतका घर जानते है। वहा जाकर देखें। यदि वे आ गओ हो तो अक्ट्रें ले जाय। क्या वहा कोओ अलग मकान मिलते हैं? जहा तक ही सकेगा नार दिला दूगा। अभी वसुमतीवहन अिजेक्शन ले रही हैं। दुर्गावहनका क्या हाल है ? क्या वे पत्र लिखेंगी ही नहीं? मेरा हाय कापता जरूर है।

बापूके आशीर्गाइ

चि मणिवहन विल्लाभायी पटेल, आसर सेठका आरोग्य-भवन, हजीरा, सूरत होकर

१८

(লুहু, २०–५–'२४)

चि॰ मणि,

तुम्हारा पत्र और वार्ड मिले। 'त्यागमूर्ति' के वारेमें पत्र पढ़-कर मुझे तो बहुत ही हुमें हुआ। यह निर्मेलता और सयम-वृत्ति सग्रह-णीय है। थिसकी चर्चा तो हम मिलेगे तब करेगे। अब तो बुवारको भी निवालकर चर्गी हो जाओं तो औश्वरकी कृपा हो। वसुमतीबहन देवलाली जायेंगी, असिलिओ वहा नहीं आर्थेगी। वहासे तुरन्त जानेका विचार ही न किया जाय।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ दुर्गा,

नुमने तो मुझे पत्र ही नही लिखा। वहा तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहता है?

चि॰ मणिवहन बल्लभभाओ पटेल, हजीरा, सूरत होकर

(जुह, ता॰ २६ मजी, १९२४) सोमवार

चि० नणि,

तुम तो जल्दी ही पहुंच गओं!। मेरी तीन शिच्छा है कि तुम भाओ-वहन आश्रममें अलग कोठरी- लेकर रहो। छात्रालयमें खाओ, हायसे बनाओ या बाके साथ अनुकूल पड़े तो वहां खाओ। जैसा तुम दोनोंको अनुकूल हो वैसा करो। वहांसे कॉलेजमें जा सकते हैं। वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन, वल्लभभाओं वैरिस्टर, अहमदावाद

२०

(अहमदावाद, २६-९-'२४)

चि० मणि,

वाह, कल तुम सब आये और चले गये^र। अब सन्देश भेजती हो! बीमारको जितनी बार चक्कर लगाना हो लगा सकता है। असे बचन नहीं बांघता। अिसलिओ न आनेके लिओ माफी है। और आनेका विचार हो तब छूट भी है। मुझे तो अक ही काम है। किसी तरह अच्छी हो जाओ।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, खमासा चौकी, अहमदावाद

१. मैं पू० वापूजीसे पहले अहमदावाद आ गओ थी।

पू० वापूजीसे मिलने सावरमती आश्रममें गये थे परन्तु वे सो गये थे, अिसलिओ मिले विना वापस चले आये थे।

(दिस्ली, २६–**९**–'२४)

चि॰ मणि,

मेरे अपवाससे विलक्क प्रवरानेकी जहरत नही। शक्ति अभी सूव है। २१ दिन निर्विध्न पार हो जायने, असा में मानता हूा डॉक्टरोकी भी यही राय है। अपनी सवीयत खूब सभालना। घूमनेका महावरा खूब रखना। मुझे पत्र लिखना।

बापूके आशीवदि

चि० मणिबह्न, ठि० वल्लमभाओ वैरिस्टर, अहमदाबाद

२२

হিন্দরী, ২४–१०–'২४

चि॰ मणिवहन तथा डाह्यामाओ,

अस साल तुम्हें अपने सुमानीय देने वहा मौजूद नही रहूगी, परन्तु अस पत्र द्वारा और अपने मनसे तो तुम्हें अपने सुमानीय दे ही रही हू। तुम्हारे लिस्ने भी यही चाहनी हू कि तुम्हारी सकल शुभ-नामनामें सकल हो। असे हो अपसे अधिक तदुरुम्त रही और पदाओ पूरी करके देशने सच्चे सेवन बनो। वापूसीनी तत्रीयत दिन-दिन सुब-रती जा रही है। यह पत्र मिलेगा अुस दिन तो तुम दोनो मलेचमे

१ पू० बापूजीने हिन्दू-पुमलमानीकी लेकताके सिलसिलेमें ता० १७-९-'२४ से ८-१०-'२४ तक २१ दिनके लूपवास किये थे। २ नये वर्षके लिखे।

और स्वस्थ होने ही, अैसी बाशा रखती हूं। वापूजी भी तुम्हें याद करते हैं और तुम दोनोंके लिओ अुनके शुभाशीप हैं ही। शुभेच्छु वाके शुभाशीप

चि॰ मणिवहन,
ठि॰ वल्लभभाकी वैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदावाद

२३

(दिल्ली,) का० सु० २ (१०-११-'२४)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। अधिक वार लिखो तो बहुत अच्छा। वापूको आज लिखा है। चिन्ता छोड़ देनेको कहा है। तुम फिर हजीरा जानेका विचार नहीं करोगी? पास' होनेके

तुम फिर हजारा जानका विचार नहां करागा! पास होनक लिओ वधाओं चाहिये क्या? चाहिये तो समझ लेना। डाह्याभाओं अक विपयमें फेल हो गये। कोओ वात नहीं। फेल होनेका अर्थ है अस विपयमें अधिक प्रवीण होना। फेल होनेवाले विद्यार्थी अकसर निराश हो जाते हैं। यह भूल है। जो आलसी हों या जिनकी नजर नौकरी पर हो वहीं निराश हो सकते हैं। अभ्यासीके लिओ तो असफलता अधिक प्रयत्नका सुअवसर होती है।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन, ठि॰ त्रुसमाञी पटेल, खमासा चौकी, अहमदाबाद

१. गुजरात विद्यापीठकी स्नातक-परीक्षा।

(कलकता,) वै० वदी ६, गुस्वार (१४–५–′२५)

चि० मणि,

नुम्हारा लम्बा पत्र मिला। मै खुम हुआ। औरतोम काम करना बहुत मुक्तिल जरूर है। फिर भी घीरजसे जो हो मके बह कार्य विया जाय। डाह्यामाजी आबू अथवा नवी बन्दर गये ही होगे। चूडिया मेरे ध्यानमें अवस्य है। मै भूलूगा नहीं। वे ढाकामें मिलनी है। और यहा मुझे तीन दिनमें पहुचना है। बापू कही हवाखोरीके लिजे जानेवा है? वापके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहुन, ठि॰ वल्लमभाओ पटेल वैरिस्टर, अहमदाबाद

२५

(द्यान्ति निकेतन, ३१-५-'२५) जे० मु० ८

चि॰ मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। लम्बा पत्र लिखनेका लोभ करने जात्रू तो धायद पत्र लिखा ही न जाय, अिसलिओ अितना ही लिखकर सतोप कर लेता है। तुम्हे चूडिया तो कमीकी मिल गओ होगी। वे तो कलकत्तेसे ही भेजी है। दूसरी मैंने ढाकेमें खरीदी है वे अभी मेरे साथ है। वे तो जब मैं आश्रूगा तभी तुम देखोगी। वि॰ डाह्मा-

१ शलकी चूडिया, जो बगालको विशेषता मानी जाती है, मैने बापूजीसे मगवाओ थी।

भाजीके वारेमें लम्बा जवाव महादेवने लिखा होगा। अन्हें कमाना हो तो भले ही कमायें। अनकी तवीयत अच्छी हो गजी है, यह जानकर खुशी हुओ। चि॰ यशोदा से मुझे पत्र लिखनेको कहना। वापूकी खूब सेवा करना और अन पर जो बोझ है असमें जितना भाग बटाया जा सके अुतना तुम तीनों बटाना। मुझे बंगालमें अक मास तो विताना ही होगा।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन,
ठि॰ वल्लभभाओ पटेल वैरिस्टर,
समासा चौकी,
अहमदाबाद

२६

जेठ वदी ६, शुक्रवार (१२-६-'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। आज तो मैं जहाजमें हूं। चूड़ियां क्रकलकत्तेमें हैं। वहां १८ तारी बको पहुंचना है। वहां पहुंचकर थैली में वंद करके पार्स लसे भेज दूंगा। परन्तु देवदास आश्रममें न आया हो तो भी जांच की जाय। असके नामकी थैली जरूर होगी। अस पर कब्जा कर लिया जाय।

डाह्याभाओं ने खेतीका काम पसन्द किया था। अस परसे मैंने यह सलाह दी। परन्तु अनका मन विदेश जानेका ही हो तो मैं रोकना नहीं चाहूंगा। विदेश जानेमें मुझे बड़ी आपित यह है कि किसीचे रुपया मांगना पड़ सकता है। भले ही कोओ अत्साहसे रुपया दे तो भी जहां तक हो सके हम न लें। यह आदर्श है। अस पर दिके रहनेकी

१. स्व० यशोदा। डाह्याभाओकी पत्नी।

हमारी गिंक्त न हो तो किमीसे मदद लेकर भी जानेमें बादा नहीं है।
मूजे वहा आनेमें समय लगेगा। अभी १६ जुलाओ तक बगालमें हू।
डाह्याभाजीको यहा आना हो तो क्षाकर बान कर जाय अयवा आश्वममें
आजू नव करनी हो तो अस समय कर ले। अनहें किमी भी तरह
दुखी न किया जाँग। मैं अनको शिन्छाके अनुकूल होना चाहता हू।
मैं तो भीरे भीरे मागंदर्शन करना चाहता हू। तीन रास्ते हैं:

- १ खानगी नौकरी कर ही जाय।
- २ खेनी की जाय।
- ३ अमरीका जाकर अधिक सीखा जाय।

अनमें से जो जुननी जिच्छा हो सो करे। जुनमें मुझे को आ आपित नहीं। चौया रास्ता राष्ट्रकी सेवाका है। रुपया लेकर राष्ट्रकी मेवा करना जुन्हें पमन्द नहीं, जिमलिओं मैंने अस रास्त्रेकी नहीं गिनाया। अनुर्हें वैद्युप्त सीवनेवा सौक है ? हो तो यहा राष्ट्रीय कॉलिंग है, और दिल्लीमें भी है। डाह्याभाजी यह न जानते हो तो कह देना। यहा (कलकत्ते) का कॉलिंग अच्छा माना जाता है। सुसमें अन्ययन करना हो तो कर सकते हैं।

मेरी तंत्रीयत अच्छी रहती है। बीचमें जरा संरदी हो गंजी थी। और तो कुछ भी नहीं था। हर जगह लोग काफी आराम देते हैं।

... को नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना। अससे अपे मतोप रहता है। प्रेमका मुखा है।

बापूकी सेवा खूब करना। जब मा मर जाती है और बाहरकी बहुत झझटें होती हैं तब यदि बच्चे सेवावृत्तिवाले हो तो वे वापको असका सब दुन भुला देते हैं। यह मैं अपने पिताने आज्ञाकारी पुत्रके नाते अपना अनुभव तुम भाओ-बहुनको बता रहा हू। जिससे बच्चोका कितना कल्याण होता है, जिसका साशी भी मैं हू। मा-बापको परभेशवरकी तम्ह पूजनेका फल मै प्रतिक्षण भोग रहा हू। यह सब तुम दोनोको लिख रहा हू, नयोक्ति मैं जानता हू कि बापू पर बडी जिम्मेदारी है। मैं तो असमें कोजी भाग नहीं ले सकता। पत्र लिखने तकका समय भी नहीं निकालता। जिस्तिकों अपनी जिम्मेदारी भी तुम पर डाल रहा हू।

स्वास्थ्यको पूब संभालना। अन्यास पूर्ण करनेमें समय जाय तो असको निन्ता न राजना। महादेव कहते थे कि तुम दोनों भाओ-बहनके अंग्रेजी प्रकोषे हिज्जे बहुत कच्ने हैं। यह मुधार कर लेना। जो भी सीखें वह टीक ही नीखें। जहा भी शंका हो, शब्दकोप खोलें। और कुछ करनेको जरूरन नहीं रहती।

वापूके सामीर्वाद

चि० मणिवहन, ठि० वल्ठभभाओ वैरिस्टर, यमासा चीकी, अहमदाबाद

२७

(कालीघाट, कलकत्ता, २९–६–'२५) सोमगार

चि॰ मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। पिताकी सेवा करनेके अनेक प्रसंग ढूंढ़ना। वे ढूंढ़ने पड़ते ही नहीं। फिर भी तुम लिखती हो सो समझ लिया। डाह्याभाओं 'नवजीवन' में जाते ही है तो चित्त लगाकर काम करें। स्वामी की आज्ञा माननेमें बहुत लाभ है। वह सुन्दर तालीम है। भले मजदूरीका ही काम सौंपें तो अुसे भी दिल लगाकर करें। मैं कभी न कभी थोड़े बक्तके लिखे आ जाखूंगा, परन्तु समय तो औश्वर

स्वामी आनंद। पू० वापूजीके निकटके सायी, 'नवजीवन 'के आरंभमें अन्होंने अुसमें खूब काम किया था। अुसके विकासमें अुनका बड़ा हाय रहा है।

ही जाने। बापूकी तर्वायतके समाचार मुझे देनी रहो। बापूके अग्रेजी हिन्ने कच्चे होनेसे नुम्हारे भी वैसे ही रहने चाहिये, जैसा कीजी। नियम है क्या? बापके गुणोका अनुकरण होता है, दोपोका हरगिज नहीं।

वापूके आशीर्वार

चि॰ मणिवहन,

ि॰ वल्लभनाजी पटेल वैरिस्टर,
समाना चौकी,
अहमदाबाद

२८

(कालीमाट, कलकत्ता, १६–७–'२५) गुद्धवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें दूसरी चूडियोकी अभी जरूरत हो तो मुझे लिखना। डाक्से भेज दूगा। डाह्यामाओ कलकत्ते राष्ट्रीय मेडिक न कॉरेजमें पड़ेंगे? वह अच्छा चल रहा दीसता है। अथवा डाह्यामाओको हार्दिक जिच्छा क्या है? मैं जितना काममें पसा हू कि लम्बे पत्र लिखे हो नही जा सकते।

बापूने आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन, टि॰ वल्लमभाजी बैरिस्टर, समासा चौकी, बहमदाबाद

(मुशिदावाद जिला, ६-८-'२५) श्रावण वदी २

चि० मणि,

तुम्हारा और डाह्याभाक्षीका पत्र मुझे मिल गया था। डाह्याभाक्षीके पत्रका अत्तर तुरंत ही दे देनेको मैंने महादेवसे कह दिया था। वह मिल गया होगा। डाह्याभाक्षीको जो सवाल पूछा था असका अत्तर हीं अन्होंने नहीं दिया। डाह्याभाक्षीको सर्जरी सीखनी हो तो यहां तथा कलकत्तामें, दोनों जगह पूरे साधन हैं। अन कॉलेजोंका सरकारके साथ कोशी सम्बन्ध नहीं है।

तुम्हें मणिलाल (कोठारी) ने १२ चूड़ियां भेजी हैं, अिसलिओं अभी तो तुम्हें अधिककी जरूरत नहीं रहेगी। परन्तु यदि ये चूड़ियां बहुत टूटें तो महंगी पड़ेंगी, यह समझ लेना। अिससे तो चांदीकी अथवा सूतकी गूंथी हुआ सस्ती पड़ेंगी। वे असी गूंथी जा सकती हैं कि मोटी होती हैं, मजबूत होती हैं और हमेशा घोओ जा सकती हैं। परन्तु यह विचार हम मिलेंगे तव करेंगे। तव तकके लिओ तो यह संग्रह काफी है।

मेरा वहां आना तो जब होगा तब होगा। शायद अेक दो दिनके लिओ अवतूबरमें आ जाओूं।

वाजिसिकल ली है तो अब अस पर कसरत भी करना।
आज हम मुशिदाबाद जिलेमें है। मणिलाल (कोठारी) यहीं हैं।
वापूके आग्नीर्वाद

चि॰ मणिवहन,

ठि॰ वल्लभभाओ झवेरभाओ पटेल वैरिस्टर,

खमासा चौकी,
अहमदावाद

श्रावण बदी अमावम, * वृषयार १९-८-'२५

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं नहीं चाहता कि तुम चूडियोंके बिना रही।
मेरी मलाह तो चादीनी चूडिया पहानेकी है। केवल घीतमंत्री तो
टीक नहीं लगती। परन्तु शलकी पहननेमें कोशी हुनें नहीं है। मैंने
तो देव लिया कि यह सस्ती चीज नहीं है। हाह्यामाश्रीके बारेमें
जवाव लिय चुका हू। कुल मिलाकर मेरी नजर तिविया कॉलेज' पर
टिक्ती है। परन्तु अब तो मैं वहा ५ सितम्बरको पहुंचनेकी आदाा
रगना ह। शिमलिओ हम मिलकर निश्चय करेगे।

वापूके आसीवदि

वि॰ मणियहन,
ठि॰ वल्लभभाओ वैग्स्टर,
ाना चौरी,
अहमदाबाद

१. हरीम अजमलेखा साहद द्वारा दिल्ठीमें स्यापित यूनानी पदितका काँकेज।

(वांकीपुर, २६–९–'२५) शनिवार

चि० मणि,

यह रहा देवधरका तार'। मेरा खयाल है कि जिस बीच प्रतीक्षा की जाय। परन्तु जिस बीच यदि वम्बजीके सेवासदनमें रहना हो तो प्रबंध कर दूं। जयवा वर्धामें जो कन्या पाठणाला है, असमें काम करनेकी जिच्छा हो तो वह करो। जमनालालजी कलकत्तेकी पाठणालाको जानते हैं। असके लिखे वे जिनकार करते हैं। परन्तु वर्धाकी कन्या पाठणालामें जितजाम कर देनेको कहते हैं। वर्धामें मराठी ही है। और वहां तो घर जैसा है, जिसलिओ पहला अनुभव वहां लिया जाय तो ठीक ही है।

अव जो जिच्छा हो मुझे वताओ। मुझे अुत्तर पटनांके पते पर लिखना।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाओ वैरिस्टर,
खमात्ता चौकी,
अहमदावाद

१. मुझे अनुभव लेने और काम करनेके लिओ कहां रहना चाहिये जिसकी जिस पत्रमें चर्चा है। श्री देवधरका तार या कि वे अपनी देख-रेखमें चलनेवाले पूनाके सेवासदनमें मुझे दिसम्बरमें भरती कर सकेंगे।

(कोटडा, मच्छ, २५-१०-'२५) सोमवार

चि॰ मणि,

नुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे जल जानेकी बात नी सुरी। अव तो योडे हो दिनामें वहा थाना है, रिमलिने मिलेगे नव बातें करेगे। हाय विलकुल अच्छा हो गया होगा। डाह्यामाओके साथ अक बार लवी बातचीत हुशी है। फिर थाजरलमें सम्मा। वहा (अहमदाबाद) पहुचनेने पहुँ समझ सूगा। तुम्हारे लिखे मैंने तो निरचय कर ही लिया है।

चि० मणिवहन, ठि० वन्त्रभभावी वैरिस्टर, वमामा चौकी, अहमदाबाद

33

(सत्वाप्रहाश्रम, मावरमती, ७-१२-'२५) सोमवार

चि० मणि,

नुम्हारे पत्र मिलने है। तुम्हारा नारा कार्येकम आ गया है।
वहा सेवामरनमें मब बुठ नया लगना है, यह तो मै जानता ही था।
फिर भी बहाना नियम, बहानी पद्धति, बहाना अत्माह, बहानी प्रामान्
जिन्ता वगैरा आर्कायन करनेवाकी है। फिर, जिमके बराबर अत्य कोओ जीविन सम्था गायद ही कही होगी। हमें असकी पद्धति बगैराको
हमारी अपनी पसन्दने नार्यमें दाखिल, करना है। हमें तो गुणप्राही

१ डाह्याभात्री पूर वापूत्रीके साथ क्च्छके दौरेमें थे।

वनना है। हमें जितना पसन्द हो अतना ले लें। विरोधी मतवाले समाजमें भी हमें सिंहण्णुतापूर्वक रहना तो आना ही चाहिये न?

तुम्हारी तवीयत अच्छी रहूती होगी। मेरी चिन्ता न करना।
मुझमें जिन्त आती जा रही हैं। आज वम्बओ जा रहा हूं। वम्बओ
ओक दिन रहकर वहांसे वर्वा जाअूंगा। वर्घा नियमित रूपमें पत्र
लिखना। वहांके अनुभवोंकी डायरी रखो तो अच्छा हो।

डाह्याभाओ अभी तो विट्ठलभाओंके आग्रहसे अुनके पास कायंगे। दो चार दिनमें वहां जायंगे। फिर अुनके साथ महासभा (कांग्रेसमें) में आयेंगे।

तुम्हारे लिओ तो जब तक चाहो वहीं रहना अच्छा है। मृनमें अठनेवाली सभी तरंगें बताना।

वापूके आशीर्वाद

. श्रीमती मणिवहन पटेल, ठि० नेवासदन, पूना सिटी

३४

वर्घा, शुक्रवार (१२-१२-'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। वहांका काम पूरा करनेके वाद वम्बकी रहना हो तो भले ही रहो, नहीं तो तुरन्त यहां आ जाओ। ज्यादातर तो यहां लम्बी छुट्टियां नहीं होतीं। खिसलिओं कन्या पाठणालामें तुरंत काम मिल जायगा। साथ ही जमनालालजी की लड़की कमला और मदालसाको भी तुम्हीं पढ़ाओ, यह निश्चय किया है। अभी तो जानकी-वहनके साथ ही रहनेका निश्चय रखना। तुम आओगी तबसे तुम्हारा

विट्ठलभाओ अस समय केन्द्रीय विद्यान-सभाके अध्यक्ष थे।
 अन्होंने डाह्याभाओको अपने पास रहनेको दिल्ली बुलाया था।

२. स्व० जमनालालजी वजाज। मध्यप्रदेशके गांधीजीके मुख्य साथी, चरता-संघके अन्यक्ष, कांग्रेसके खजानची १९२१–४२।

वेतन ५० रुपये प्रति माग लिखा जायगा। अगलिजे जब आना हो आ जाओ। बादेममें जानेकी अिच्छा हो जाय तो यहामे भेरे साय अथवा बाला वाला बानपुर चली जाना। मुझे २३ तारीखको कानपुर पहुँचना है। पहली जनवरीको तुम्हें यहा पहुंच जाना चाहिये।

मेरा वजन घट गया था। वह ९ पीण्ड वापम बढ गया है। अब ६ वाकी रहा।

बापूके आशीर्वी-

र्थामती मणिवहन वल्लममाओ पटेल, सेवामदन, संदाशिव पेठ, पूना मिटी

३५

वर्षां, माप वदी अमावस, -(१६--१२-'२५)

चि॰ मणि,

मेरे पत्र मिले होगे। यदि जहमदाबाद जानेकी जरूरत ही लगे तो चली जाना। सिर्फ अितना याद रखना कि यहा पहली जनवरीको तो काम पर लग ही जाना चाहिये। अब मिलनेका मोह कम रका जाय, जिसीमें समझदारी मालूम होती है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

वापूरे आशीर्वाद

थीमती मणिबर्ट्स वेल्लमभाओ पटेल, सेवासदन, सराज्ञित पेड, पूना मिटी

१ मावरमती आध्यममें वालकोंके व्यवहारमें मिलनना पाओं गओं। जिसके लिओ प्रायश्चित्त-स्वरूप पू० वापूजीने २४-११-'२५ से १-१२-'२५ तक मात दिनके अपवाम किये थे। असमे घटा हुआ वजन।

२ वर्षांकी क्ल्या पाठशालामें।

(सत्याग्रहाश्रम, सावरमती, जनवरी, १९२६)

चि० मणि,

तुम्हारे वहां (वर्षा) पहुंच जानेका समाचार जमनालालजीने लिखा है। मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखना। कमला' और मदालसा'को खूव संभालना। वैसे कक्षाका तो कहना ही क्या? देवयरको कृतज्ञताका पत्र लिखा या क्या? न लिखा हो तो लिखना, मराठीमें।

वापूके आशीर्वाद

े . . . यहां आया है। मैं आया असी दिन। नन्दूबहन के पास गया था। अन्होंने खूब घीरज दिखाया है। श्रीमती मणिबहन, ठि० सेठ जमनालालजी, वर्षा (सी० पी०)

१. स्व० जमनालालजी वजाजकी लड़कियां।

२. स्व० विजयागीरी कानूगा। अहमदावादके प्रसिद्ध स्व० डॉ० कानुगाकी पत्नी।

३. श्री नंदूबहन कानूगाका छोटा वारह वर्षका पुत्र अेकाओक गुजर गया, जिसका अन्हें वड़ा आघात लगा था।

आग्रम, (सावरमती) चुचवार (६-१-'२६)

चि० मणि,

अंक पत्र भैने विनोवां के पत्रमें तुम्हें भेजा या। वह तो कहिकों मिला होगा? क्यों कि विनोवा तो यहा है। नुम्हारा पत्र कल मिला। चि॰ कमलाकों जो पनन्द हो वह रिक्षा दी जाय। अंक दो हिन्दी पुस्तकों ली जाय और अन्हें पढवाया जाय। कमलाका अक्षणित बहुत कच्चा है, वह मिखाया जाय। वह गुजराती समझ लेनी है। और भी जो विषय अने पसन्द हों वे सिमाप जाय। रामायणमें से थीड़ा भाग माय पड़ों तो भी ठींक है। मुख्य बात तो कमलामें अध्ययनका रस पदा करने की है। मराठी लिखना-पडना जरा ज्यादा जान लेना। नित्य धूमने जाना और सब कुछ नियमपूर्वक करना।

बापूके आसीर्वाद

चि० मणिवहन, ठि० सेठ जमनालालजी, वर्षा (मी० पी०)

१ आचार्य विनोवा भारे। वायमवामी। १९४०में हमारे राष्ट्रकी सम्मिनिक विना हिन्दुस्तानको विश्वयुद्धमें शामिल कर देनेके विरुद्ध व्यक्तिगत मिनय कानून भग शुरू किया गया, तब वापूजीने अुन्हे प्रयम सत्याप्रही चुनकर सम्मानित किया था। वापूजीके गुजरनेके बाद भूदान- थान्दोलनके प्रणेता।

(सत्याग्रहाश्रम, सावरमती, ११–१-'२६) सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे सब समाचार देता है। भाओ देवबरके नामका पत्र अच्छा है। अुन्हें अच्छा लगेगा।

वहां सब नया है, अिसलिओ जरा घवराहट होती है। परन्तु अिस तरह कायर नहीं बनना चाहिये। कमला जितनी बढ़ सकती है अुतना अुसे बढ़ाया जाय। घीरे घीरे ठिकाने आयेगी। अुसे बातोंमें छगाया जाय। घूमने निकले तो घूमने ले जाओ। अुसे प्रेमसे जीता जाय।

मराठी लिखने और पढ़ानेकी आदत नुम्हें नहीं है। दोनों अभ्याससे आयेंगी। वहां मराठी है, यह तो हम जानते ही थे। हिन्दी घर पर पढ़कर सीख लो। वहां किसीकी मददकी जरूरत हो तो लेगा।

सादीकी वात दूसरोंको घीरेसे समझाओ जाय और वे जितना मानें अुतनेको गनीमत समझा जाय।

अर्थात् प्रत्येक वस्तुं निष्काम वृत्तिसे की जाय। हम प्रयत्नके मालिक हैं, फलके नहीं। मेहनत करके संपूर्ण सन्तोप मानें। असमें कभी नहारें। अन्तमें तो यहां काम करनेका समय आयेगा ही।

मैं यहां रहूं अुसी समय तुम्हें दूर रहना है, लिसका खेंद न मानना। पत्र द्वारा तो मिलेंगे ही।

अपना स्वास्थ्य संभालना। और संभालनेके लिओ मनको विल्कुल प्रफुल्लित रखना। ~

वापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन, ठि० सेठ जमनालालजी, वर्षा (सी० पी०)

(मत्याग्रहाश्रम, सावरमती, ३-२-'२६) दुधवार

चि॰ मणि,

देवदास तो यहा नही है। वह अभी तक देवलालीमें ही है।
मेरी तवीयन अब अच्छी है। वसजोरी है, वह मिट आयगी। अब
वहा जी लग गया होगा। कमला जिननी आगे चले अतुनी चलाना।
विन्ता बिलकुल न करना। स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। धूमने हमेशा
जाना। गगूवाओं जो आध्म (वर्घा) में है शायद चली जायगी।
कमला (बजाज) के विवाहके समय यदि समव हो तो यहा आना।
मुझे नियमित पत्र लिखना।

श्रीमती मणिवहन, ठि० सेठ जमनालालजी, वर्षा (बी० अन० रेलवे)

80

(सत्याप्रहाश्रमः सावरमतीः १५-२-'२६) सोमवार

चि० मणि,

कार्ड मिला। डाकका वक्त है। यदि सुम दोनों किसी निश्चय पर पहुचे होओ तो असके अनुसार करना। यदि न पहुचे होओ तो हम सब मिलकर निर्णय करेगे। मैं यहा बैठकर नहीं कर सकता। अर्थ

१ अुस समय वर्षा आध्यममें रहनेवाली अेक बहुन । २ श्री जमनालालजी तथा मैं।

लाओ या जमनालालजीके साथ, बिसका निर्णय तो वहांके कर्तव्यका विचार करके तुम्हींको करना है।

वापुके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन, ठि॰ सेठ जमनालालजी, वर्घा (सी॰ पी॰)

४१

देवलाली, (१५–५–'२६)

चि० मणि

वाको राजी कर लिया'। परन्तु मंगलवारसे पहले आनेसे लिनकार कर दिया, अिसलिओ अब तो वहां वुववारको आर्येगी। सूरजवहन को कहना। शिष्य और शिष्या संतोष दे रहे होंगे। सबमें ओत-प्रोत हो जाना सीखो। नंदूबहन (कानूगा)को मनाया जा सके तो मनाकर ले आओ । कार्यक्रम बदल गया है यह कृष्णदास (गांबी) ने बताया होगा।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन, सत्याग्रह आश्रम, सावरमती

१. श्री देवदासभाजीका वम्वजीमें अपेंडिसाजिटिसका ऑपरेशन कराया गया था। अस समय वा आश्रमसे वम्बजी गजी थीं। पू० वापूजीने अन्हें आश्रम लौटकर वहांकी जिम्मेदारी संभालनेको राजी किया था, हालांकि वे अधिक समय देवदासभाजीके पास रहना चाहती थीं।

२. अेक आश्रमवासी बहुन।

३. श्री देवदासभाओके ऑपरेशनके समय वा वम्बओ गओं तव अनके मुपुर्द जो अक वहन और दो वालक थे अन्हें वा मुझे संभालनेके लिओ सौंप गओ थीं।

४. श्री नंदूबहन कानूगा पुत्रके देहान्तके वाद बहुत गमगीन रहती थीं। अुन्हें आश्रममें खींचनेका प्रयत्न अुक्त समय वापूजी कर रहे थे।

चि० मणि,

वाह, कुमारिया बोमार पहें तो मैं दुखडा किसके पाम रोजू? यह तो समुद्रमें आग लगनेके बरावर हुआ। सेवा करनेके लिजे भी दारीर-रक्षांनी कला सीख छेनी चाहिये। मेरा तो खयाल है कि जैने तुम मब कपडे पहनती हो वैसे ही मच्छरदानी भी रानको पहानी चाहिये। और तो मैंने बच्चोंने पत्रमें जो लिखा है मो देखना।

आशा है अस पत्रने मिलने तक तो बीमारी चली गयी होगी।

वापूके आशीर्वाद

83

मीनवार (१९२६)

चि० मणि,

यिपर तो नुम्हारा अंत्र भी पत्र नहीं आधा। अब तबीपत विल्कुल अच्छी हो गंशी नया? जैसे जैसे व्ययंकी बिन्ता घटेंगी और चित बालवनी तरह शुद्ध होगा, वैसे वैसे बीमारिया कम हो जायगी। 'शुद्ध' का अपं समझ लो। शुद्ध चित्तको बिसीका दुख नहीं लगता, असमें किमीका दोष नहीं ठहरता, वह किमीका बुरा नहीं देखता। यह भव्य स्थिति है। में कह वू कि मेरी तो यह स्थिति नहीं है। में अप स्थितिको पहुचना चाहना हूं। परन्तु अमसे बहुन दूर हूं। अम स्थितिको असड ब्रह्मचारी और

१ ४२ से ४७ नबरके पत्र आध्यमवासियोंके नामके पत्रींके साप आध्यमके व्यवस्थापकके मारफत आये थे।

२ आक्षममें मच्छर बहुत थे, परन्तु मैं मच्छरदानी अिस्तेमारु नहीं करती थी।

र १९२५-२६ में मै बहुत अस्यस्य रहती थी।

ब्रह्मचारिणी जल्दी पहुंचते हैं। असोंको मैंने देखा है। अंण्ड्रूज अस स्थितिके नजदीक हैं। अन्हें मूर्ख माननेवालोंको तुम मूर्ख जानना। असी शुद्धता तुममें आनी ही चाहिये।

वापूके आशीर्वाद

४४

मौनवार (१९२६)

चि॰ मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। वापूसे भी सव हाल सुने। वीमारीकें वारेमें अव अधिक नहीं लिखता, क्योंकि देरसे देर गनिवारको तो मिलनेकी आशा है। परन्तु तुम्हें झट अच्छी और ताजी हो जाना चाहिये। वापूके आशीर्वाद

४५

गोंदिया, (१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारी भावनाको मैं जानता हूं। परन्तु मेरे ही साय जन्मभर थोड़े रहा जा सकता है? मेरे कामके साथ रहा जा सकता है। अिसलिओ अुसके वास्ते तैयार हो जाओ। वहां अक भी मिनट वेकार न जाने देना। मुझे लिखती रहना। यथासंभव मैं भी लिखूंगा।

वापूके आशीर्वाद

१. दीनवन्युके नामसे प्रसिद्ध स्व० सी० अफ० अण्डूज।

मौनवार (१९२६)

चि॰ मणि,

तुन्हारा पत्र मिला। येरे अंक अद्गार परमे महादेवने तुम्हारी अनुमिति प्रतीक्षा त्रिये विना मुचे तुम्हारा पत्र बता दिया। मुझमें दुग्छ ठिपानेकी महादेवमें कोशी आद्या न रखे। यह बात अनुकी शक्ति वाहर है। हम कुठ आदनें डालते हैं, फिर अनुसे अल्टा करना शक्तिकें बाहर हो जाता है। अच्छी आदतोंके लिओ यह गुण पैदा करने लायक है। जिहमाका बुद्ध ध्यान परनेवाला अन्तमें हिमा करनेमें असमर्थ हो जाता है। यानी शरीरमें नहीं परन्तु विचारसे। विचार ही कार्यम मूल है। विचार गया तो कार्य गया ही समझो।

मेरा वियोग जितना तुम्हें स्टक्ता है अतुना ही मुझे भी खटका हो तो? और अभी भी खटकता हो तो? तुमने श्रेयको पसन्द विया, मैंने भी अमीको पसन्द विया। असीमें तुम्हारा, मेरा और सबका कन्याण है। श्रेयको प्रेय बनाना विधाका फल होना चाहिये। असिल्अे आश्रममें रहना श्रेयस्वर है, अमा यदि समझती हो तो अने प्रिय बनाओ। असिं अपने मनको या भुझे घोषा न देना। जब आश्रममें रहना अध्छा न लगे तब तुम्हे अभ्यत्व रखनेको मैं तैयार ही हू, यह समझ लो। मुझे खुलकर लिखो। मले ही मैं असे न समझू। भले ही जुनके अतुतरमें भाषण द। बडाके भाषण सहन करना सीखना चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

सोमवार (१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। काका (विट्ठलमाओ) की मौजूदगीमें शहरमें जाना तय किया, यह ठीक ही किया।

मनु^र और मणिलाल वीरजसे ही ठिकाने आयेंगे।

वा फिर कह रही थी कि रविवारको निकलेगी। बुधको तो वह पहुंच ही जायगी।

यह रातको सोनेसे पहले लिख रहा हूं। अिसलिओ अधिक नहीं लिखूंगा।

वापूके आशीर्वाद

86

वर्घा, मीनवार (६–१२–'२६)

चि० मणि,

सव वहनोंका पत्र असके साथ है। अव तुम्हारा। अभी तक तुम्हारी अनिश्चित स्थिति देखकर मुझे दुःख हो रहा है। मैं नहीं मानता कि तुम्हारे लिओ आश्रमसे अधिक अच्छी कोओ और जगह हो सकती है। हो सकता है कि आश्रममें भी तुम्हारा जी न लगे। अस स्थितिको दूर करनेका प्रयत्न करो। कब्ज रहता है, पर असका अपाय तो तुम्हारे हाथमें ही है। अथवा तुम अहमदाबादका पानी मंगाकर पिओ। पीने जितना आसानीसे मंगाया जा सकता है। नदीका पानी अुवाल कर पिओ तो भी वहीं

विट्ठलभाओं विधान-समाके अध्यक्ष चुने जानेके वाद अपने मतदाता-क्षेत्रमें अर्थात् गुजरातमें दौरा करनेके लिखे आये थे।

२. वापूजीके वड़े लड़के हरिलाल गांधीकी पुत्री ।

३. आश्रमका अक विद्यार्थी।

नाम होगा। तुम्हे प्रफुल्टित रहनेना दृढ निश्चय करना चाहिये। १४ तारीलके बाद यहा आजेना विचार स्थिर रखना। यहा सस्वननी पढाओमें तो मदद मिलेगी हो। हवा तो अनुकूल है ही। मूझे खुले दिलवे जो कुछ लिखना हो अमुके लिखुनेमें मकीच न रखना।

रमणीक्लालमात्री'से पहना कि पूजामाओं के स्वास्त्यके समाचार मुझे नहीं मिले, जिसमे जिल्ला रहती है। अनुका पता क्या है? अन्हें स्वास्थ्यके समाचार मिठते हों तो लिखें।

बापूके आर्शावीद

चि० मणिवहृत पटेल, सन्याप्रह आश्रम. सावरमजी

४९

वर्षा, बुधवार (८--१२-'२६)

चि॰ मणि,

तुम्हारा कार्ड मिला। युभीने आओ। रातकी गाडी रुनेके बजाय मुबहकी तेना अच्छा है। फिर जैमी मरजी हो वैसा करना। मुझे अब कोओ शादी तो करनी नहीं है कि प्रतिक्षण विचार बदलू। यह अजारा तो कन्याओंका होता है। बुछ हद तक कुमार भी असे मोगते हैं।

बापुके आसीवाँः

चि० मणिवहन पटेल, सन्याग्रह आश्रम, सावरमती

१ थी रमणीक्लाल मोदी। आध्यमकी पाउचालाके दिक्षक।

२ वे राजचन्द्रजीके भक्त थे और पू॰ बापूजी भारतमें आये तबसे अनुके मसगमें रहते थे। कुछ समय गुजरात प्रान्तीय काग्रेस कमेटीके कोपाब्यक्ष रहे थे। जीवनके अन्तिम दो वर्षोंग्रें वे सावरमती आश्रममें आकर रहे थे।

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अस पत्रके पीछेका पत्र पढ़ना । अस कामके लिओ तुम्हें भेजनेका विचार होता है। तुम या मीरावाओं ही वहां काम कर सकती हो। सिंबी लड़िकयां होंगी, असिलिओ अंग्रेजी और हिन्दीकी जरूरत होगी। मीरावाओं अभी भेजी नहीं जा सकती। असिलिओ मैं चाहता हूं कि तुम जाओ। यदि निश्चय हो जाय तो वताना।

• 'तुम्हें सुख-दु:ख सहकर भी आश्रममें अर्थात् मेरे साथ ही रहना

है। अपना अन्तर मेरे सामने अंडेल कर मुझसे 'मां' का काम लेना।

१. कराचीसे श्री नारायणदास आनन्दजीने कराची म्युनिसिपल कन्या पाठशालामें तकली सिखानेके लिओ अक बहनकी वापूसे मांग की थी। यह पत्र अुसीके सिलसिलेमें है। अुनके पत्रका प्रस्तुत भाग अस प्रकार है:

कराची, २०–१२–′२६

परम पूज्यपाद वापूजीकी सेवामें,

म्युनिसिपल कन्या पाठशालाओं में तकलीसे कातनेका काम शुरू करनेका प्रस्ताव पास हुआ है। और असके लिओ अक सिखानेवाला छह महीनेके लिओ ५० २० वेतन पर रखनेका निश्चय भी हुआ है। यहां असी महिला मिल नहीं सकती। अतः क्षिस कार्यमें आपकी सहायता लेना चाहता हूं। यदि असी किसी वहनको अहमदाबाद या दूसरी जगहसे भेज सकें— नियुक्तिकी अवधि वढ़ाओं भी जा सकती है — तो लिखियेगा। परन्तु शिक्षिकाओं और लड़कियोंको दिलचस्पी हो सके, असी होशियार और साथ ही मिलनसार महिलाकी वड़ी जरूरत है।

नारायणदास आनन्दजीके

वन्दन

तुम्हारी नीरमुताका नारण भीतर ही भीतर नाषीका अभाव ता नहीं है न? मुझे तुम्हारे जेक हितुंपीने आपहपूर्वक कहा है कि मुझे तुम्हारा विवाह कर ही देना चाहिये। यह बात अक युवकके मिल-मिलेभे निक्छी। वह पाटीदार तो नहीं है, परन्तु योग्य है। मैंने कहीं कि तुम्हारे बारेमें मैं तो निर्मय हू। तुम्हारी विवाहकी अच्छा होगी, यह अभी तो मैं नहीं देखता। तब अन्होंने कहा, "आप मणिबहनको नहीं जातने।" जिस समय तो मैं मजाक नहीं कर रहा हू, यह मेरी भाषा परमें तुम देख सकोगी। मुझे निर्मयताने अनुतर देना। जितना तो है ही कि जिने बुमारी रहनेकी अच्छा हो अने वीरायना बनना चाहिये। अने प्रफुल्लिन रहना चाहिये। नहीं तो लोग कहेंगे, "अमकी शादी कर दो।"

दापुके आशीर्वाद

नि॰ मणिवहन पटेल, मन्याप्रह आश्रम, सावरमनी

48

(भोदपुर, ३–१–'२७) सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रोत्री मैंने आजा रखी थी, परन्तु अंक भी नहीं मिला। स्वास्थ्य मानसित्र और धारीरिक अच्छा होना। सस्कृत सूत्र चल रही होगी। मुझे ब्योरेवार अन्तर लिखना। ६ तारील तक कोमीलामें रहूगा। ९ तारील तक काशीमें। काशीका पता गाधी-आश्रम, बनारम छावनी करना। बापूको पत्र लिखना। मालूम हुआ है कि वे तुम्हारी जिल्ला कर रहे हैं। हम सब मजेमें है।

बापूरे आशीर्वाद

थी मणिबह्न, मन्त्राग्रह आश्रम, वर्जा, बी० अन० रेलवे

(काशी, ८–१~'२७) शनिवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। वालजीभाओ से पढ़नेकी व्यवस्था की है सो ठीक हुआ। भुनसे वहुत सीखा जा सकेगा।

तुन्हें शिक्षणसे क्यों मुक्त किया गया है, यह मैं नहीं जानता। क्योंकि जिस पत्रमें ये समाचार थे अससे कारण मेरी समझमें नहीं आया। तुम खुद साहसपूर्वक पूछ सकती हो। मैं तो समझता था कि तुम्हें कारण वताया गया होगा। मैं निश्चित था, क्योंकि शिक्षा देना हो या न देना हो, तुम्हें आश्रममें ही रहना है और वेतन कहो या जो कुछ भी कहो, वह चालू ही रहेगा। तुम्हारी जिम्मेदारी मुझे कुठा छेनी है। शिक्षक पर रोप भी न करना। बुन्हें सारा तंत्र चलाना पड़ता है, असलिओ अुन्हें जो ठीक लगता है वैसा वे करते हैं। परन्तु कारण जाननेका तो तुम्हें हक है ही। वह जान लेना।

परन्तु अव तो तुम्हें कातना सिखानेकी तैयारी करनी है। असकें सिलिसिलेमें जो सीखना जरूरी हो वह सीख लेना है, अर्थात् चरखा सुधार, रुआकी किस्में, लोड़ना, पींजना, कातना, फुंकारना, आंटी बनाना, तार जोड़ना वगैरा सब कियाओं। माल बनाना आना चाहिये। साड़ी बढ़ाना

श्री वालजी गोविन्दजी देसाओ। अक आश्रमवासी, 'यंग अिडिया' के अक सहायक।

२. आजकल तकुओं पर लोहेकी गरेड़ी होती है। परन्तु पहले स्तको गोंद लगा कर तकुओं पर लपेटा जाता या असे साड़ी कहते थे।

जाना चाहिये। और जहा जाना होगा वहा जिन क्रियाओं माय दूसरा जो मुछ मीमनेको मिल जाय वह भीख छेना चाहिये और जिसी मिल-मिलेमें सस्त्रत और हिन्दी तो पक्की हो ही जानी चाहिये। सम्कृतमें गीताजीके अर्थ व्याकरण-सहिन पक्के होते चाहिये। तक्की तो है ही। कराचीमे तार आया है कि तुम्हारा नाम बोडंके सामने गया है। मैं खुश हुआ हू।

मुझे पत्र लिखनी रहना और भूव अन्माहपूर्वक काम करना। अव २ से ८ तारीख तक गोदिमा, नागपुर, वर्षां, अकोला, अमरावनी अिम प्रकार कार्यक्रम रहेगा। निश्चिन हाहर नहीं जानना। वर्षा पत्र भेजनेंगे ठीक रहेगा।

वापूके आसीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, सत्याप्रह आध्रम, सावरमनी

> ५३ (तार)

> > गया, १५-१-'२७

मणिबह्न, सत्याग्रह आश्रम, सावरमती

सुम्हारे पत्रसे आनन्द हुआ। पीजना और लोडना जल्दी पूरा सीख लो।

दापू

(विहार, १७–१–'२७) मौनवार

चि० मणि,

् तुम्हारा पत्र मिल गया । तुम्हारे पत्रमें कुछ भी छिपाने जैसी वात नहीं है, जिसे कोसी न पढ़े। फिर भी महादेवके सिवा और किसीने नहीं पढ़ा।

१. (१९२७)

परम पूज्य बापूजी,

जवसे बादो न करनेका निश्चय किया है तबसे आजकी अस घड़ी तक तो मुझे कभी बादी करनेका विचार आया नहीं। कितनी ही अशान्त होशूं, चित्त कितना ही व्यग्र हो, फिर भी मुझे असा नहीं लगा कि बादी करूं तो शान्ति मिलेगी। अलटे यही खयाल हुआ है कि विवाह किया होता — मेरी सम्मतिसे या वापूके कहनेसे — तो अविक दुःखी होती। जुहू वीमार होकर आशी अससे पहले आत्महत्या करनेका विचार दो तीन वरसोंमें अनेक वार हुआ या, परन्तु निश्चित विचार कभी नहीं किया। अस वीमारीके वाद तो असा विचार कभी विशेष किया नहीं। कभी वहुत ही व्यग्र हो गशी तब अक या दोसे अधिक वार यह विचार नहीं आया। परन्तु आत्मघात नहीं करूंगी, शिसका विश्वास दिलाती हूं। और अक वार कह देनेके वाद तो हर्रागज नहीं करूंगी।

मैं तो संसारसे अूव गओ हूं। यहां वहां रहकर अनेक लोगोंके हाथ सुख-दु:ख सहते हुओ पली हूं। मेरी दृष्टिसे मैंने अब तक कुछ कम कष्ट नहीं भोगा है। असमें से ज्यादाका तो वापूको पता भी नहीं होगा। मेरा स्वभाव ही असा है कि मैं शायद ही किसीसे अस वारेमें कुछ कहती हूं। और फिर भी अस समय अुन दु:ख देनेवालोंमें से किसीके यहा कोओ बीमार हो और भेवा करने मुझे बुलावें, तो मुझे अँसा नहीं लगता कि मुझे अितना सताया था, अब मैं क्यों जाअू ? असा विचार भी नहीं आता, अितना ही नहीं, हो सके तो मैं जरूर जाती हूं। मेरी बचपनकी लगभग सभी तरगें तरगें ही रह गजी। वे सब हवाओ विले नहीं थे। परन्तु परिस्थितिया ही औमी थी जिनमें स्वतत्र दील्ने पर भी मैं परतत्र ही थी। पाटोदार जातिमें जन्मी हुओं अैक लड़की थी, अिमल्जि अुसके भी थोडे-बहुत फल भोगे। मेरी अुमग, मेरा अुल्पाह, अिम प्रकार बचपनसे ही नष्ट होने लगा था। लगभग १९१५ से अिम प्रकारकी चित्तकी व्ययता अनेक बार होती रही है। अस समय छोटी थी अिसल्धि कोशी यह नही कहता या कि अिमकी शादी कर दो। अस समय मैने भी कोओ निश्चय नहीं किया या। अस समय भी और अुमके बाद भी कभी बार अकातमें केवल रोकर वान्ति प्राप्त की है। और जबसे मुझे औसा लगा — मुझे साफ दिग्वाओ देता है — कि कुछ छोग मानते है कि मैं जरा जरासी बानमें रो देती हू या मुझे रोनेकी आदत पड गंजी है, तबसे मैं ययासमव किसीके देखते नही रोनी, अथवा मेरे हृदयमें होनेवाला दर्द में जहा तक हो सके किसीसे कहती नही।

मैं मानती हू अब यह स्पष्ट हो जायगा कि मेरी नीरसताका कारण सायीकी कमी नहीं है। दूसरोकों जो कहना हो मले ही कहें। और मान लीजिये कि पू० बापू या आप मेरी शादी कर देनेका निश्चय करे, तो भी अब मैं छोटी नहीं कि आप लोग मेरी शादी जबरदस्ती कर सकें। अम बारेमें मुझे जरा भी शक नहीं। अधिकसे अधिक क्या होगा? क्षिक्सिक होगी और ससारमें तीनोकी थोडी नुराओं भी होगी। भछे असा हो, परन्तु अच्छाके विश्व तो मैं हरिगज व्याह नहीं कहगी। असी तरह मैं यह भी विश्वास दिलाती हूं कि जब विवाह करनेकी मेरी जिच्छा होगी तब कहनेमें शरमां जुगी नहीं। मैं यह जहर मानती हूं कि बापूके सामने मेरी जवान

करेंगे। मेरी चले तो मैं छड़िकयोंको जवरदस्ती कुमारी रखूं। विवाहं करनेको तो छड़िकयां मुझे मजबूर करती हैं। अिसलिओ

जरा ज्यादा खुली होती, तो मुझमें अितनी अधिक व्यग्रता या नीरसता न होती। परन्तु अब अिस दिशामें प्रयत्न करनेकी जरा भी अिच्छा नहीं होती। जब तक मुझे जरूरी लगा मैंने प्रयत्न करके देख लिया। शायद मुझे करना नहीं आया हो। वापूके सामनें नहीं बोल सकती, अिसमें मेरा ही दोष है, असा कहा जाय तो असे भी मैं स्वीकार करनेको तैयार हूं। अब अस सम्बन्धमें पहलेकी तरह चर्चा या वातचीत नहीं करनी है। परन्तु अब मैं कुछ भी प्रयत्न नहीं करूंगी, क्योंकि मैं स्पष्ट मानती हूं कि अस बारेमें किसीसे कुछ नहीं हो सकता। विवाह न करने और चित्तकी अस्वस्थताके सम्बन्धमें अतने स्पष्टीकरणसे मैं विश्राम लेती हूं। फिर भी हमेशा अस मनोदशा पर काबू पानेकी कोशिश तो मैं करती ही हूं। अकसर असमें सफल होती हूं। परन्तु यह सफलता अधिक समय तक नहीं टिकती।

तुम्हारा पत्र मिला। मिणके वारेमें तुमने लिखा सो जाना। कुछ तो मेरा दोप है ही। परन्तु मैं काममें खितना घिरा रहता हूं कि रातको देर तक कुछ न कुछ काम शहरमें होता ही है, अिसलिओ डॉक्टरके यहां खा लेता हूं। परन्तु डाह्या अहमदावाद रहने आया तव मैं मानता था कि मिणको कुछ न कुछ शान्ति मिलेगी। मेरे साथ वह खुलकर वोल ही नहीं सकती। मैं असे बुलाओं तो भी वह बहुत हिचिकचाती है। यह असीका दोप है सो वात नहीं। मैं खुद भी ३० वर्षका हुआ तव तक जहां बड़े हों अस जगह अक अक्षर भी नहीं वोलता था। घरके बड़े लोग मौजूद हों तव वोलना नहीं चाहिये, यह घरका रिवाज था। यह स्वभाव वन गया। बड़े छोटोंके साथ जयादा वोलते ही नहीं।

पू० वापूके साथ मैं बोलती नहीं थी, अस वारेमें हमारे घरके रिवाजके विषयमें श्री महादेवभाशीके नाम पू० वापूने अस प्रकार लिखा था:

मेरी तरफ्से तो तुम्हें अमयदान ही है। तुम्हें न समझनेवाले मुझे तम करते थे। असिलओ मैने भी पूछ लिया। वह भी तुम्हारी व्यप्नावस्या देखनेके बाद। मैं अमी जवान लड़िन्योंको जानता जरूर हू जो स्वय जाननी नहीं, किन्तु जिनकी चित्तकी व्यप्नताका कारण दादी न करना ही होता है। मैं मानता हू कि तुम्हारे लिओ यह बात नही होगी। वेवल आहा। बाहर रहा और मैने पालकर अमे बड़ा किया, जिसलिओ वह सबके साथ पूरी छूट लेता है।

मणि तो पहले-पहल सुम्हारे और वापूजीके साथ मुलकर बरताव करने लगी है। और पत्र लिखना भी पहले-पहल नुम्हारे ही साथ सीमी। यह देनकर मुन्ने भी शूरूमें तो अजीव-सा लगा था। परन्तु मेरा नयाल है कि अब अुममें अधिक साहम आना जा रहा है। फिर भी मेरे नाथ तो जुमकी हिम्मत सुलती ही नही। असके सिवा अस सम्बन्धमें तो हम प्रत्यक्ष मिलेगे तब बात करेगे।

१ यह पत्र मुझे भेजते हुओ महादेवमाओने लिखा था •

वम्बओ, १४- -१९२१

प्रिय बहुन,

जवाव बहुत ही दिख्या है। वह पत्र ही तुम्ह मेज रहा हूं। तुम्हें हिम्मत रवनी ही चाहिये। पितासे जितनी बात की जा सकती है अुतनी दुनियामें बिसीसे नहीं की जा सकती। शास्त्रवाक्य अना है कि पिता, गुरु और बेदके आगे तो कुछ भी छुपाकर रक्षा नहीं जा सकता। अुनके सामने अन्तरके द्वार खोले जा सकते हैं। तुम्हें तो वडे सज्जन पिता मिले हैं। अुन्हें तुमसे बात करनेकी अिच्छा होती है, फिर भी तुम अुनसे नहीं मिलती, यह तुम्हारे ही साहमकी कमी है। तुम्हारी जैसी निर्वोप बालिकाकों तो दुनियामें किसीके पास जाने या बात करनेमें सकोच होना ही नहीं चाहिये। यह पत्र मिलनेके बाद बापूसे मिलना। सब बात करना और मुझे पत्र लिखना।

तुम्हारा महादेव

परन्तु तुम्हें सावधान करना मेरा धर्म था और यह वताना भी कि क्षेक वार केक वात कहनेके वाद शादीका विचार न किया जाय असा कुछ नहीं है। हां, यदि व्रत ले लिया हो तो जरूर वात खतम हो जाती है। फिर तो आसमान टूट पड़े तव भी व्रतको तोड़ा नहीं जा सकता। परन्तु तुमने जब तक व्रत न लिया हो तव तक मेरे जैसा भी तुमसे पूछेगा। दूसरे तो आग्रह भी करेंगे। विसका अर्थ यह नहीं कि मैं चाहता हूं कि तुम व्रत ले लो। वह तो जब व्रतके विना न रहा जा सके तब अपनी अच्छासे लेना। अब मेरे लिखे तो तुम्हारे विवाहकी वात करनी रह नहीं जाती। जितना ही नहीं, मैं औरोंको भी अससे रोकूंगा। परन्तु तुम्हें व्यग्रावस्थासे निकल जाना चाहिये। कुमारीपनको हर तरहसे सुशोभित करना चाहिये। ब्रह्म-चर्यका तुम्हें धार्मिक अर्थ करना है और अससे धार्मिक फल पैदा करनेके लिखे वह ब्रह्मचर्य तुम्हें पालना है जिसके वारेमें मैंने अभी 'नव-जीवन' में छप रही 'आत्मकथा' में लिखा है। जिसलिखे तुम्हारी प्रकृति शान्त, प्रफुल्लित, अुद्यमी और समभावी हो जानी चाहिये।

'मार्गोपदेशिका' वार वार पढ़कर असे पचा डालो। गीताजीके प्रत्येक शब्दको असके नियमोंके अनुसार समझना।

लोड़ना-पींजना सीख लेनेके वारेमें मैंने तार दिया है। मैंने कराची भी तार दिया है। अभी तक नारणदासका जवाव नहीं आया। आये या न आये, मेरे पास असी मांग तो और जगहसे भी आयी है। अलग अलग जगह तुम्हें कताओं सिखानेके लिओ भेजते रहनेका विचार है। मैंने ५० ६० और सफर-खर्चकी मांग की है। अससे अनुभव भी काफी होगा। वादमें देख लेंगे। वहां अभी किसी काममें न लगना। ३० ६पये तो लेती ही रहो। अनुमें से वचें तो भले ही वचें। मैं हिसाब मांगूंगा।

वांपूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, सत्याग्रह आश्रम, सावरमती

क्षकोला जाने हुओ, रविवार (६−२–′२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें अक्षर मुघारनेकी जरूरत है। अक्षर वडे और साफ लिंबनेनी आदत डाळो। किसी खास मौके पर अच्छे लिंबना ही काफी नहीं। जैसे महादेव (देमाओ) के अक्षर सदा अच्छे ही होते हैं वैसे लिखना चाहिये।

अभी तो हरिहरभाशीकी क्क्षामें मले ही जाती रहो। बीउनेका महावरा रखनेसे हिन्दी आ जायगी। असका शौक रहेगा तो अपने आप शान आ जायगा।

कराचीमे जवाब आने पर लिख्गा।

कातने सम्बन्धी सारी फियाओं में पूरी निपुणता प्राप्त कर लेना। अंक भी चीज बाकी न रहे। मैं सफरमें देखता ही रहता हू कि अँमी चरित्रवान स्त्रियोकी बडी जरूरत है।

मणिलाल कोठारीके नामका पत्र पढनेका सुम्हें अधिकार तो नहीं था, परन्तु पढ लिया तो कोओ बात नहीं। आज जवान भारतीय स्त्रीकी ब्रह्मचर्य-पालनकी शिवतका कोओ विश्वास करनेको तैयार नहीं है। तुम और आधमकी दूसरी कुमारिया जिस अविश्वासको झूठा सावित करे, जिसके लिओ में तो तरम रहा हू।

बापूके आशीर्वोद

श्री मणिबहन पटेल, सत्पाप्रह आश्रम, सावरमती

१ सत्याप्रह आश्रमकी पाठशालाके अस समयके शिक्षक।

२ पत्र न० ५० देखिये।

गुरुवार (१०–२–'२७)

चि० मणि,

तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। हिन्दी शुरू कर दी, यह अच्छा किया। जो करो असमें स्वास्थ्यकी रक्षा करना। तो मैं निश्चिन्त रह सकूंगा। अक्षरोंको विलकुल मत विगड़ने दो। भले ही लिखनेमें देर लगे। थोड़े समयमें सुघर जायंगे और गति वढ़ जायगी।

पूनियां तो मुझे वहुत ही अच्छी लगती हैं। मैं चाहता हूं कि एओको सब कियाओंमें नुम्हें पहली श्रेणी मिले। नुम्हारा अच्छेसे अच्छा अपरोग कन्या-पाठशालाओंमें कताओ सिखलानेमें होनेवाला है। और अन्तमें ओश्वर नुम्हारी तवीयत ठीक रखे तो गरीव वहनोंके कल्याणमें करना है। स्त्रियोंमें जो काम करना है असका कोओ अन्त नहीं है और वह पुरुषोंसे तो मर्यादित रूपमें ही हो सकता है।

भोजनालयकी आलोचना मुझे सब लिखना। और शंकर को प्रेमपूर्वक बताना। अक दो दिन खुद करके भी बताया जा सकता है। हमेशा असमें भाग लेनेकी जरूरत नहीं होती। तुम्हें दूसरोंके साथ रहनेकी शक्ति पैदा करनी है। जब मैं महादेव और देवदासकी तरह तुम्हें भी चाहे जहां निर्भय होकर रख सकूं तब मैं प्रसन्न होअूंगा। किसीसे तुम्हें दुःख न हो, किसीको तुम दुःख न पहुंचाओ तब मुझे सन्तोप होगा।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल, सत्याग्रह आश्रम, सावरमती

१. आश्रमका संयुक्त भोजनालय संभालनेवाले अंक भाओ।

बुधवार नासिक आते हुओ, (१८–२–'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिळ गया। धैसा दोखता है कि मै वहा जल्दीसे जल्दी ८ तारीक्षको पहुचूगा। अभी तक कराचीमे कोजी खबर नहीं काजी।

गगादेवी वयो बीमार होती ही रहती हैं? बुनका जलवायुं परिवर्तन करने कही जानेका जिरादा हो तो वैसा करे। तोताराम और गगादेवी दोनोंने पूछना। खाने-पीनेमें परहेजसे रहती हैं बया?

मि आकर सस्कृतकी और पीजने, कातने वगैराकी परीक्षा छूगा। सुम्हारे गुजराती अक्षर अभी और अच्छे होने चाहिये। गुजराती व्याक-रणका अध्ययन खुब बढा लेना।

समुक्त मोजनालयको सपूर्ण बकानेकी ओर आजकल भेरा मन अधिक रहता है। अब प्रयोग पूरा होना ही चाहिये। अिममें भरसक मदद देना।

वापूके आगीवदि

चि॰ मणिवहन पटेल, सत्याग्रह आध्रम, सावरमती

१ आधमवासी दमाति।

मौनवार नेपाणी, (२८–३–'२७)

चि० मणि,

मेरी वीमारी का लयाल भी न करना। जो वर्ष वीत जाते हैं लुनका हम खयाल नहीं करते। वैसे ही विकारी मनुष्योके नसीवमें वीमारी भी वर्षोकी तरह लिखी हुओ ही रहती है! कोओ यूं ही चले जातें हैं। फिर भी जाना तो सभीको है, फिर हर्ष-शोक क्यों?

अभी तक तुम्हारे वारेमें तार नहीं आया। अब तो आना चाहिये। तैयारी रखना। संस्कृत कितनी कर ली? पींजने-कातनेका काम अब तो ठीक हो ही गया न?

वापूके बागीर्वाद

यद्यपि जेंक ही दिन लिखा गया है, फिर भी यह पत्र वहनोंके पत्रके वाद मिलेगा, क्योंकि डाकके समयके वाद लिखा है। वापके आगीर्वाद⁸

49

रविवार (१९२७)

चि॰ मणि,

तुम्हारे पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि तुम जान-वूझ कर मुझे पत्र नहीं लिखतीं। परन्तु असा करनेकी अब तो जरूरत नहीं। संस्कृतकी पढ़ाओं कितनी हुआं? अब कातने-पींजनेमें पहला नम्बर आयेगा या नहीं?

१. पू० वापूजीको रक्तचापका दौरा पहले-पहल हुआ।

२. ५८ से ६७ नम्बर तकके पत्र काश्रमकी डाकके साय आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांचीके नाम आये थे। वे आश्रमकी डाकमें आये हुअे पत्र जिनके हों झुन्हें भेज देते थे।

कराचीकी कीओ खबर' नहीं। तबीयत कैसी रहती है ? मैं ठीक होता जा रहा हूं। मेरी चिन्ता करनेका कारण नहीं। बापूके आशीर्वाद

Ę٥

ज्ञुकवार, (१९२७)

चि॰ मणि,

तुम्हारे पत्र मिले हैं। यदि सम्मिलित मोजनालयमें साना साया जा मके तब तो बहुत ही अच्छा हो। जिस बारेमें मैने शकरको पत्र लिखा है। अपे पढ लेना। चि॰ चपा की समालका भार तुमने लिया, यह बहुन अच्छा किया।

अब तवीयत कैमी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

६१

(नदीदुर्ग, २५-४-'२७) मौनवार चैत्र वदी ९

चि० भणि,

तुन्हारा पत्र मिल गया। अुमदा अनिम वादय अघूरा है और हम्नाक्षर तो हूँ हो नहीं। और न तिथि है। यह तो बढी अुनावलीका भूचक है। हमारे यहा कहावत है कि घीरजदा फल मीठा होता है। अुनावजीके अपनावजीके आम नहीं पदने — असी भी हमारी अक कहावत है। अुसका अप्रेजी अनुवाद 'Haste is waste' किया जा सकता है। तुम बापूको अपनी माडोमें से घीजी दे आजी, यह तो बहुत अच्छा किया। अस

१. पत्र न० ५० देखिये।

२ टॉक्टर प्राणजीवनदासकी पुत्रदम् ।

नियमको जारी रखो। अुसमें डाह्याभाशी तथा यशोदा शरीक हों तो कैसा अच्छा हो!

कराचीका काम नहीं होगा, अँसा माननेका कारण नहीं। अँसा ही हो तो भी दूसरी जगहें तो तैयार ही हैं। परन्तु असका निश्चय हो जाय तो दूसरा विचार करेंगे।

वापूके आशीर्वाद

६२

(नन्दीदुर्ग, २–५–'२७) मौनवार

चि० मणि,

ं तुम्हारा पत्र मिला।

वापू लिखते हैं कि तुम्हारा शरीर दुवला हो गया है। अैसा क्यों? शरीर तो मजबूत और तेजस्वी होना चाहिये। आदर्श कुमारीमें तो विरता सभी तरहसे होनी चाहिये।

यदि कराची जाना न हो तो भेरा विचार तुम्हें दिल्ली भेजनेका है, जहां चंपावतीको भेजनेकी वात थी। वहां वहुत लड़कियां हैं और बहुत काम है। दिल्लीका जलवायु तो अच्छा है ही। आजकलमें कराचीसे तार मिलना चाहिये।

वहनोंमें 'से किसीको चोरोंका डर रहा ही करता हो तो मुझे वताना।

राया (गांघी)को कितनी चोट आओ ? क्या वह डर गओ थी ? असे अलग पत्र लिखनेका समय अभी नहीं है।

वापूके आशीर्वाद

श. आश्रममें रातको पहरा देनेमें वहनें भी शरीक होती थीं।
 अेक वार मगनलालभाशीके घरमें -चोर आये तव राघा जाग गंकी थी।

६३

(नदीदुर्ग, ४–५–'२७) वैसाख सुदी ३

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। गगादेवीमे नहना कि डॉक्टर कहे वैसा जरूर करें और मूगना पानी पीना हो तो पियें। यहा वैठा हुआ मैं वहुत मार्गदर्शन तो कैसे कर सकता हू? से नये डॉक्टर कीन हैं? और कबसे आने लगे हैं?

पहरेमें किन किन बहनोने नाम लिखवाये हैं। मेरी तवीयत अच्छी होती जाती है। मुझे नियमपूर्वक लिखती ही रहना। तवीयत कैसी रहती हैं?

वापूके आशीर्वाद

वमुमतीवहनसे पत्र लिखनेको वहना।

६४

(१९२७)

चि॰ मणि,

जो बीमार पडते हैं अन्हें क्या आश्रममे भाग जाना चाहिये ? तुम कहा गओं हो यह भी मैं तो नहीं जानता । भागकर भी झट अच्छा हो जाना चाहिये। चैन न पडे तो मेरे पास आनेकी छूट है, यह याद रखता। सहन होने लायक वैसाग्य लिया हो तो पचेगा। न पचे वह वैराग्य कैसा? कुछ न कुछ समाचारोकी तो रोज ही बाट देखता हूं।

वापूके आशीर्वाद

मेरे सफरकी तारी में तो जावनी हो न?

(१९२७) . गुरुवार

चि॰ मणि,

तुम्हें वुखार आ गया और तुम्हें कमजोरी रहती है, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। बूतेसे वाहर मेहनत नहीं करनी चाहिये। अब तो समय है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। परन्तु कांग्रेसमें आनेके लिओ तुम्हारा चुनाब हुआ होगा तो मुझे खुशी होगी ही।

वापूके आशीर्वाद

मेरे स्वास्थ्यके वारेमें अखवारोंमें कुछ आये तो समझ छेना कि असमें अतिशयोक्ति है। रक्तचापका अुतार-चढ़ाव तो अस दौरेमें होता ही रहा है।

६६

नंदीदुर्ग, (१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। कभी कभी असे समाचार देना।

हम तो न घरके हैं न वाहरके। रास्तेमें बैठे हैं। पूज्य वापूजीकी तवीयत मामूली रहती है। डॉक्टर आराम लेनेको कहते हैं। खुराकमें रोटी नहीं खाते। फल खाते हैं।

कृष्णदास' की तबीयत सावारण है। कमजोरी मालूम होती रहती है। वाकी सब मजेमें हैं। यहां राजगोपालाचार्यजी^र तथा

१. 'Seven months with Mahatma Gandhi' के लेखक। अंक समय वापूजीके मंत्रियोंमें थे।

२. चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य । तामिलनाडके गांघीजीके मुख्य साथी । १९३७ में कांग्रेसने प्रांतोंमें मंत्रि-मंडल वनाये तब मद्रास प्रांतके मुख्यमंत्री । १९४६–४७ की अंतरिम केन्द्रीय सरकारमें अुद्योग और

गगापरराव' बेलगाववाले भी अब दी-चार दिन बाद जायगे। जि॰ कान्ति' और रिमक' मार्ने तो अपदेश देना। सूरजबहन क्या करती हैं? कहा हैं? अन्हे मेरा आशीर्वाद। साधममें जेकीवहन, डॉक्टर महेताकी लडकी, आओ हुओ हैं। युन्हें वहा अच्छा सगता है या नहीं?

बहनोकी प्रायंनामें भाग लेती हो या नहीं ? पूज्य वल्लभभाशीकी तवीयत अच्छी होगी। यहा नदूबहनका पत्र आया था। अुरहें मेरा जय श्रीष्टप्प कहना।

अिम सन्ताहमें बहनीने खूब अंत्माह दिखाया है। अिसलिओ में बधाओं देती हू। वहा प्रार्थेना बहुत अच्छी चल रही है, यह जानकर आनन्द होता है।

वाके आसीर्वाद

६७

नदीदुर्गे, वैद्याख सुदी १२ (१२–५–'२७)

चि॰ मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम दोनो वहनोने नाम लिखा दिया, सो ठीक निया। में तो चाह्ता हू कि जितना शरीर सहन करे अतना पहरा तुम्हारे द्वारा भी हो (भले ही विसीके साथ रहकर)। इर जैसा भूत जिस सखारमें दूमरा कोशी नहीं और वह तो महावरेसे और अश्विरको कृपाने ही जाता है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि चोरोको रसद-मत्री। १९४७-४८ में पहिचम बगालके गवनेर। १९४८ में पहले भारतीय गवनेर जनरल। जुलाओ १९५० से अस्तूबर १९५१ तक केन्द्रीय सरकारके गृहमत्री। आजवल मदासमें निवृत्तिमय जीवन विता रहे है।

१ श्री गगाधरराव देशपाडे। कर्णाटकके नेता।

२ गाधीजीके सबसे बहे पुत्र हरिलाल गाधीके लडके।

३ अप अरमेर्गे चोरिया होनेसे आश्रममें पहरा देनेका निश्चय हुआ या। अुसमें नाम दर्जे करानेका अुल्लेख है। जब सचमुच विश्वास हो जायगा कि हमारा चौकीदार भी अन्हें मारनेके लिं नहीं परन्तुं मरनेके लिं ही वहां है और पहरा देनेवाले आश्रमवासी चौकीदार जैसे वैतिनिक आदमी नहीं, परन्तु गृहस्यी हैं तव चोर हमारा पिंड छोड़ देंगे। तुममें से कों तो किसी दिन आत्मवल दिखायेगा और अुन लोगों को प्रेमसे वनमें करेगा। परन्तु अिसमें शक नहीं कि यह सब सांपके विलमें हाथ डालने जैसा है। संभव है, तुममें से किसीको मार भी खानी पड़े, मरना भी पड़े। रोग देवताकी मार कौन नहीं खाता? स्त्री, पुरुष, वालक सभी अुसकी चपेटमें आ जाते हैं। राधा कितनी वार गिरी? रूखी को क्या हुआ? जुहूके अस्पतालमें कितनी लड़कियां थीं? अगर यह सब हम सहन करते हैं तो चोर अत्यादिकी मार भी हम हंसकर सहन करें असमें आश्चर्य क्या? सिपाहियों रेखा चाहनेवालोंको तो जरूर अचंभा होगा, मगर हमें नहीं होना चाहिये।

तुम्हारी पूनियां मैं कल कात रहा या तभी मिलीं। अनमें से कुछ तुरंत कातीं। अक भी तार नहीं टूटा। और आज मैंने सूतका कस निकालनेका अक निजी अपाय ढूंढ़ा है। असमें तुम्हारी पूनियोंसे निकले हुने तारकी वरावरी लेक भी तार नहीं कर सका। विनसे अच्छी पूनियां मेरे हाथमें कभी नहीं आनीं। जिनके जैसी शायद लेक दो वार आनी हों तो भले ही आनी हों। परन्तु मैं नहीं मानता कि तुम्हारी पूनियोंसे अच्छी पूनियां कोनी वना सकता है। तुम्हारी पूनियों मिलनेके वाद दूसरी पूनियोंसे कातना मुश्किल हो सकता है। जैसी पूनियां हैं वैसे निक्ष कर लो, कातना भी वैसा ही करो, सभीमें पहला नम्बर रखो, यह मेरी निच्छा और नाशा है।

कराचीसे कल पत्र क्षा गया। नारणदास^र की गैरहाजिरीसे काम अव्यवस्थित हो गया है। अिसलिये वे अक महीना मांगते हैं।

१. श्री मगनलाल गांघीकी लड़की।

२. श्री नारणदास खुशालदास गांघी। वापूजीके भतीजे। अस ससय आश्रमके व्यवस्थापक।

मैंने लिसा है कि यदि अुन्हें तुम्हारी हाजिरीकी जरूरत ही हो तो मले ही अक महीना ले। शरमके कारण अयवा तुम्हे वहा सीचनेके लिओ अर्थान् हम पर कीश्री अपकार करनेके सानिर वे प्रयत्न करते हो तो विल्युल न करनेको मैंने लिख दिया है। और तारसे जवाब मागा है। जहा लास जरूरत हो बही जाना है। अस बीच सोची हुओ चीजोको प्रका करनी रहो।

बापूके आशीर्वाद

६८

नदोदुर्गे, २१--५--'२७

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला।

'क्दी नहीं हारना भावे साडी जान जाने' यह गीत तो सुना है न शिक्षालि भे भले ही हमारी जान भी चली जान, तो भी क्या शिक्ताने और अक्षरोंके मामलेमें क्या हार मानी जा सकती है? सावधान करने को मैं अंक चौकीदार तो बैठा ही हूं। बूद बूद करके सरोवर भरता है और ककर ककर करके पाल वंधती है! अध्यमके आगे कुछ भी असमन नहीं! निराश न होना, नियमपूर्वक कातनेसे गित जरूर बढ़ेगी, और नियमपूर्वक किन्तु साफ और पूरे अक्षर लिखनेकी आदत डालनेसे अक्षर मी जरूर सुधरेगे। मेरे पास असे बहुतसे अदाहरण है कि जिनके अक्षर मी जरूर सुधरेगे। मेरे पास असे बहुतसे अदाहरण है कि जिनके अक्षर बहुत खराव थे वे अम्याससे अच्छे हो गये। कोठारके कामका भार लेकर तुमने बहुत अच्छा किया। अब असे हरिगज न छोडना और अच्छी तरह पूरा करना। हिमाब लिखना मले ही न पड़े, परन्तु हिसावके सिद्धान्त जान लेना। और कोठारके सिलसिलेमें दो घटे कातनेका समय न मिले तो मले ही कम हो जाय, परन्तु जितना समय मिले अतने समयमें स्वस्थ चितसे कातना। अधीरतासे लम्बे समय तक कातनेकी

अपेक्षा अकाग्र चित्तसे घीरजके साथ थोड़े समय कातनेसे कस वढ़ेगा और गति वढ़ेगी और सब तरहसे अच्छा सूत निकलेगा। गंगादेवीके वारेमें मुझे खबर देती ही रहता।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल, सत्याग्रह आश्रम, सावरमती

६९

१९२७ मौनवार

चि॰ मर्णि,

तुम्हारा कार्ड मिल गया था। जो पत्र तुम लिखनेवाली थीं वह नहीं मिला। मातर् में किस काममें लग गसी हो और कौन कौन, यह लिखना। कुछ भी सेवा करते हुने ज्ञान्ति न खोना।

काका (विट्ठलभाओं) को मैंने लिखा था कि जब आप अपनी कुरसी पर बैठकर तकली चलायेंगे तब मणिवहन आयेगी। असके अत्तरमें वे लिखते हैं कि मणिवहन तो पागल है। मैंने लिखा है कि वे पागल हैं, असीलिओ पागलके साथ रहती हैं।

यशोदा के लड़केका नाम क्या रखा है?

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, मातर

१. मातरमें वाढ़-संकट-निवारणके कामके लिओ मैं गशी थी।

२. मेरे भाओ डाह्याभाओकी पत्नी।

मौनवार (१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। गावोका अनुमत्र लिखकर रखर्ना चाहिये जिससे भविष्यमें काम आये। वहीं भी अधीरता न रखी जाय। तिरास न होना। असान्त न होना। मुझे तो तुमसे बहुतसे प्रश्न पूछने हींगे। परन्तु से अभी नही। थिलेगे तब या काम हो जाने पर। मुझे पत्र नियमपूर्वक लिखती रहना। तबीयत हरगिज न विगडने देना।

काका (विट्ठलभात्री) से मिटी होगी। काका सूब काम करनेकी अुम्मीदसे आये हैं। वे सफल हो।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, मातर

१ नाना (माननीय विट्ठलभाओं)। १९२७ के चौमासेमें गुजरातमें अतिवृद्धि हुओ और बहुत नुकसान हुआ। अुस समय गुजरात प्रान्तीय सिमितिकी तरफसे पू० बापूने बाढ-सकट-निवारणकी व्यापक योजना बनाओं थी। विट्ठलमाओं बढ़ी व्यवस्थापिका सभाने अध्यक्ष थे। गुजरातके भतदाता-मडलकी तरफसे वे व्यवस्थापिका सभाने गये थे। जिसलिओं गुजरातकी आफनने समय यह सोचकर कि अुन्हे गुजरानकी मदद करनी चाहिये वे निडयादको मुख्य केन्द्र बनाकर वहा रहे थे और गुजरातमें सब जगह दौरा किया था। अुनके आपहने कारण वाजिससाँय भी गुजरात आये थे। पू० बापूजी अुम समय मैसूरमें नदीदुर्गमें आरामके लिओ गये हुओं थे। बाढ-सकट-निवारणके कामके लिओ वे गुजरातमें आना चाहने थे। परन्तु पू० बापूजी लिखा था यदि और कियी वारणसे नहीं, सो जिस बातकी जान करनेके लिओ ही कि आपकी जितने वर्षों तक दी हुओं तालीमको हम हजम कर सके हैं या नहीं, आप यहां न आजिये।

(सावरमती, १५-४-'२८) रविवार

चि० मणि,

वहां जानेके बाद पत्र तक नहीं, यह ठीक नहीं। वहांका कार्यक्रम बताना। अनुभव लिखना।

सायका पत्र पढ़कर लंका जानेको जी करे तो लिखना। र (राष्ट्रीय) सप्ताह^र कैसे मनाया?

वापूके आशीर्वाद

चि० मंणिवहन पटेल, स्वराज्य आश्रम, वारडोली, सूरत होकर

७२

(सत्याग्रह आश्रम, सावरमती, २१-५-'२८) मौनवार

चि॰ मणि,

चि॰ कांति (पारेख) के नाम लिखे गये पत्रमें शारदावहन⁸ के सम्बन्धमें नुमने जो टिप्पणी लिखी है वह मैंने पढ़ी। जरा खेद हुआ। मैं तो नित्य स्मरण करता हूं। जो कोओ वहांसे आता है असे

१. कोलम्बोके कॉलेजमें खादीका प्रचार करनेके लिखे।

२. ६ अप्रैल १९१९ का दिन रौलट कानूनके विरोधमें सत्याग्रह करनेके लिये नियत हुआ था। अुस दिनसे देशमें दमनका दौरा चला और १३ अप्रैलको जलियांवाला वागमें हत्याकांड हुआ। अुस अेक सप्ताहमें हुओ कैतिहासिक घटनाओंकी यादमें वह सप्ताह राष्ट्रीय सप्ताहके रूपमें मनाया जाता है।

३. श्री शारदावहन कोटक, अक आश्रमवासी।

पूछता हूं। मीरावहनं ने तो बहुत कुछ कहा है। वह सब बना लिखा जा सकता है? परन्तु मैं आशा छोड़ नहीं बैठा हूं। यह मानकर बैठा हूं कि सब ठिकाने आ जायगे। लिखनेका अत्साह आये तब लिखना। वहाने (बारडोलीके लगान-सत्यायहके समयके) तुम्हारे काममें बल्लममात्रीको सतीय है, यह मैंने बम्बर्शमें अनुनके मृहसे ममझा। अनता सतीय हुआ। मेरे लिखे अतना काफी नहीं। मुझे तो गामीयं, शान्ति, सतीय, विवेक, मर्यादा, निश्चय, सूक्ष्म सत्य-परायणता, तीवता, अध्ययन, ध्यान जित्यादि चाहिये। नहीं तो कुमारी और सेविकाको शोमा देनेवाला तुम्हारा जीवन नहीं दनेगा।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहुन पटेल, स्वराज्य आधम, बारडोली, सूरत होकर

ξe

(सत्याग्रह आश्रम, साबरमती, २८-५-'२८)

चि० मणि,

मैंने तुझे मूर्क माना है सो दिना बिचारे नहीं, यह तू सिड कर रही है। मीरावहन जो कहे वह मेरे लिखे कभी वेदवाक्य नहीं हो गया। वह वहन निमल है। ... तू यहा होती तो तुझसे ही कहता।

१ मिस स्लेड। अनुके पिता अग्लैडकी जलसेनाके वहे अधिकारी थे। पूर्व वापूजीकी पुस्तके पडकर अनुसे आकृषित होकर वे भारत आजी और अपने जीवनमें अन्होने भारी परिवर्तन कर डाला। बापूजीने अनुका नाम मीरावहन रखा। जाजकल ह्योकेशकी तरफ गोसेवाका काम कर रही है।

तू नहीं थी अिसलिओ लक्ष्मीदासमाओं से कहा। परन्तु किसी दिन तो मूर्ख न रहकर तू सयानी वनेगी, यह आशा रखता हूं।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, स्वराज्य आश्रम, वारडोली, सुरत होकर

४थ

स्वराज्य आश्रम, वारडोली, शनिवार (४-८-'२८)

चि॰ मणि,

स्वामी (आनंद) तो यहां नहीं हैं। परन्तु तुम्हारा अनके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ा। आनेका हठ करनेकी जरूरत नहीं। सिपाहीका धर्म अपना शरीर ठीक रखना और सरदार कहे सो आनंदित होकर मानना हैं। तवीयत तो जल्दी ही अच्छी हो जायगी, यदि अच्छी बनानेमें मन लगाया जाय।

वापू और महादेव तथा स्वामी पूना में हैं। आज वहांसे चले होंगे। पूनासे तार आना तो चाहिये था, पर नहीं आया। समझौता

१. श्री लक्ष्मीदास आसर। बेक आश्रमवासी। मश्री १९४९ में गांघी-स्मारक-निधिके मंत्री नियुक्त हुझे। दिसम्बर १९५२ में त्यागपत्र दिया। परन्तु फरवरी १९५३ में नये मंत्रीने काम संभाला तब तक अस पद पर बने रहे। बादमें खादी ग्रामोद्योग बोर्डमें। १९५७ में निवृत्त हुझे।

२. सरकारके साथ समझौतेकी बातचीतके लिओ बम्बजीकी अस समयकी कौंसिलके वित्तमंत्री सर सी० वी० महेताके बुलावे पर पूना गये थे।

होगा या नही, यह अभी नहीं कहा जा सक्ता। मुझे लगा करता है कि अब सरकारमें लड़नेकी राक्ति नहीं है। लोकमत असके बहुत विरुद्ध है और अससे बहुत भूले हुओ हैं। आज सरभोण हो आया। आजकल बरसात नहीं है। आज बहुतमें लोग तो सूरत जा रहे हैं। बापूके आसीर्वाद

मणिबहुत पटेल, ठि० वल्लमभाओ वैरिस्टर, खमारा चौकी, अहमदाबाद

७५

आगरा, १८-९-¹२९

चि० मणि,

तेरा पत्र मिल गया। यशोदा आ गओ, यह वडा अच्छा हुआ। अपुसकी तबीयतके समाचार खेदजनक है। परन्तु अब यहा है असिलिओ विकान पर है और सभव है कि देखभालसे अच्छी हो जायगी।

वल्लभमात्री वहा पहुच गये हो तो कहना कि लखनभूमें ता॰ २७ को अनुसे मिलनेकी आशा रखता हु।

भाओ अिन्दुलालको प्लोके बारेमें जाना। वह बहन दु हसे छूट गओ, असा में मानता हू। . . . भाओके बारेमें जरा आश्वयं होता है। परन्तु आजनी हवामें तो यह चीज भरी ही है, तब आश्वयं क्या ने मेरी तवीयत अच्छी रहती है। सभी दूघ, दही, फल पर हैं। बापूके आशीर्वाद

श्री मिणवहन, ठि० श्री वल्लभभाओ पटेल, देरिस्टर, अहमदाबाद, , बी० बी० सी० आश्री० आर०

१ श्री अिन्दुलालकी पत्नीके देहान्तका अहलेख है।

(सत्याग्रह आश्रम, सावरमती) ९--३-'३०

चि० मणि,

तेरे पत्रकी मैं तो रोज वाट देखता था। तेरी याद किये विना अकि दिन भी नहीं गया। परन्तु तुझे मैं लापरवाह लगूं, असे समझता हूं। असि लिओ मेरी दयाजनक स्थिति जिम्मेदार है। मुझे किसीके सामने देखने तकका समय नहीं मिलता। तू कहां है, क्या हो रहा है अत्यादि जानकर संतोष कर लिया करता था।

वापू तो तेरे वारेमें कुछ कह ही नहीं गये। अन्हें कहां पता या? तुझे वहीं रहना है जहां तू शांत और सुखी हो सके। जेलमें तो समय आने पर जरूर जा सकेगी। जिस वारेमें महादेवने लिखा है। आश्रममें तुझे अच्छा लगे जिसे समझता हूं। परन्तु मेरी राय है कि यह ठीक नहीं। फिर भी जिसमें निग्रह काम नहीं देता। जिसलिओ शान्त रहता हूं। मेरी यही जिच्छा है कि तू जहां रहे वहां सुखी रहे।

१- पू० वापूजीके दांडीकूचके मार्गके सिलसिलेमें व्यवस्था वगैराके लिखेगये थे। ७ मार्चकी रासमें सभामें यह हुक्म मिला कि अमुक प्रकारका भाषण न दें। पू० वापूने कहा कि वे अस आज्ञाका अल्लंघन करेंगे। असिल अं तुरंत ही गिरफ्तारी हुआ। फिर मामला चलाकर तीन मासकी सादी कैंद और पांच सौ रुपये जुर्माना अथवा तीन सप्ताहकी अधिक कैंदकी सजा दी गओ। असिल अं कामके या किसी व्यक्तिके वारेमें कोओ सूचना देने या समझानेका अन्हें समय ही नहीं मिला था। अस समय मैं वीमार होनेके कारण अलाजके लिखे वस्वओ गजी हुआ थी।

में मगलवार तक गिरफ्तार होनेकी आजा रखता हूँ। तू वहादुर बनना। अफ्ना दारीर सुधारना।

बापूके बाशीर्वाद

त्री मणिबह्न,
ठि॰ हाह्यामात्री वल्लममात्री पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेस स्ट्रीट,
वम्बजी-४

७७

(१९३०) भृहवार

चि॰ मणि,

तेरे दो पत्र मिले हैं। चलती रेलमें लिस रहा हूं। तुझसे हो सी दृढतासे कर गुजरता। सू अपने दूसरे पत्रमें लिसती है यह प्रमा अपियत हो तो सू विलापारला अपना वर्षा पहुच जाता। मेरे पास या जायगी तो अधिक समझाअूगा और तुझे शान्ति भी होगी। मगलवार या बुधवारको आता। जिस बीच सू वहाके अधिक समावार भी दे सकेगी। धोडी बहतांसे भी जो हो सो करता।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल नडियाद

(१९३०)

चि॰ मणि,

तेरा पत्र मिला। कल अन्तमें तेरे विषयमें पत्र लिखना रह ही गया। अब तो तू जायगी ही। विसके साथ पत्र भेज तो रहा हूं, यद्यपि असकी कोओ जरूरत नहीं है।

देखना, मेरी, वापूकी और अपनी लाज रखना। अपनेको शोभित करना। गीता और गुजराती पढ़ने और समझनेका प्रयत्न करना। मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना।

खेड़ामें नमकके गड्ढ़ोंमें जहर डालनेकी वात सुनी थी। असकी जांच करना और मुझे लिखना।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, नड़ियाद

७९

१९-५-1३०

चि॰ मणि,

अीश्वर तेरी रक्षा करेगा। रोज तुझे याद करता हूं। अव तू अुदास नहीं रहती होगी।

वापुके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, नड़ियाद

१. मैं सूरत जिलेमें शरावकी दुकानों पर पिकेटिंगका काम करती थी। लुस काममें लगी थी तब खेड़ा जिला सिमितिने खेड़ा जिलेमें लिस कामके लिओ मेरी मांग की थी। लिसलिओ वहां जानेके वारेमें अुल्लेख है।

य० म०**'** १४-७-^{'३०}

चि॰ मणि (पटेल),

बाह । सच्चे बापू आ गर्ये तो नक्ली बापूको भूल गर्आ क्या? और अब तो ब्याख्यान देनेंबाकी हो गत्री, फिर क्या पूछना? तेरी तबीयत बारीरिक या मानसिक कैंगी है? मेरे पत्र तो मिल गर्ये न?

डाह्याभात्री भैंगे हैं? यशोदाना अब नया हाल है? विलकुल

अच्छी हो गओ ववा?

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन पटेल, डॉ॰ कानूगाचा वगला, बेलिमब्रिज, अहमदाबाद

१ यरवडा मदिर। यरवडा जेलसे लिखे गर्मे पत्र पू० बापूजी आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गाधीके नाम भेजते थे। और वे मवको पत्र पहुचाते थे।

२ पू॰ बापू तीन मास और तीन सप्ताहकी पूरी सजा भुगतकर ता॰ २६ जूनको छूटे थे।

य० मं० २८-७-'३०

चि॰ मणि (पटेल),

तेरी प्रसादी कओ सप्ताहमें मिली। तू काममें है, अच्छा कर रही है और तुझे वांछित कार्य मिल गया, यह तो जानता हूं। फिर भी तेरे पत्र पाना चाहता हूं।

खूव जिओ, खूव सेवा करो।

वापुके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल, श्रीराम मैन्शन, सैण्डहर्स्ट रोड, वम्बअी

८२

य० मं० १८-८-'३०

चि॰ मणि (पटेल),

तेरा पत्र मिला। वापू मेरे साथ चार पांच दिन रहकर गये। विते समाचार मिले। औश्वर तेरा भला ही करेगा। मुझे लिखती रहना। डाह्याभाओं से लिखनेको कहना।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, श्रीराम निवास, पारेख स्ट्रीट, सैण्डहर्स्ट रोड, वम्बओ

१. अस समय पू० वापूजी तथा पू० वापू दोनों यरवडा जेलमें थे। परन्तु दोनोंको अलग अलग रखा जाता था। सरकारके साथ समझौता करानेके लिओ सर तेजवहादुर सप्नू तथा श्री जयकरने वातचीत शुरू की थी। अस सिलसिलेमें परामर्श करनेके लिओ कांग्रेस कार्यसमितिके कुछ सदस्योंको यरवडा जेलमें अकत्र रखा गया था।

य॰ म॰ २२-८-¹३•

वि॰ मणि (पटेल),

अपना अनुभव तूने ठीक ठीक बताया है। तू बापूसे मिल गशी, यह भी जाना। बापू तां नहीं मिले। मुझे बरावर लिखती रहना। बम्बर्शीमें हो तब पैरीनबहन अोर लीलावती से मिलना।

मुझे पत्र लिखती रहना।

वापूके वाशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, श्रीराम निवास, पारेख स्ट्रीट, सँण्डह्स्ट्रं रोड, वम्बजी

१ स्व॰ दादामाओं नवरोजीकी पौत्री।

२ श्री क्न्ह्रैयालाल मुद्दीकी पत्नी। आजक्ल राज्यसभाकी सदस्य।

य० मं०, ७-९-'३०

चि॰ मणि (पटेल),

तेरा पत्र मिला। वापू तथा जयरामदास दो दिन और साथ रहकर चले गये। अितनेमें तेरा पत्र मिला। अितलिओ वापूने भी पड़ा। वापूके नामका मैंने पड़ा। मां सम्बंधी वर्णन हृदयद्रावक है। अधिकतर प्राचीन माताओं असी ही थीं। अितलिओ तूने जो वर्णन किया है, अस पर आश्चर्य नहीं होता। फिर भी यह प्रेम, असमें मोह होने पर भी, अितना अज्ज्वल है कि नित नया जैसा ही लगता है। पत्र किखनेके नियमका भंग न करना। यात्रामें (जेलमें) पहुंच जाय तो दूसरी वात है।

वापूके आशीर्वाद

(आर्थर रोड जैलमें)

- वापूजीको आश्रमवासियोंको पत्र लिखनेकी छूट थी। सिसलिओ ये पत्र वापूजी आश्रममें भेजते थे और वहांसे जिस जिसके पत्र होते सुन्हें भेजनेकी व्यवस्था होती थी।
- २. श्री जयरामदास दौलतराम। सिंघके पू० वापूजीके मुख्य सायी। १९३० में कराचीमें अक सभा पर पुलिसने गोली चलाओं थी, असमें अक गोली जिनके पेटसे पार हो गओं थी। १९३१ से १९३४ तक कांग्रेसके मंत्री। १९४६ में अन्तरिम सरकारके समय विहारके गवर्नर। १९४७ से १९५० तक केन्द्रीय सरकारमें खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५० से १९५६ तक आसामके गवर्नर। आजकल 'दि कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांघी' के मुख्य संपादक।
- ३. समझौतेकी जो वातचीत चल रही थी अुसके सिलसिलेमें ` फिर अिन्हें अिकट्टा किया गया था।

यरवडा मदिर, १४-९-'३०

चि॰ मणि (पटेल),

तू आशा रखती है, अिसलिओ यह लिख रहा हू। तुझे कैसे मिलेगा, यह तो दैव हो जाने। तेरा पत्र बापूको पढनेके लिओ जाने दिया गया था। तुझे लिखनेकी छूट मिले तो लिखना। अब तो जबरदस्तीकी शान्ति' है। अुसका पूरा अपयोग करना। जिसे भी मैं सेवा मानता हू। स्वास्थ्यको सभालना। कार्यक्रम ठीक बनाना। खाने-पीनेको क्या मिलता है, जित्यादि बार्ने लिखना।

बापूके आशीर्वाद

乙長

य० मॅ० २७-९-¹३०

चि॰ मणि (पटेल),

तूने मुझे हर हक्ते पत्र लिखनेको तो बहा है परन्तु वह मिलेगा ' क्या ' तू लिल सकेगी यान हो, अस बारेमें भी शका है। देखना द्वारी को सभालना। प्रत्येक क्षणका संदुषयोग करना और हिमाब रखना। वापुके आरीर्वाद

(आयंर रोड जेलमें)

८७

म० म० .१४-१२-¹३०

चि॰ मणि,

अब तू बाहर निवल गओ तो तेरे स्यौरेवार पत्रकी आशा रसना हू। अपने अनुभव लिसना। तेरा स्वास्थ्य वैसा है? बापके आसीर्वाद

(यम्बभी)

१ आयंर रोड जेलमें।

य० मं० २१-१२-'३०

चि॰ मणि (पटेल),

तू लिखे या न लिखे, मैं तो लिखता रहूं न ? अपना वचन भूल गओ न ? मुझे तू पत्र लिखती ही रहनेवाली थी। जानें वहींसे सवेरा, भूलें वहींसे फिर गिनें। अब वचनका मूल्य समझ। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य कैसा रहा ? क्या खाती थी ?

वापूके आशीर्वाद

(वम्बओ)

८९

य० मं० २७-१२-'३०

चि॰ मणि (पटेल),

तेरा पत्र अन्तर्में मिला जरूर। कहा जा सकता है कि अक हद तक बदला मिल गया। अपना शरीर तो अच्छा कर ही डालना। ंतेरे पास सेवा अतनी पड़ी थी कि पड़नेकी जरूरत नहीं थी। तूने

१. सावरमती जेलमें खुराकके सम्बन्धमें और दूसरे कैदियोंके सम्बन्धमें लिखनेकी छूट नहीं मिलती थी। अिसलिओ जेलसे छूटनेके बाद मैंने सावरमती जेलके सब हालचालका व्यौरेवार पत्र पू० वापूजीको लिखा था।

२. सावरमती जेलमें कुछ वयोवृद्ध वहमें आतीं, कुछ वच्चोंवाली और कुछ छोटी लड़िकयों जैसी भी आतीं। अनमें गांवसे आवेवाली वहनोंकी संख्या वड़ी थी। अन सबकी छोटी वड़ी सुविधाओं के वारेमें मुझसे हो सकती वह सेवा करनेका प्रयत्न मैं करती थी।

लडाओं तो अच्छी लड़ी मालूम होती है। और वह अचित थी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। अेक ही दिन दस्त बन्द होक्द सस्त मरोडा आया था। असिलओ खाया हुआ निकाल दिया और दूमरे दिन केवल सागका पानी ही लिया। अससे कब्ज भिट गया। अस निभित्तसे दूध जो छूटा तो छूटा ही है। यहा मिलनेवाली ज्वार या बाजरेकी अेक रोटी दिनमें लेता हू। और साग तथा थोडे वादाम। मेरी चिन्ताका जरा भी कारण नहीं। बापूके आशीवदि

(साबरमती जेलमें)

90

य॰ म॰ ३—१~'३१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। वापूसे मिलना हो तो कहना कि मुझे अनसे ओप्पां होती है, क्योंकि वे तो वाहर भी हैं और आराम-घर में भी। रोज डॉक्टरके यहां जानेना आनन्द । असा आनन्द तो केवल बाहर रहकर भी कभी नहीं पाया। परन्तु जिन सब बातोका बदला जितना सो मिलना ही चाहिये कि हमेशाके लिजे दात और नाककी तकलीफ मिट जाय।

१ सावरमती जेलमें चूडिया पहनने देनेके बारेमें हमें छडाओं छेडनी पडी थी।

२ जेलमें।

रे अस समय पू० वापू आर्थर रोड जेलमें ये और दातके जिलाजके लिओ अन्हे डाँ० डी॰ अम० देमाओके दवादानेमें, फीटेंमें खादी-ग्राम- अद्योग भवन — अस समयके अनुसार वाजिट वे लेडलाकी मजिल — पर रोज अक महीने तक पुलिसके पहरेमें ले जाया गया था। वहा बम्बऔके कुछ कार्यकर्ता अनसे मिल लेते और लडाओके बारेमें हिदायतें ले जाते थे। में और डाह्यामाओ भी रोज मिलने जाते थे।

जिस वार नी मेरे ही पड़ोती होंगे न? राजेन्द्रवावू हों तो कहना कि पत्र लिखें। अुनसे पूछना कि मेरा अुत्तर मिल गया या नहीं।

वैसे तू सब सबरें देनेवाली है, शिसलिओ बाहर है तब तक देती रहना।

डाह्याभावीने लिखनेकी सौगन्य सा ली दीखती है। वापूके आशीर्वाद (वम्बजी)

99

य० मं० **१०-१-'**३१

चि॰ मणि,

तूने लिखा है वैसा ही मैंने हरिलाल के वारेमें सोचा था। मेरा तो खयाल है कि जो कुछ हुआ असका हाल प्रकाशित होता तो असमें कोओ नुकसान नहीं था। हरिलाल जाग्रत होता। परन्तु जाग्रत

- डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद। विहारके मुख्य नेता। १९१७ में हुझे चम्पारनके नील सत्याग्रहके समयसे वापूजीके साय हुझे। १९३४, १९३९ और १९४७ में कांग्रेसके अध्यक। १९४७ में संविधान-सभाके अध्यक। अस समय भारतके राष्ट्रपति।
- २. पू० बापूजीके सबसे बड़े पुत्र स्व० हरिलाल गांघीने पू० बापू लार्थर रोड जेलमें थे तब अनसे मुलाकात मांगी थी, परन्तु हरिलाल पिये हुओ थे और सब-कुछ सरकारका रचा हुआ प्रतीत हुआ, बिसलिओ पू० बापूने मुलाकात करनेसे बिनकार कर दिया था। फिर भी लुसी दिनके 'अीविर्निग न्यूज' में अनकी पू० बापूके साथ हुआ मुलाकातका वर्णन छपा और असमें पू० बापूके मुंहमें लड़ाओं प्रतिकूल कुछ शब्द रखे गये। जिसका पता चलने पर पू० बापूने बापत्ति की थी और दूसरे दिन अखबारमें सुधार आ गया था।

होता या न होता, हमारा मार्ग सीघा है। सब स्वजन हैं। अयवा सब परजन हैं।

तेरे अक्षर माफी मुपर रहे हैं। अब नहा बमनेना त्रिरादी हैं? आपके आधीर्वाद

(बम्बओ)

९२

य० म० १५—१—'३१

चि॰ मणि.

सरदार-सम्बन्धी तेरा पत्र मिला। हरिलालको तो हम जानते ही है। वापूको अब दानोंके लिखे कब तक ठहरना पढ़ेगा? मच्छरीका कष्ट होने पर भी दानोका निवटारा हो जाय तो यह वाछनीय ही है। मैं मानता हू कि अनके डॉक्टरके पास जानेकी जरूरत जब तक है सब तक तो तू वही रहेगी। हम दोनों मबेमें हैं।

बापूरे आशीर्थाद

मुमित्रा^र नैमी है [?] यसीदा अब चल्ती फिरती है [?] विद्वलमाओं नया वहीं रहेंगे ?

(वम्बजी)

र नाना नालेलनर अस समय पू॰ वापूनीके साथ ग्ररवडा
 जैलमें थे।

२ स्व० ढाँक्टर कानूगाकी पुत्री।

य० मं० २२-१-13१

चि० मणि,

्तेरा सुन्दर लम्बा पत्र मिल गया। असके जवावमें मुझे थोड़े ही लम्बा लिखना है? मेरी यात्रा तो अहातेके केक सिरेसे दूसरे सिरे तक सीमित है। न कोओ गार्ड है और न कोओ दूसरा, जिसके साथ विवाद हो। मेरी ट्रेनकी छत आकादा है। असके अगणित तारोंका वर्णन करना चाहूं तो करना नहीं आता। और जो तारे मैं देखता हूं वहीं तू देखती है। विसलिओ मेरे पास लिखनेको जुछ नहीं है। मैं भी समझता हूं कि तू और थोड़े दिनकी मेहमान है। हम आराम-घरमें ही शोभा देते हैं।

वापूके आशीर्वाद

(अहमदावाद)

88

मौनवार (१६-२-'३१)

चि॰ मणि,

तेरे पत्र तो मिल गये। परन्तु मुझे लिखनेका समय कहां मिलता है? क्षिसिलिओ मेरे पत्र आयें या न आयें तू तो लिखती ही रहना। आज हम दिल्ली जा रहे हैं। डॉ॰ अन्सारी, दरियागंजका पता है। सरदार आज बम्बभी जा रहे हैं।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन,
ठि० डाह्याभाकी वल्लभभाकी पटेल,
राम निवास,
मायव आश्रमके पास,
वम्बकी

१. क्योंकि मैं फिर गिरफ्तार होनेवाली थी।

चि० मणि.

तेरे पत्र मिलते रहते हैं। मेरे जवाद न मिलनेसे भूद न जाना। मुझे आजवल पत्र लिखनेका समय मिलता ही नही। आज घोडासा समय चलती हुजी परिषद में मिल गया, असका अपयोग कर रहा हूं।

यह पदकर प्रसप्तना हुआ कि डाह्यामाओका स्वास्थ्य अच्छा ही

गया। अन्हें और यद्योदाको मेरा आशीर्वाद महना।

लक्ष्मीदास (आसर) से और मजुकेशा से पत्र लिखनेको कहना। मैं मानता ह कि कमसे कम क्षेक हाक तो मुझे मिलेगी।

वापुके आशीर्वाद

श्री मणिवहत पटेल, श्रीराम मैन्दान. सैण्डहर्स्ट रोड, बम्बओ

98

य० भ० २६-३- ३२

चि॰ मणि.

आज मुझे सायी कैदियोंको लिखनेकी छूट मिली है, अिसलिओ लिख रहा हू। मुझे यदि लिखनेकी छूट है तो जिसे मैं लिखू अुमे अुत्तर देनेकी छूट मिलनी चाहिये। मुझे तुरन्त खुत्तर लिखना। लीलावती,

३ स्व० लीलावनीवहन देसाओ । डाँ० हरिमाओ देसाओकी पत्नी --- नन्दूबहनकी माभी । १९५१ से १९५६ तक बम्बजीकी राज्य-सभाकी सदस्य।

१ लदनकी गोलमेज परिषदमें।

२ थी क्शिरेलाल मशस्वालाकी भतीजी डॉ॰ मजुबह्त । बारडोली स्वराज्य बाधममें १९२९ से डॉक्टरके रूपमें अुस प्रदेशके गरीवोकी सेवा-स्थूपा कर रही है।

नन्दूबहन, मृदु आदि दूसरी बहनोंको आज नहीं लिखता। अनके समाचार भी देना। और कौन हैं ?

महादेव यहां आ गये हैं। हम तीनों मजेमें हैं।

वापूके आशीर्वाद

(अपने हायसे) श्रीमती मणिवहन पटेल, प्रिजनर, प्रिजन, बेलगांव

९७

य॰ मं॰ २२-४-'३२

चि० मणि,

जैसे लोग मौसममें वरसातकी राह देखते रहते हैं, वैसे ही हम लोग वहांके पत्रोंकी राह देख रहे थे। अनमें से अक-दो मिले। ××× छूटनेके बाद यहां होकर ही जानेका विचार रखना। सोमवार हो तो मंगलवार तक ठहरकर दोपहरको बारहसे या साढ़े ग्यारहसे अक वजे तक मिलनेका वक्त सबसे अच्छा होता है। अस समय आयेगी तो हम दो तो मिल ही सकेंगे। ××× हम तीनोंकी तवीयत अच्छी है। ×××

१. अस समय मैं वेलगांव जेलमें सी क्लासमें यी। हमें तीन महीनेमें अक पत्र लिखने और अक मुलाकात करनेकी छूट थी। मुलाकात न करें तो असके बजाय पत्र लिख सकते थे। ता० १५-५-'३२ को मैं जेलसे छुटनेवाली थी।

२. तीन चौकड़ीकी निशानी जेल-अधिकारियों द्वारा पत्रके काटे हुअ भाग बतानेके लिखे लगायी गयी है।

३. पू० वापूजी तथा पू० वापू।

४. तीसरे महादेवभाकी।

मैं देखता हू कि तूने अपने अक्षर सुधारनेका प्रयत्न अच्छी तरह किया है। यह बताता है कि प्रयत्नसे अक्षर अच्छे हो सकेंगे। और यह नियम सब बातो पर लागू होता है।

गीता कठस्य करनेका अयं यह है कि अयंके साथ आनी चाहिये और अच्चारण शुद्ध होना चाहिये। शिक्षिका कौन है? शायद यह जवाब तो तू मिलते समय ही देगी, अथवा आखिरी खत लिखने दें तो पत्र भी लिख डालना। तन्दुरस्ती अच्छी है या नहीं, यह तो हम लोग देखकर प्रमाणपत्र दें तब सही। ×××

वावा और यशोदा थेक बार यहा आ गये। वाबा तो कुर्मी पर चढ़ पैठा था। और जितना ज्यादा मौजर्मे आ गया था कि अपने नमें जूने भूल गया। असके सौभाग्यसे या डाह्यामाओं के सौभाग्यसे हमर्मे से किसीने देख लिये और तुरन्त भेज दिये। यशोदाकी तवीयत बहुत अच्छी नहीं कह सकते। असने कुछ वर्षोंने अच्छा स्वास्थ्य रखा ही कहा है? डाह्यामाओं हर सन्ताह आते हैं और हम दोनो अनसे मिल सकते हैं।

जीवनराम'का काम अभी चलता रहता है। देवदास गोरखपुर (जेलमें) है। असका पत्र अभी आया है। वह अकेला है, मगर आराममें है। पठन अच्छी तरह कर रहा है। लक्ष्मीको अब बेचारी हरिंगज नहीं कहा जा सकता। पापा (राजाजोकी बड़ी लड़की) की देखमाल जहर करती है। परन्तु पापा अब अच्छी हो गर्जी कही जा सकती है। राजाजी मनेमें हैं। अनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। अनके साथी भी

१. आचार्य जीवतराम कृपालानी । वे विहारके मुजपफपुर कॉलजर्में अध्यापक ये । और चम्पारनके मामलेमें बापूजी विहार गये सव कॉलेज छोडकर पू० बापूजीके साथ हो गये थे । गुजरात विद्यापीठके दूसरे आचार्य । बारह साल तक काग्रेम महासमितिके मत्री रहे । अमने बाद अध्यक्ष हुं अं । जुसके बाद काग्रेमसे अलग हो गये । आजकल प्रजा सोशलिस्ट दलके अध्यक्ष और लोकसभाके सदस्य है । यह पत्र लिखा गया जुस समय वे पकडे नहीं गये थे और बाहर काम कर रहे थे ।

अनुके काफी साथ हैं। अन्दु मुझसे नहीं मिली। अब कहां है, यह पता नहीं। बहुत करके पूनामें ही है। कमला (नेहरू) प्रयागमें है। कमलापित (जवाहरलालजी) की प्लुरसी तो कुछ शान्त हुआ मालूम होती है। परन्तु थोड़ा बुझार रहता है।

चरखेके वारेमें अहमदाबाद लिखूंगा। परन्तु बढ़िया चरखा चाहिये तो यहांसे भी दे सकुंगा। xxx

, xxx वाको तो पहला पत्र मैने आज ही लिखा है। परन्तु असके पत्र मिलते रहते हैं। वह और दूसरी वहनें (यरवडा जेलमें) मजेमें हैं। मीठूबहन अपनी कक्षा चलाती है।

चरमा टूट गया हो तो वहां भी वदलवाया जा सकता है। परन्तु अव निकलनेका समय नजदीक आ गया है। अिसलिओ बिस सुज्ञावमें वहुत सार नहीं है।

तेरा पत्र बाज ही यहां आया और आज ही मिला है। और यह अत्तर भी आज ही लिखा जा रहा है। कल यहांसे निकलेगा, असी जाशा रखता हूं। वहां कव मिलेगा यह हम सबके भाग्य पर आधार रखता है।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, प्रिजनर, प्रिजन, बेलगांव

१. पंडित जवाहरलाल नेहरूकी लड़की अिन्दिरा गांधी अस समय पूनामें पढती थीं।

२. यह पत्र पू० वापूजीने पू० वापूके हायसे लिखवाया था।

९८ (धार)

मणिवहन पटेल मॅंट्रल जेल, बेलगाव

पूना, १–५–'३२

यसोदा कल गुजर गजी। यह मानना चाहिये कि वह जीवित मृत्युमे छूट गजी।

39

यरवडा मदिर, २-७-1३२

चि॰ मणि,

तेरा पत्र मिला। मेरा सन्देश मिला होगा। सूने पूनियां भेजनेना विचार किया बिससे भेजनेना पुण्य तो पा चुकी। भेजी नहीं यह अच्छा ही किया। अब यहा सराव पूनिया रही ही नहीं हैं। जो पड़ी हैं वे बहुत हैं। सब महादेवकी ही बनाजी हुआ हैं। लगभग दो मानमें जिक्ट्री होती रही है। महादेव ज्यादातर छक्क इदासकी भेजी हुआ पूनिया काममें लेते हैं, क्योंकि खुनकी हुआ बुत्तम है और पूनिया बड़ी

१ यह तार पहले तो मुझे दिया नहीं गया था। परन्तु जैलके डॉक्टरने ३ तारीखकी सुबह मुझे खबर दी कि आपका अक तार आया है और असमें किमीके गुजर जानेके समाचार हैं। असी दिन दोपहरको अक बहनकी मुलाकातका प्रसग आया और असमें यसोदाके गुजर जानेका मुझे पता लगा। सामको मैंने मेट्रनसे झगडा किया कि मुझे पता चला है कि मेरा तार आया है और वह तार जब तक मुझे नही दिया जायगा तब तक मैं कोठरीमें बन्द नहीं होअूगी। बहुत झगडा होनेके बाद अन्तमें मुझे तार दिया गया। सावधानीसे बनाओ हुनी हैं। मैं मगन चरखे पर महादेव जैसा बारीक सूत कभी नहीं कात सकता। यज्ञका सूत अपने िल हे हरिगज काममें नहीं लेना चाहिये, यह मेरी हमेशासे राय रही है और वह ठीक ही है। यदि यज्ञके निमित्त कातनेवाला लापरवाह रहे, तो असकी परीक्षा हो गजी और वह फेल हो गया। यज्ञका सूत सबसे ज्यादा सावधानीसे कातना चाहिये। जितना सूत काते अतुना देकर खुद जो भलाबुरा सूत मिले वही काममें ले तो अतुन्तम है। परन्तु असा करनेका साहस न हो तो अन्तमें यज्ञके लिखे बेक घंटा या आध घंटा रखकर कमसे कम १६० तार तो कृष्णार्पण कर ही देना चाहिये।

तू सामूहिक प्रार्थना पसन्द करती है, यह विल्कुल समझमें आता है। क्योंकि तेरी प्रार्थना ही सामूहिकसे शुरू हुओ। परन्तु अकेले प्रार्थना जरूर करनी चाहिये। भले ही वह अके ही मिनटके लिओ हो। अन्तमें तो हृदयमें यही रटन चलती रहनी चाहिये। और यह अकेले प्रार्थना करनेकी आदत न पड़े तो हो ही नहीं सकता। अकेले प्रार्थना तो सोते, नहाते, खाते, कोशी भी किया करते हुओ हो सकती है। असिलओ असका वोझा तो होता ही नहीं। अलटे अससे मन हल्का हल्का हो जाता है — होना चाहिये। असा अनुभव न हो तो अस प्रार्थनाको कृतिम समझना चाहिये।

डाह्यामाओकी समस्या जरा किन है। परन्तु वे वड़े समझदार हैं। असिल अपने आप स्थित हो जायंगे। असमें किसीको अनका पय-प्रदर्शन नहीं करना है। यदि फिर शादी करनेकी अच्छा होगी तो अन्हें को और रोकनेवाला नहीं है। और शादी नहीं करनी हो तो अन्हें को लिल लिल नहीं है। दूसरे लोग तो तंग करेंगे हो। अनसे डाह्यामाओ जरूर निवट लेंगे। मेरा मिलना वन्द हो गया है, यह असे प्रसंग आते हैं तव खटकता है। परन्तु अस तरह सहन करनेमें ही हमारा धर्म है। वायें हायकी कोहनी अमुक रीतिसे काममें लेनेसे दुखती है। आजकल लगभग अक माससे कपड़े नौकर धोता है। मेरे वरतन

जेलके ही है। चमकते हुओं तो नहीं रहते, पर साफ रहते हैं। तू पारीरको समाठना। पत्र लिखनी रहना।

बापुके आशीर्वाः

थी मणिवहन पटेल, ठि॰ डॉक्टर बलवन्तराय कानुगा **बेलिस**बिज अहमदाबाद

200

यः मः २६-८-'३२

चि० मणि.

तेरे कैंद होनेके बाद किसीके नाम भी कोओ पत्र नहीं आया त्रिसना वया नारण है? कैंद होनेके बाद सुरन्त पत्र लिखनेका अधिकार तो है ही न ? अभी तक न लिया हो तो अब लिखना। हो सके तो जिन वार शरीर सुधार छेना। सुराक जो आवस्यक हो वह छेने मा मागर्नमें सकोच न रखा। मेरी मलाह है कि अपनी पढाओका कम तैयार करने वानायदा कच्चे विषयोको पक्का कर टेना। गुजराती व्याकरण पक्की कर ले। और भाषा पर अधिक काबूपा है तो अच्छा। अग्रेनी जानती ही है, अिसलिओ असे भी पक्का किया जा सकता है। जिममें नमलादेत्री (चट्टोपाच्याय) की सदद ली जा सक्ती है। सस्वृतमें लीलावतीबहन (मुन्दी) मदद कर सकेगी, साथ ही भराठी भी विधिक अच्छी कर ली जाय तो ठीक। योडा स्त्रियो सबद्यी सास ज्ञान भी प्राप्त कर लेनेकी आवश्यकता है ही । परन्तु यह तो मेरा मुझाव हुआ। बिसमें मे तुझे कुछ पसन्द न हो तो जो पसन्द हो वह चुन लेगा। अियमें से बुछ भी पसन्द न हो तो कुछ नया चुन लेना। मेरा हेतु तो जितना ही है कि यह जो अमृत्य अवसर मिला है असका पूरा सदुपयोग ज्ञानवृद्धिके लिओ कर लेना। कातनेकी छूट ही तो कातना। प्रार्थना और डायरीको तो मुलाया ही नही जा सकता।

हम तीनों आनन्दमें हैं। वापूकी संस्कृतकी पड़ाओं अतिनी तेजीसे हो रही है कि तू देखें तो आश्चर्य करे। पुस्तक हायसे छूटती ही नहीं। नौजवान विद्यार्थीमें भी अससे अधिक लगन नहीं हो सकती। कातते हैं परन्तु ४० नम्बर तकका। और लिफाफे तो वनाते ही हैं। महादेवके ८० नम्बर चल ही रहे हैं। असके सिवा फ्रेंच और अर्दू है। मेरी धीमी गाड़ी मगन चरखे पर चलती है। पढ़ाओं तो लूली-लंगड़ी ही है। पत्र बहुत वक्त सा जाते हैं। ×××

किसी समय मुझे पत्र लिखनेकी गुंजालिश हो और लिच्छा हो जाय तो लिखना। हम सबकी तरफसे आशीर्वाद।

वापू १

मणिवहन पटेल, प्रिजनर, प्रिजन, वेलगांव

१०१

(य० मं०) २१-९-'३२

चि॰ मणि,

तुझे आश्वासनकी जरूरत होगी क्या? खवरदार, यदि बेक भी आंसू गिराया तो। जो सौभाग्य मुझे मिला है वह विरलोंको ही कभी कभी मिलता है। बिससे खुश हो सकते हैं, रो तो सकते ही नहीं। तेरे और तेरे जैसोंके लिखे अपवास नहीं है। परन्तु पूर्ण तन्मयताके साथ कर्तव्य-

१. मैं ता० ११-८-'३२ को अहमदाबादसे गिरफ्तार हुआी थी। मुझे १५ मासकी सजा हुआी थी। अुसके बाद वेलगांव जेलके पते पर यह पत्र लिखा गया था।

२. पू० वापूजीने ब्रिटिश मंत्रि-मंडलके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध ता० २०-९-'३२ से अपवास शुरू किया था, जो ता० २६-९-'३२ को शामको छोड़ा था। अस मौके पर लिखवाया हुआ पत्र। यह पत्र वेलगांव जेलमें मुझे ता० २४-९-'३२ को मिला।

पालन है। मुझे जब लिसना हो तब लिसनेकी छूट मैंने पाली है। जिसलिओ मुझे लिखना । यह पत्र तुझे तुरन्त मिलना चाहिये । दूसरी बहनोको आशीर्वाद ।

वापूके आशीर्वाद

मणिबहुन पटेल, (प्रिजनर, संद्रुल प्रिजन) बेलगाव

१०२

य० म० ८-१०-²३२

चि॰ मणि,

तेरा लम्बा पत्र मिल गया था। मेरे लिओ तो लम्बा नही था।
बुपवास तो अब गओ बीती बात हो गओ। वह औरवर-दत्त वस्तु थी,
जिसलिओ सुरोमित हो गओ। अब दारीर फिर बढी तेजीसे बन रहा है।
शक्ति लगमग आ गजी है। दूध दो पींड और देरो फल ले रहा
हूँ। फलोमें नारगी, मोसम्बी, अनार अयवा अगूरका रस और दूबी
अयवा टमाटरका रस। ××× बाफी घूम-फिर सकता हूं। बमसे
कम २०० तार कातता हूं। ४५ अकके। पत्र तो काफी लिखता ही हूं।
असिलिओ कोशी चिन्ताका कारण रह ही नहीं गया है। बाको दिनमें
मेरे साथ रहनेकी छूट है। देवदासको मिल जानेकी छूट है। देवदासकी
तवीयन अब ठीक है।

तुझे लानेके सपने आते हैं, अिसमें घोडा-बहुत अपच कारण हो सकता है। असे सपने या तो बहुत भूखे पेट रहनेसे आते हैं या बदहजमीये। अित कारणोंको दूढकर अचित अपाय कर और फिर निश्चिन्त रह। जीवन बनबढ़ हो तो ये कारण समय पाकर नष्ट

१ यह पत्र २४-१२-'३२ को दिया गया था अँसा जेलकी मृहरसे पता चलता है।

हो ही जाते हैं। दीर्घकालके आवरण बेकाबेक मन्द पड़ जायंगे अैसा माननेका कारण नहीं है। वे अपना समय लेते हो हैं। बिसलिबे घवराना नहीं चाहिये। निराश भी नहीं होना चाहिये। प्रयत्नमें शियिल भी नहीं होना चाहिये और परिणामके वारेमें निःशंक और निश्चिन्त रहना चाहिये। यही गीताकी अनासिक्त है।

अपवासका असर अलग अलग होता है, अितमें आश्चर्य नहीं। बुसका आवार शरीरकी वनावट पर और मानसिक तैयारी पर है। अपवासकी जिसे आदत ही न हो वह अकसे भी घवरा जायगा और बुसके अस्य-पंजर ढीले हो जायंगे। जिसे आदत है बुसके लिखे वह खेल हो जाता है। असी तरह जिसके शरीरमें चरवी वगैरा है ही नहीं वह बहुत लम्बा अपवास न करे। बहुत चरवीवाला घीरज रखे तो खूव लम्बा सकता है और शारीरिक दृष्टिसे असका लाम अुठा सकता है।

वापू और महादेव मीज कर रहे हैं। जितना अकान्तवास तो हमने कभी अनुभव किया ही नहीं था। जिससे खूव लाभ हुला है।

तेरा शरीर अच्छा होगा। लीलावती और कमलादेवी ठीक रहती होंगी। और जो वहनें हों बुन्हें आशीर्वाद। लीलावतीसे कहना कि मुंशोंका मुझे सुन्दर पत्र मिला था। किसी समय मुझे लिखनेकी गुंजाअिश हो और वैसी अुमंग आवे तो लिखें।

लिस पत्रके साथ नन्द्वहनका जो पत्र यहां लाया है वह मेज रहा हूं।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिवहन पटेल, प्रिजनर, सेन्ट्रल प्रिजन, वेलगांव

१. श्री कन्हैयालाल मुंज्ञी, वम्बलीके प्रसिद्ध केंडवोकेट। १९३७ से १९३९ तक वम्बली प्रान्तके गृहमंत्री। भारतके स्वतंत्र होनेके बाद १९५० से १९५२ तक भारत सरकारके खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५२ से १९५७ तक बुत्तरप्रदेशके गवर्नर।

१०३

(तार)

पूना, २८-१०-²३२

मणिबह्न पटेल, कैंदी, बैलगाव जेल

आशा रखता हू कि दादीकी मृत्युसे तू विह्वल नही हुआ हीगी। असी मृत्युकी सब जिच्छा करते हैं। बहुत समयसे तेरा पृत्र क्यो नही आया? प्यार।

वापू

१०४

(सार)

पूना ३१-१०-'३र

मणिबहन पटेल, कैदी, बेलगाव जेल

दादीने वुपवारकी दोपहरकी करमसदमें चार घटेकी बीमारीके बाद सातिपूर्वक शरीर छोडा। आसा करता हू कि शुक्रवारको असका विवरण देते हुओ जो पत्र लिखा है वह तुझे दिया गया होगा। हम सब आनन्दमें हैं। प्यार।

दापू

१०५ (तार)

> पूना, १९–११–'३२

मणिवहन, कैदी, वेलगांव जेल

डाह्माभाओको ७ दिनसे वुखार आता है। अब मालूम हुआ है कि टाअिफालिड है। और कोओ खरावी नहीं है। खास नर्से देखभालके लिखे हैं। चिन्ताका कोओ कारण नहीं है। रोजके समाचार भेजनेकी कोशिश करूंगा।

वापू

१०६

यरवडा मंदिर, २०-११-'३२

चि० मणि,

डाह्याभाशीके वारेमें दिया हुआ मेरा तार मिला होगा। नुझको हमेशा खबर देनेकी और नुझे लिखना हो वह लिखनेकी (डाह्याभाशीको या असके वारेमें) लिजाजत मिल ग़श्री है। श्रिसलिओ तू वहांसे रोज लिख सकती है। वह पत्र मैं डाह्याभाशीको पहुंचा दूंगा। यहांसे तो रोज पत्र लिखा ही कलंगा। डॉ॰ मादन का पत्र लाया है। वह श्रिसके साथ भेज रहा हूं। असके बाद आज भी भाशी करमचन्द का पत्र आ गया है। असलिओ कल तकका हाल अच्छा ही माना जायगा। आज १४ दिन पूरे हुओ हैं। अभी बुखार १०० से १०३ के वीच रहता है। लेक बार ९९॥ तक भी गया था। छाती, फेफड़े वगैरा ठीक हैं।

१. वम्बलीके कुशल पारसी डॉक्टर

२. वम्बजीके अक शेयर-दलाल। पूज्य वापूके भक्त शुभेच्छु।

फलोका रस, बारलीका पानी और कभी कभी पतली छाछ अदानी चीजें ले सकता है। सास नर्से रसी गंभी हैं। सब तरहसे पूरी सादधानी रहती है, असलिये चिन्ताका जरा भी कारण नहीं है।

हम सब आनन्दमें हैं।

यापुके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल, प्रिजनर, सेन्ट्रल प्रिजन, बेलगांव

१०७

य० मं० (२२-११-⁷३२)

चि॰ मणि,

तुने तार दिया है। पत्र लिखा है। दोनों मिले होंगे। सू रोज लिखे तो मुने पत्र मिलेगा और यह ढाह्यामाओं को पहुंचा दिया जायगा । आज भी खबर अच्छी ही है। देवदास देखकर आया है। यह बहुता है कि ढाह्यामाओं को देखकर तो कोओ कह ही नहीं सकता कि टाअिफाजिड हुआ है। असी हिम्मत और शक्ति बताता है।

सब बहुनोको आसीर्दाद।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल, प्रिजनर, सेन्ट्रल प्रिजन, बेलगाव

१. डाह्याभात्रीको बम्बक्षीमें टालिफाबिड हुआ या, बिसलिबे यह छूट पूज्य बापूजीने सरकारको लिखकर से सी थी।

यरवडा मंदिर, २५-११-'३२

चि॰ मणि,

तेरा लम्वा पत्र -- तुझे खबर देनेके बाद पहला ही -- आज मिला। तू व्यर्यकी न करने जैसी चिन्ता करती है। तुझे जानना चाहिये कि वापू और तू जेलमें हैं तब बाहर बैठे हुओ लोग जो कुछ करना चाहिये असे करनेसे चूक नहीं सकते। टाअिफाअिडका पता चलते .ही तुरन्त वालचन्द¹ने करमचन्दको कहा कि रात-दिनकी दो नर्से रखो, डॉक्टरोंमें से जिसे रोज वुलाना अनित हो असे वुलाओ; और सारा खर्च खुद ही देनेको कहा। रोज ३०-४० रुपये खर्च होते हैं। वे ही देते हैं। अस्पतालसे ज्यादा अच्छी देखभाल होती है। घरके लोगोंमें करमचन्द, छोट्रभाओं हैं (जो सारे दिन पास ही रहते हैं), और दो नसें हैं जो बहुत मिलनसार हैं और डाह्याभाओके स्वभावको माफिक आ गओं हैं। बिसके सिवा वस्ती बीर दूसरे मित्र भी हैं ही। बिस समय ढाह्याभाओं के पास तू नहीं है यह तुझे खटकना स्वाभाविक है। लेकिन जो औरवरको अधिक चाहता है असकी वह ज्यादासे ज्यादा कसीटी करता है। यहां करमचन्द, छोट्भाओ वगैराके पत्र रोज आते हैं। यह तीसरा हफ्ता है। अब बुखार १०२ से अूपर नहीं-जाता। कल तो नॉर्मल भी हो गया था। डॉक्टर आशा करते हैं कि अगले सोमवार तक वुखार विलकुल नॉर्मल हो जायगा और वढ़ना घटना वन्द हो जायगा। तुझे तो डॉ॰ मादनका, जो देखमाल और अिलाज करते हैं, वल्लभमाओके नाम आया हुआ पत्र भी भेजा था। अससे भी तू समझेगी कि डॉक्टर भी

१. स्व० सेठ वालचन्द हीराचन्द। पूज्य वापूके अंक मित्र।

२. मेरे काकाके पुत्र।

३. स्व० जमनादास वस्त्री। वस्वजीके अक शेयर-दलाल। पूज्य वापूके अक भक्त।

प्रेमसे देखभाल कर रहे हैं। मोमम्बीका रस, छाछ बगैरा देने हैं। माधा-रण तौर पर तो टाजिफाजिडके बीमारको दस्त मा अँमा ही कुछ गुरूमें हो जाता है। डाह्यामाजीको जिनमें से कोजी व्याधि नहीं है। जिसलिजे चिन्ता करनेका कुछ भी कारण नहीं। तू अपने काममें परायण रहना और असी प्रार्थना करना कि डाह्याभाजी जल्दी अच्छे हो जाय। दादीके लिखे शोक हो ही नही सकता। शुनके जैसी माग्यमाली मृत्यु कितनोको मिलती है? हम अमुक स्वजनकी सेवा नहीं कर पाये और वह चला गया, यह भावना पैदा हो तब अँमा निश्चय करके निश्चिन्त हो जायें कि आगे विसीकी भी सेवा करनेका मौका हाथमे नहीं जाने देंगे।

हम तीनो आनन्दमें है। मोनेके बुछ घटे छोडकर हम तीनोका बाकी सारा समय अस्पृत्यता-निवारणके काममें लगता है।

वापुके आसीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, प्रिजनर, सेन्ट्रल जेल, वेलगुव

१०९

य० म० २६-११-[']३२

चि॰ मणि,

आज डाह्यामाओं के अधिक अच्छे समाचार हैं। बुलार १००॥ से आगे गया हो नहीं और ९८॥ तक अुतरा था। अिसलिओ वह सकते हैं कि अब अुतार पर है। वल अयवा परसो विलकुल नॉर्मल होकर फिर नहीं चढेगा, असी डॉक्टर आशा रखते हैं। कमजोरी है सो तो होगी ही। परन्तु जिन्ताका जरा भी कारण नहीं। अमिलिओ अब तुसे

१ मेरी दादी लगमग ९० वर्षकी अम्रमें गुजर गओ। वे अन्त तक रसोओ वर्गराका काम करती रही।

तार करनेकी जरूरत नहीं रही और यहांसे तेरे पास तार भेजनेकी भी जरूरत नहीं रही।

तुझे रुपया भेजनेके लिओ तो वापूने करमचंदको कल लिख ही दिया है। हम तीनों मजेमें हैं। तेरा पत्र डाह्याभाओको भेज दिया है। अपनी तवीयतके समाचार क्यों नहीं भेजती?

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, वी क्लास प्रिजनर, सेंट्रल प्रिजन, वेलगांव

880

य० मं० २७-११-'३२

चि० मणि,

आज कलसे भी ज्यादा अच्छी खबर है। बुखार अतरकर ९७॥ तक गया था। १०१॥ से ज्यादा नहीं बढ़ा। नींद अच्छी आती है।

तू अपने कर्तव्यमें निमग्न रहना।

वापुके आशीर्वाद

डाह्याभाअिक खर्चका वोझा सय मित्रोंने अठा लिया है। श्री मणियहन पटेल, प्रिजनर, सेंट्रल प्रिजन, वेलगींव

यरवडा मदिर, ३०-११-¹३२

चि० मणिवहुन,

आज डॉ॰ कानूगाका पत्र आया है। वह सायमें मेज रहा हूँ। शिममे तुझे पता लग जायगा कि डाह्याभाओं की चिन्ता करनेका कारण नहीं। बुखारके जानेमें तो अभी समय लगेगा, मगर असमें चिन्ता करने जैसी कीओ खास बात नहीं। हम तीनो आनदमें हैं।

बापूके आसीर्वाद

श्री मणिबहन, बी क्लास प्रिजनर, मेंट्रल प्रिजन, वेलगाव

११२

य० म० ६--**१**२--¹३२

चि० मणि,

डाह्माभाओका बुखार रिववारको विलकुल अतर जाना चाहिये था, मगर अतरा नहीं। नॉमेंल तो होता है। परन्तु ९९-१०० तक चढता है। असिलिओ शायद अभी असि हक्ते तक और चले। डॉक्टरोको अब कोओ चिन्ता नहीं रहीं। वे तो शक्तिके लिओ सेनेटोजन देने लगे हैं। और डेंड भेर दूध भी देते हैं, जो अंच्छी तरह पच जाता है। अबालाल, ठक्कर, बा वगैरा अन ओक दो दिनोमें डाह्मामाओको

१ मेठ अवालाल साराभाओ।

२ स्व० श्री अमृतलाल वि०ठक्कर (ठक्करवापा) । १९१४ से सर्वेण्टस ऑफ अिडिया मोसायटीके सदस्य । हरिजन-सेवक-सघके बरसो तक मत्री, १९४४ से १९५१ तक क्स्तूरवा स्मारक-निधिके ट्रस्टी और मत्री, गाधी-स्मारक-निधिके अेक ट्रस्टी ।

देख आये। सव कहते हैं कि डाह्याभाशी आनंदमें हैं। किसीको नहीं लगता कि चार सप्ताहसे टाशिफाशिडके बीमार है। तू जरा भी चिन्ता न कर।

मेरा अपवास' तो अव पुराना हो गया। 'टाञिम्स' से र्रेसव जान लिया होगा। असे अपवास तो मेरे जीवनमें होते ही रहेंगे। असिलओ जिसे स्वाभाविक समझकर कार्य-परायण रहना। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, प्रिजनर, सेंट्रल प्रिजन, वेलगांव

११३

य० मं० ९-१२-'३२

चि० मणि,

यह मानकर कि तुझे वम्बओसे नियमपूर्वक खबरें पहुंचती रहती हैं, मैं रोज लिखनेकी चिन्ता नहीं रखता। डाह्याभाओके स्वास्थ्यमें सुवार होता ही जा रहा है। अभी दिनमें दो तीन घंटे थोड़ा बुखार रहता है। फिर भी शक्ति खूव आती जा रही है। आज ही देवदास आया है। वह डाह्याभाओसे मिलकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाओ घोड़े जैसे लगते हैं। डॉक्टर खुराक बढ़ाते जा रहे हैं। अव दूध वगैराके

१. अप्पासाहव पटवर्धनने जेलमें मंगीका काम करनेकी अनुमित मांगी थी। वह अन्हें नहीं दी गुआ, अिसलिओ अन्होंने वहुत थोड़ी खुराक लेना शुरू कर दिया था। पू० वापूजीको अिस वातका पता लगा तो अन्होंने भी ३-१२-'३२ को सरकारके अिस रवैयेके खिलाफ अपवास शुरू कर दिया। ता० ४-१२-'३२ को समझौता हो गया तो अपवास छोड़ दिया।

सिरा सागका सोल भी दिया जाता है। और खूद आनन्दमें हैं। आज नटराजन' का पत्र आया है। असमें भी असे ही अच्छे समाचार है। बिसलिओ सुझे अब विलकुल चिन्तामुक्त हो जाना है। तेरे लम्बे पत्रका अतर जरा अवकाश मिलने पर लिखाअूगा।

वापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन पटेल, 'वी' प्रिजनर, मॅंट्रल प्रिजन, वेलगाव

558

(40 Ho)

चि॰ मणि,

जानक मुझे अंक मिनदका भी अवकाश नही रहता। मेरा प्याल है कि अब रोजका पत्रव्यवहार बन्द कर दिया जाय। डाह्याभाओं अब विलकुल अच्छे हैं।

वापुके वाशीवींद

श्री मणिवहन पटेल, प्रिजनर, सेंट्रल प्रिजन, बेलगाब

११५

[वैलगाव जेलकी मेरी क्षेक साथी बहनके नाम पू० बापूजीके पत्रसे।]

३०—३~′३३

मणिना सुधडपन सरदारना अुत्तराधिकार है, यह मैं ही देख पाया। मणिकी सुधडता देखकर मोतीलालजी चिकत हो गये थे। आश्रममें मैंने सुमनी कोठरी मोतीलालजीको दी तो बोल अुठे, "अैसी

कि सिन्। नरगाजनी सिडियन सोशियल रिकॉर्मर' के सम्पादक।

मुघड़ता तो मैंने आनंद-भवनमें भी नहीं देखी।" अिसलिओ यह तो तू अुससे अच्छी तरह सीख लेना। जिस पर अंडेले अुस पर अपनी सेवा अंडेलनेकी भी अुसकी शक्ति, अजीव है। अुसकी निडरता तो असी है कि तुम लोगोंमें से कुछ वालायें अुसकी स्पर्वा कर सकती हो। अिसलिओ अिस ओर ध्यान नहीं खींच रहा हूं।

*

वापूके आशीर्वाद

११६

य० मं० ४-४-३३^१

चि० मणि,

पत्रोंकी तेरी शिकायत समझमें नहीं आती। तुझे पत्र नियमित लिखे ही जाते हैं। क्यों नहीं मिलते असकी अब जांच हो रही है। वापू लिखते थे असलिओ में लिखे विना काम चला लेता था। परन्तु फुछ न कुछ तो नीचे लिखाता ही था। किसी समय यह भी न हुआ होगा। असलिओ कुछ पता नहीं चलता। हम कोओ तुझे पत्र न लिखें तो तुझे दुखी होनेका जरूर अधिकार है और गुस्सा भी आयेगा। परन्तु तुझे यह मान ही लेना चाहिये कि कुछ भी कारण हो तो भी यह नहीं हो सकता कि तुझे पत्र न लिखा जाय। कोओ आकस्मिक बात हो गओ होगी, यह सबसे सीवा अनुमान है।

यहां सब मजेमें हैं। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाओं फिर शुरू हो गंओ है। यह तो नहीं कहूंगा कि घड़ाकेसे चल रही है, मगर काफी अच्छी चल रही है। जितना सीखा है अतुतना तो याद रखनेका सतत प्रयत्न करते हैं। डाह्यामाओं लगमग हर सप्ताह मिल जाते हैं।

मेरे हाथका तो जैसा था वैसा ही हाल है। परन्तु कोओ वाधा नहीं पड़ती है। महादेवका स्वास्थ्य अच्छा है। छगनलाल (जोशी) का भी

१. जेलमें मिला ता॰ ८-४-३३ को; मुझे दिया गया ता॰ १५-४-३३ को।

अच्छा है। तुझे अच्छी पूनिया चाहिये तो यहासे भेजी जा सकती हैं। बहुत आनी रहती है। तेरे विषयम समाचार मृदुलाकी तरफमें मिले थे। कमलादेवीकी तरफसे भी और लीलावतीकी तरफमें में। मालूम होता है सभी पर तूने अच्छी छाप डाली है। बा और मीरा बहन मजमें हैं। मीराबहन हर इस्ते पत्र लिखती हैं। वाकामाहब आजकल यही है और हरिजन-पत्रोंके वाममें सहायता देते हैं। पत्रोंके गुजराती, बगाली और हिन्दी सस्करण निकल रहे हैं।

वापूके आशीर्वार

पुतस्च मैं अगले महीनेकी ४ तारीखकी अपना पुण्यों श्रीण होने पर मृत्युलोकमें प्रदेश कर रहा हू।

म० (महादेवभाशी)

श्रीमती मणिवहन पटेल, वी नलास प्रिजनर, सेन्ट्रल प्रिजन, वेलगाव

११७

यरवडा मदिर, २६-४-'३३

वि॰ मणि,^र

तेरा पत्र २-३ दिन पहले ही मिला। तू कितना ही लम्बा क्यों न लिखे वह हमें लम्बा नहीं लगेगा। त्रितनी ही बात है कि यहामें और अनमें भी मेरे पामचे बहुत लम्बे पत्रोंकी आशा तू रखनी हो तो बुसे मैं पूरा नहीं कर सकता। तू आशा रखे यह तो मैं पूरी तरह समझ सकता हू। हमारे पास जो विविधता, जो सुविधायें, जो वैभव विद्यमान है, ये तुन्ने तो मिल ही कैसे सकते हैं? अन सब सुविधानोंका

१ सजा।

२ यह पत्र आधा श्री महादेवमात्रीके अक्षरोंमें और बाकीता भाग पूज्य वार्षूके अक्षरोंमें लिखा हुआ है।

अपयोग केवल सेवाके लिझे न करते हों अयवा असीके लिले ये 'मुविधायें पैदा न करते हों, तो हम अयोग्य सेवक सावित होंगे और अससे भी अधिक अयोग्य वुजुर्ग सावित होंगे। सैकड़ों वच्चोंके मां-वाप होनेका दावा करके बैठ जाना और हवामें अुड़ते रहना जरा भी जोभनीय नहीं माना जा सकता । ञिसलिओ हम आरामसे ञिस वैभव अित्यादिका अपयोग कर रहे हैं अिसकी अीर्ष्या तुझे या मृटुला जिस किसीको करनी हो पेट भरकर करते रहना। मीरावहनके वारेमें तूने अुलाहना दिया भी है और फिर वापस भी ले लिया है। वापका धर्म क्या है ? जिन बच्चोंको जो चाहिये वह अन्हें दे या सब बच्चोंको अक र्जंसा देकर घोर अन्याय करें? और संतारके सामने या नासमझ वालकके सामने न्यायपरायण सावित होनेके प्रयत्नमें किसीके प्राण भी ेंछे छे ? तुझे तेरी वीमारी मिटानेके लिओ वाजरेकी रोटी और मक्खन निकाली हुआ छाछ देनी पड़े तो नया भारती (साराभाओं) जैसी लड़कीको शहद, मक्खन और गेहूंके फुल्के देनेकी जरूरत होते हुने भी वाजरेकी रोटी और छाछ ही दी जाय? वापका धर्म प्रत्येक वालकके श्रेयके लिखे जितना आवश्यक हो अुतना देना है। अिससे आगे बढ़कर श्रेयको हानि न पहुंचे अिस हद तक अधिक देनेकी भी अुसे छूट है। परन्तु असा करना युसका फर्ज नहीं है। यह सब ज्ञान क्या तुझे आज देनेकी आवश्यकता है ? परन्तु मुझे तो ज्यों ज्यों कागज भर देना है, विसलिञ्जे जितना अनावश्यक सयानापन दिखा रहा हूं। हम पर तुझे जरा भी गुस्सा नहीं आया तो फिर जी क्यों जला रही थी? अितनी कम श्रद्धा क्यों रखी? और तूने निश्चयपूर्वक क्यों नहीं मान लिया कि हम दोनोंमें से अेकका पत्र तो जरूर गया ही होगा? मैं अवस्य मानता हूं कि लिखा जा सके तो हम दोनोंको लिखना चाहिये। परन्तु जहां पत्र मिलनेके वारेमें ही अनिश्चय हो वहां अस तरह लिखनेकी अुमंग बहुत नहीं रहती। किसी भी तरह अके तो पहुंचेगा ही, यह समझकर अक तो नियमित रूपमें लिखा ही जाता है। और आगे भी े लिखा जाता रहेगा, यह तुझे विश्वास रखना चाहिये। तेरे पत्रका

न्यौरेवार बुत्तर देनेकी जिम्मेदारी तो सरदारने ही ही है। जिमिल्ने तेरे सन्देशों वर्षगता जवाव वे ही पहुचारेंगे। और न्यौरेवार जुत्तर भी वे ही देंगें। बुउना जबाव देना तो मुझे अच्छा लगता है, परन्तु अपने जिस लोभना में सवरण कर लिना है।

जानदी'ना आपरेशन तो मूतनालकी वस्तु हो गओ। वह आधनमें कभीकी चली गओं है और गजेमें है। बीचमें अपे सरदी और बुनार हो गया था। परन्तु यह तो क्षणिक हो था। . . मिल गजे।

के हाथ सभे जैमे हो गये हैं। . . अपे फ्लको तरह मनाल रहा है। वह पित है, मित्र है, जिल्क है, सेवक भी है। अपूर्वे अधिक अच्छा पित विधाता भी नहीं ढूढ सकता था, असा अभी तो लगता है। . अपूर्वे योग्य है या नहीं, सो तो देव जाने। परन्तु अपूर्वे त्रुटिया मैंने स्वय सादी करानेसे पहले . के मानने रख दी थीं, और यह लिल दिया था कि वह सम्बन्ध करना न चाहे तो नि मकोच सगाओं तोड सकता है। परन्तु .. के मातहत तालीम पाया हुआ

जैक बार किये हुन्ने निरचयते की हिंगे? . . विवाहके अवनर पर सबने जुन अन्ते प्रेमसे नहलाया था। सबने कुन्न न कुन्न भेंट दी थी। लबे समय तक जुन लोगोको साज-सामान और कपडों पर सर्व भी करनेको जरूरन नहीं रहेगी। जिसमे जितना मतोप मिले जुनना ले लेना।

हमारे दारोगा अब मुझे हमारे रहतेके बाडेमें छे जानेके लिखे आकर खड़े हो गये हैं। अब ग्यारह बजेंगे, जिमलिओ अब अपने पिजडेमें जा रहा हू। स्नान आदि करनेके बाद फिर १२ धर्ज मुझे हरिजन-गृहमें छे आयेंगे।

(पू॰ वापूक अक्षरोमें)

अितना वापूने महादेवने जिलवाकर अभी मुझे दिया। जिस्रिके बाकीका मुझे पूरा करना है। तेरे यतकी सूची डाह्मामाओको भेज

१. थी लक्ष्मीदास आसर्की लडकी।

देता हूं । अिसलिञे पुस्तकों वगैराके जो सन्देश है वे अन्हें मिल जायंगे । डाह्यामाञी पिछले सप्ताह आ गये थे। आनंदमें हैं। अब स्वास्थ्य पहले जैसा हो गया माना जा सकता है। वावा मजेमें है। परीक्षामें पास हो गया। (अस समय छह वर्षका था।) अिसलिओ अव पहली कक्षामें वाकायदा भरंती कर दिया गया है। अब कुछ कुछ पढ़नेमें थुसका व्यान लग रहा है। आज 'टाअिम्स 'में फर्स्ट अेम० वी० वी० बेंस० का परिणाम पड़ा। अुससे मालूम होता है कि जीतू' पास हो गया। परन्तु अभी तो असी और चार परीक्षाओं हर साल देनी हैं। कल श्री सरलादेवी³ का पत्र आया या। ता० २२ का अहमदावादसे लिखा हुआ पत्र था। असमें वे लिखती हैं कि कल अर्यात् ता० २३-४-'३३ को ममूरीके लिओ रवाना होंगे। सारा परिवार जायगा। सायमें बिन्दु बीर असकी मां भी जायंगी। श्री निमूबहर्न वादमें णायंगी। सब बड़े आनंदमें हैं। अिस बार दोनों जर्ने चिन्ता नहीं करते, बिसका विश्वास दिलाते हैं। . . . अुन्हें फुछ कम चिन्ता है। अंवालालभाओकी जिनेवा जानेकी वातें अखवारोंमें आ रही हैं। परन्तु अुनके पत्रमें अस बारेमें कोओ अुल्लेख नहीं। अगले पत्रमें कुछ नं कुछ पक्की खबर आयेगी। कमलादेवी दो दिन पहले वापूसे मिलने आओ थीं। वापस वम्बओ गओं। . . .

देवदास भटकता भटकता कल वम्त्रश्री आया है। कल यहां मिलने आनेवाला है। मथुरादास भी कल यहां आये थे। श्री जमनालालजी दो-तीन महीने अलमोड़ा रहने गये हैं। अनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। डॉक्टरोंने पहाड़ पर जानेकी सलाह दी। जानकीदेवी भी साथ गशी

१. डॉ० कान्गाके पुत्र।

२. श्री अम्बालाल साराभाओकी पत्नी।

३. श्री अिन्दुमती चिमनलाल सेठ। १९५२-१९५७ तक वम्बकी राज्यकी अप-शिक्षामंत्राणी।

४. स्व० निर्मलावहन वकुभाओ।

हैं। बुल (खुररोदवहन) और अनुकी बहनें सब पद्रह दिनके लिसे कल महाबलेदवर गओ हैं। अनुकी माका वहा आग्रह या अिसलिसे गर्नी है। ताजी होकर बादमें दो बहनें तो ठिकाने (जेलमें) पहुच जायगी हो। श्री जमनाबहन टाशिफाजिडमें पड़ी है। यदावतप्रसादके रोज पत्र आते हैं। और अब तो अच्छी तबीयत है, अमा लिखते हैं। नद् बहन तो तुमने मिल गर्जी। अिसलिसे बया लिखू ? अक आब सो बैठी। परन्तु वे तो बढ़ी सतोपी और धीरजवाली हैं। लिखती हैं कि तुम्हारे साय म हो सकनेका दुःख है।

हमारे पत्र देरसे मिले तो असकी चिन्ता न करना। पता नहीं वितने पत्र गुम हो गये। परन्तु यहासे तो अच्छी क्षरह गये दीवते हैं। आश्रिन्दा प्रत्येक पत्र रजिस्ट्रीसे ही भेजनेका निश्चय किया है। अिमलिओ तुरत पता रूग जायगा। यह पत्र भी रजिस्ट्रीसे ही भिजवाया है।

दादा साहव अमी तक रत्नागिरिमें ही है। वहा घरकी व्यवस्था कर ली है। सारा परिवार वहा पहुच गया है। वेचारे दारीरसे जर्बर हो गये दीखते हैं। कमू बब तेरह वर्षकी हो गंजी। प्रोप्रायटरीमें पढ़ने जाती है। दादाका पत्र पिछले सप्ताहमें आया था। तुम दोनोंके समाचार पूछे है। महादेवभाजीका पुष्य (सजा) अब पूरा होने आया है। अगले महीनेके बीचमें फिर मृत्युलोकमें पहुच जायगे (छूटेंगे)। कितने समयके लिजे, सो तो अनके पाप-पुष्य पर निर्मर है!

क्ल नडियादसे मणिभाओका २० वारीखका लिखा हुआ पत्र मिला। हीरा मामी का २० तारीखको स्वगंदास हो गया। अक तरहमें .

१ खुराकमें आवश्यक तत्त्वोकी कमीसे जेलमें नदूबहनकी आख जाती रही थी।

³ स्व॰ दादासाहब मावलकर।

३ स्व० दादासाह्य मावलकरकी पुत्री।

४ पूज्य बापूके मामाके लडके।

५. पू॰ बापूकी मामी।

तो वे पीड़ासे छूट गओं, क्योंकि वीमारी अँसी थी कि जीनेसे मरना अच्छा था। फिर भी मनुष्य चला जाता है तब सगे-संवंधियोंको वियोगका दु:ख होता ही है।

जिस बार तुम्हारा मन स्वस्य रहता है, **जिससे हम बहु**त प्रसन्न हुने। नैसा ही रहना चाहिये। यह तो हमारी सामान्य स्थिति हो गञी है। और धर्मका पालन करते हुझे मनको जो शान्ति रहनी चाहिये वह न रहे तो यह माना जा सकता है कि कही न कही हमारी भूल हुओ होगी । शरीर भी नियमित आहार और मुन्दर जलवायुमें ययासंभव अच्छा रहना चाहिये । जो भी शारीरिक दुःख हो अुसको सुघार लेनेका पूरा अवकाश यहां मिलता है । अुसका सदुपयोग कर लेना चाहिये। वाहर हम झरीर पर समय या घ्यान विलकुल नहीं दे सकते । यहां जितना समय देना हो अुतना दिया जा सकता है । जो भी तकलीफ हो वह डॉक्टरको वताना चाहिये और बिलाज करा लेना चाहिये। मामूली कसरत भी करनी चाहिये । नियमित रूपमें रोज घूमना-फिरना चाहिये । वहुत पढ़ना न हो सके तो चिन्ता नहीं, परन्तु शरीरको संभालना चाहिये। यह वात तो तुम दोनों^ग पर लाग् होती है। मेरी तवीयत अच्छी है। हमारी कोओ चिन्ता न करना। हम तो जरूरतकी सव चीज जुटा सकते हैं और जो सुविधा चाहिये वह प्राप्त कर सकते है। अिसलिओ हमारे वारेमें पूछनेका क्या है?

अब अगले मासके मध्यमें फिर पत्र लिखेंगे। तुम्हारा पत्र आ गया तो ठीक, वरना हम तो लिखेंगे ही।

वापूके आगीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, पी० सार० नं० १०२४९, वेलगांव सॅंट्रल प्रिजन, हिडलगा

१. मैं और मृदुलावहन।

चि० मणि,

पिछली वारनी तरह अस बार भी तुसे रोज लिखा जा सनेगा और तू भी रोज लिख मनेगी। मैं चाहे रोज न लिख सकू मा लिखवा सकू, परन्तु महादेव तो लिखेंगे ही। और समब हुआ तो मेरे हस्ताक्षर करा लेगे। यह पत्र तेरे और मृदुला दोनोंके लिखे हैं। यह भी महादेव ही लिख रहे हैं।

तुम दोनो बीर स्टिक्या हो। मैं मानता हू कि तुम कभी नहीं प्रवराओगी। मेरी जरा भी जिन्ता न करना। मैं ममझता हू कि मेरा मिरिर पिछले अपवासकी तुलनामें शिस समय अधिक ताजा और समय है। राजाओं ने बहुत झगडा किया। आज शान्त होकर वापस जा रहे हैं। योडे दिनमें लौटेंगे। चल्लभमाओं वडी शान्तिसे सब सहन कर रहे हैं और महादेवसे अन्होंने प्रतिशा की है कि मुझसे जरा भी बहम न करके सपूर्ण महयोग — भले ही मौनमे — देंगे। यह वृत्ति मुझे प्रिय है। योडे दिन तो वे शिस मौनको जरा कडी हद तक ले गयें, अनका विनोद सूख गया। परन्तु अब किर फूटने लगा है।

यह बुपवाम³ अनिवार्य था। थिसना मुहूर्त्त यही था, अिमर्ने जरा भी शक नहीं। गणितके मवालकी तरह मैंने अिसना हिसाव

१ श्री राजगोपालाचार्य ।

२ अस्पृश्यता-निवारणके लिजे समाज-सुद्धि तथा आत्मशुद्धिके यज्ञके रूपमें किया गया २१ दिनका अपवास ति ८-५-'३३ मे २९-५-'३३। यह पत्र अपवास शुरू करनेमे पहले यरवडा जेलमें लिखा गया था। बापूजीको अपवाम शुरू करनेके दिन ही शामकी जेलसे छोड दिया गया था।

मिला लिया है। यह अपवास किसीके विरुद्ध नहीं है। मुझे पता नहीं कि किस चीजसे आघात पाकर मैंने यह प्रतिज्ञा की। वहुतसी वातोंका जाने-अनजाने जरूर असर हो रहा था। परन्तु बात यह है कि मुझमें कहीं न कहीं अपवित्रता होगी। तभी तो मेरे साथ सम्बन्ध रखनेवाले हरिजन-सेवक कुन्दन जैसे नहीं हैं? और अस्पृत्यतारूपी राक्षस रावणसे भी वुरा है। रावणके दस मस्तक थे, असके सैकड़ों हैं। अन सवका नाझ संघोंसे नहीं होगा, करोड़ों रुपयोंसे नहीं होगा, हरिजनोंको अधिकार दिलानेसे नहीं होगा। सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनोंको भाओकी तरह मिलानेके लिखे अनुनके हृदय बदलने चाहिये। असा विज्ञाल आध्यात्मिक कार्य हमारे पास जितनों भी आध्यात्मिक पूंजी हो असे खर्च कर दें तभी हो सकता है। यह मार्ग तो पुराना है। राजमार्ग है। आज तक नहीं सूंझा, यही आश्चर्य है।

ें दोनों शान्त रहना; और समय आने पर सहयोग देना। मेरे साय अपवास हरगिज म करना।

तुम दोनोंको वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, प्रिजनर, हिंडलगा सेंट्रल प्रिजन, वेलगांव

११९

य० मं० (८-५-'३३)

चि० मणि,

तुझे शनिवारको पत्र लिखा है। तू जवाव भी रोज लिख सकती है। अिसमें मृदुका भी भाग है। कोशी वहन दुखी न हो। परन्तु सव अपनेमें जहां जहां मैल भरा हो अुसे निकालनेका प्रयत्न करें। कोशी न कोश्री यथासभव रोज लिया करेगा। में खूब शान्त हू। हम सब आनंद कर रहे हैं।

बापुके आशीर्वाद

श्री मणिबहुन पटेल, प्रिजार, हिंडलगा सेंट्रल प्रिजन, बेलगाव

१२०

(पर्णकुटी, -⊅पूना) १५-९-'३३

चि॰ मणि,

नासिकसे (पूज्य बापूका) यत्र तुझे नियमित मिलता ही है, अम कारण मैंने कुछ भी नहीं लिखा। अब देखता हू कि मैंने लिखा होता तो तुझे मिल जाता। बैर। अगर मैं बाहर रहा तो जहा होअूगा वहा तू मुझे मिलने आ ही जायगी, यह मान लेता हू। मैं जानता हूं कि तू दो दिन बेलगावमें रहेगी। फिर नामिक तो जायगी ही। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा। मैं मजेमें हूं। आज वस्वश्री जा रहा हूं। २१ ता० को अहमदावाद। २३ ता० की दर्षा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, सेन्ट्रल प्रिजन, हिंडलगा, वेलगाव

(वर्घा) २९-९-'३३

चि॰ मणि,

तेरा कार्ड मिल गया। तुझे जब तक रहना पड़े तब तक रहकर अच्छी होकर आना। वापूका पत्र मुझे भी मिला है। अससे मालूम हुआ कि अनके साथ आजकल चन्द्रभाओं हैं। वहुत ठीक हुआ। मुझे पत्र लिखती रहना। डाह्याभाओंसे कहना कि मैंने करमचन्दको जवाव दिये हैं। मैं अच्छा हूं।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, रामनिवांस, पारेख स्ट्रीट, सैण्डहर्स्ट रोड, वंबशी – ४

१२२

वर्धा, ७-१०-'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। जहां मिलना हो वहां फुरसत लेकर आना। परन्तु असका यह अर्थ न करना कि अगले युगमें भी आये तो हर्ज नहीं। वावाको जरूर साथ लाना। असे अच्छा लगेगा। मैं अच्छा होता जा रहा हूं, अर्थात् शक्ति आती जा रही है। मैं यहां ७ नवम्बर तक हूं। वापके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, वंबशी – ४

१. डॉ॰ चन्दूलाल देसाओ।

२. पूज्य वापू नासिक जेलमें ये तवका जिक है।

वर्गा, २२-१०-⁷३३

चि॰ मणि,

तेरा वार्ड मिला। तुम तीनो वी राह बुधवारको देलूगा। बाबा आयेगा न ने तू अच्छी होती जा रही होगी। स्वामी आज पहुँवे हैं। रोप गारी बातचीत बुधवारको होगी।

वापूत्रे आसीर्वार

यी मणिबहन पटेल, ठि० श्री डाह्यामाओ वल्लमभाओ पटेल, पारेल स्ट्रीट, मैण्डहस्ट रोड, वन्नो – ४

१२४

वर्घा, ४-११-¹३३

चि॰ मणि,

तेरा पत्र मिला। डाह्यामाओ नाफी जूस रहे है। जहां गरगी अयवा कृतिमता पाओ जाय वहां मले ही लगानार जूसते रहें। तेरी देलमाल अच्छी तरह हो रही होगी। मुझे नियमित लिखती ही रहना। बाबा यहा आ गया यह तो बहुन अच्छा हुआ। बा तेरे जानेके बार (जेल जानेके लिओ) निकलेगी। असके लिओ नैयारी तो कर रखनेकी जहरत है ही।

बापूके आशीर्वाद

१ मृदुलावहन, डाह्माभाओना ६ बरसना लडका और मैं।

२ स्व० विद्वलमात्रीका राव जहाजमें आ रहा था। अन दिनों अस बारेमें बबत्रीमें बढ़ी खटपट और चर्चा हो रही थी कि अनुमना अग्नि-मस्कार कहा और किस टगमें किया जाय।

चि० मणि,

डाह्याभाओका क्या हाल है यह मैं नहीं जानती। अन्हें मेरे आशीर्वाद और वावाको भी। तू जब वल्लभभाओको पत्र लिखे तव मेरे आशीर्वाद लिख देना। मेरे वारेमें वापूजीने लिख दिया है अिसलिओ मैं नहीं लिख रही हूं। यहां सब मजेमें हैं। वहांके (समाचार) लिखना। यहां वापूजीसे मिलने बहुत लोग आते हैं। आज शंकरलाल आये हैं।

वाके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,

ि श्री डाह्याभाओं वल्लभभाओं पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट, सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्बओं

१२५

वर्वा, ५–११–'३३

चि॰ मणि,

तेरा पत्र मिला। मैले वातावरणको डाह्याभाओं काफी शुद्ध कर रहे हैं। मेरा वहां आना नहीं होगा। मुझे व्यौरेवार लिखती रहना। वा कदाचित् यहांसे १३ तारीखको चलेगी। मुझे नागपुरका काम पूरा करके यहां लीट आना है। अतने समय यहां रह जानेका वह लोभ रखती है। अहमदावादमें रणछोड़भाओं के यहां रहेगी असा मानता हूं, अथवा लाल बंगला तो है ही। यह तो मुझे देखना होगा।

१. श्री शंकरलाल वैंकर।

२. अुस समय मध्यप्रान्तमें पू० वापूजी हरिजन-यात्रा करनेवाले थे। अुसीका अुल्लेख है।

३. अहमदावादके श्री रणछोड़भाओं सेठ।

तू कुछ कहना चाहती हैं ? पैरका अिलाज जितना हो सके अनुतना तो करना हो। विना सोचे-समझे अनुतावली न करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
ठि० श्री डाह्यामात्री पटेल,
रामनिवाम,
पारेन स्ट्रीट,
वम्बजी – ४

१२६

नागपुर, ९–११–1३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने मुझे सब माफ लिखा, यह समझदारी की है। अमा ही करती रहना। तू नहीं लिखेगी तो कौन लिखेगा? डाह्मामाश्रीको गलनफहमी हुओ और गुस्मा आया, यह आरचयंकी वात है। मगर अमुक्ता खयाल न करता। अन्हें शायद सारी वात मालूम भी न हो। अन्हें दुख हो, जिसे समझ भी सकना हू। तू ही जितना समाधान हो सके अनुना करना। तू चाहे तो मैं अन्हें लिखू और अनुन्ता दुं स मिटाशू। मुझे यह ज्यादा अच्छा लगेगा। यह पत्र भी तू अन्हें पद्वाना चाहे तो पढ़ा देना।

वा मगलवारको वर्षा छोडेगी। योडे समय अर्थात् कुछ घटे अकोला रहेगी। फिर अुचर आयेगी। वा अिस समय कुछ दुविपामें है। चिन्तित भी है, फिर भी (जेल) जानेका निश्चय अुमने अपने आप ही प्रगट किया है। तू अुमे अच्छी तरह दृढ करना।

तू अच्छी तरह सा-पीनर शरीरको ययामभव सुघार लेना।
मुझे नियमित लिखनी रहना। विजलीका अलाज आवश्यक हो अतुना
लेना ही। अहमदावादमें भी लिया जा सकता है। दातोका क्या किया?

शनिवारको जवाहरलाल वगैरा वर्वा आर्येगे।

मृदु अिलाहाबादमें नया कर आओ ? सन्तोप ले कर आओ ? अुसे लिखनेको कहना। दांतोंका अुसने क्या किया? सरलादेवी (अुसकी माता) के और समाचार हों तो लिखना।

नागपुरमें बहुत अच्छो सभा हुओ थी। आरंभ तो अच्छा हो गया। वहांकी श्मशान-क्रिया के समाचार लिखना।

वर्घा ही लिखना।

वापुके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, ठि॰ डाह्याभाशी पटेल, रामनिवास, पारेस स्ट्रीट, वम्वशी – ४

१२७

चांदा, १४–११–'३३

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र मिला। तूने लिखा सो अच्छा किया। मेरे सामने तू परदा रखेगी तो तेरा दुर्भाग्य ही होगा। अवश्य ही मनुष्यके मरते समय हम असके दोपोंको याद न करें। हम असके गुणोंका ही स्मरण करें। मेरे अपस्थित न रहनेका अनके व्यवहारके साथ को आ सम्बन्ध नहीं। अनके गुण में नहीं पहचान सका सो वात नहीं। में वहां असिलिओ नहीं आ सका कि मैं कहीं किसी दूसरे कार्यक्रममें शामिल नहीं हो सकता था। आजकल या तो मैं यरवडामें शोभा देता हूं या हरिजन-कार्यमें। हरिजन-कार्यके खातिर ही मैं वाहर हूं, यह केवल सरकार या जनताको कहनेके लिओ नहीं, परन्तु मेरे हृदयमें भी यही चीज है। दूसरे काममें मैं पड़ ही नहीं सकता। मालूम

१. श्री विद्वलभाओकी इमशान-यात्रा और अग्नि-संस्कार।

होता है लोग भी यह चीज समझने लगे हैं। मुझसे सरनारके अनुदा सहन न होते, में अपने ढगसे कुछ कर न पाता। में तरा या डाह्याभाओं का पयप्रदर्शन न कर सकता था। असिल अे में मन मारकर देंठा रहा। असके सिवा मेरे जीवनमें दूसरी दात भी है। यह भी तू जान ले। रसिक (गायी) मृत्युग्यया पर था, वह चाहता भी रहा होगा कि में असके पाम पहुचू। परन्तु में दिल्ली नहीं गया, वा गओ। रिमक मर गया। मैंने आभू तक नहीं दहाया। में खा रहा था तब तार आया। खाना खतम किया और अपने काममें लग गया! मेरे जीवनमें अंगी घटनाओं बहुत हुओ है। मौतके बारेमें मैंने कुछ विचार दना रखे हैं, वे दृढ होते जा रहे हैं। मैं मृत्युको भयानक चीज नहीं समझता। पिवाह भयानक हो सकता है, मृत्यु कभी नहीं। अससे तेरी शकाच समाधान हो जाता है? न हो तो मुझे फिर पूछना।

वहाता वर्णन तूने बिदया किया है। वहा दु सद है। लोगोका प्रेम समझने लायक है। यह प्रेम व्यक्तिके प्रति नही है, परन्तु जो चीज लोगोको चाहिये अमे जिस व्यक्तिमें वे मानते हैं असीके लिओ वह प्रेम है। जिसलिओ यह वही निर्मल यस्तु है। यह लोक-जागृतिकी सूचक वस्तु है, दुनियाकी आसें खोलनेवाली है। विद्वलभाजी स्वनप्रताकें पुजारी थे, जिस बारेमें कोजी शका कर ही नहीं सकता।

अब बाने बारेमें। मुझे समय होता तो मैं अप पत्रमें अधिक ममझाता। वाका दिल कमजोर हो गया है। वह मदिर (जेल) जाना चाहती भी है और नहीं भी चाहती। भीतर ही भीतर वह जेल जारेना यम समझती है, जिसलिंजे असे छोड नहीं सकती, मगर मैं बाहर हूं जिसलिंजे असे जन्दर जाना अच्छा नहीं लगता। मैंने कोजी आग्रह नहीं किया। असनी मरजी पर छोड दिया है। मेरे लिखनेका आराय यह या कि तू असे धमं-पालनमें दृढ बनाना और समझाता। तुझ पर अमे

१ श्री विट्ठलभाशीकी समसान-यात्रामें भाग हेने पूर्व बापूजी नहीं गये। असीके कारण जिस पत्रमें समझाये गये हैं।

आस्या और प्रेम है। मैं कुछ भी कहूंगा तो वह हुक्मके रूपमें माना जायगा और वा दव जायगी। अिसलिओ कुछ नहीं कहता। नहीं कहता, अिसका अर्थ भी वा तो अंक ही करती हैं कि असे जेल जाना ही चाहिये।

तरे दांतोंकी और पैरकी वात समझा। जैसा डॉक्टर कहते हैं वैसा ही करना। थोड़ी राह देखनी ही पड़े तो हठ करनेकी जरूरत नहीं। डाह्याभाओको लिख रहा हूं।

पत्र वर्घा ही लिखना।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल, रामनिवास, सैण्डहर्स्ट रोड, वम्बसी-४

१२८

(चिखलदा) १९–११–'३३

चि० मणि,

तू अपने और कुटुम्बियोंके विचार मेरे सामने सुंडेल रही है, यह वड़ी समझदारीकी वात है। डाह्याभाओं या गोरवनभाओंके मनमें मेरे वारेमें जरा भी गलतफहमी हो, यह मुझे असहा प्रतीत होता है। तू वम्बओंमें होगी तब तो गोरवनभाओंके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ ही लेगी। अस परसे तुझे कुछ लिखना हो तो लिखना।

मेरा पत्र तो तुझे मिला ही होना। अखवारोंमें कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं मानता। अखवारवाले मुझे न समझें या जान-वूझकर गलतफहमी फैलायें, तो असका जवाब देनेकी मुझे हमेशा जरूरत दिखाओं नहीं देती। परन्तु तुम भाओ-बहन चाहो तो मैं जरूर दूंगा। मेरी स्थिति विलकुल साफ है। डाह्याभाओं जो कहता है असमें काफी तत्य है। दास वगैराके चरित्रमें दोप जरूर वताये जा सकते हैं। दोपरहित

कौन है ? परन्तु मेरे न आनेके साय विद्वलभाश्रीके दोषोका कोश्री सबध नहीं। जो आदर दूसरे नेताओंने पाया है यह पाने लायक विद्वलभाश्री भी जरूर थे। अनवा त्याग, अनकी लगन, अनकी हुशलना, वाग्रेमके प्रति अनकी वफादारी, ये सब गुण दूसरोंने अनमें कम हरगित्र नहीं थे।

तेरी अपनी अदारता मुझे चिनत कर रही है। यह तेरी ही विशेषता नही है, जिसे समझ लेना। मैंने यह चीज असस्य न्त्रियोमें देली है। स्त्रिया अपने प्रति हुओ दुर्व्यवहारको भूल जानेके लिओ हमेगा तैयार रहती है। अस गुणसे स्त्रीजाति सुरोभित हुओ है। परन्तु स्त्रीके जिस गुणका पुरुष जातिने खूद दुरुषयोग निया है। परन्तु यह तो विषयान्तर हो गया। मेरी दृष्टिसे अब तू मुगोभित हो रही है, जिसका मैं गर्व कर सकता हू न?

वर्धा लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल, रामनिवास, सैण्डहस्टं रोड, पारेख स्ट्रीट, बम्बजी-४

१२९

कडला, २-१-'३४ सुबहके ४ वर्जे प्रार्थनासे पहले

चि॰ मणि,

ं तेरे समाचार अब सीधे मिलेंगे था नहीं, यह प्रश्न है। सरदारती सोरमे मिलते हैं। अतनेसे सन्तीय नहीं हो सकता। डाह्याभाशीसे पुछवाना हूं। तूं लिख मके तो लिखना। दारीर और मन अच्छा रखना। मेरा तो ठीक चल रहा है। वाको हर हफ्ते नियमित और लम्बे पत्र लिखता हूं। आज तो अितना ही।

पता वर्घाका लिखना।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, प्रिजनर, हिंडलगा सेन्ट्रल प्रिजन, वेलगांव

१३०

(कानपुर) २३–७–′३४

चि० मणि,

्तू ठीक नियमसे लिखती रहती है। बिसी तरह लिखती रहना। मेरे पत्रकी आशा न रखना। महादेव है बिसलिओ मैं कुछ पत्र लिखनेंसे वच जाता हूं। अब सरदारको भी लिखनेकी जरूरत नहीं रहती। तेरी तरह मैं भी मानता हूं कि तेरा वहां रहना ही तेरे लिखे मुन्दर औपिंध है।

शायद अव तो जल्दी ही मिलेंगे।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च: साथका पत्र तेरे ही नाम भेज रहा हूं, असे वापूको तुरन्त पहुंचा देना। तूने भास्करवाली वात कहकर वापूको कार्फी भड़का दिया। असे तो मैने कआ लोगोंके साथ वातें की थीं। परन्तु मैं . अकेला कहां हूं? मेरे साथ कोओ नहीं तो चेलावहन और दो लड़कियां तो है ही। असिलिओ हमारा सवाल विलकुल आसान नहीं है। वर्घामें सारा निश्चय होगा, असी आशा रखें।

(कातपुर) २५-८-'३४

वि० मणि,

तेरी दो पिक्तिया पढी। तू आजक्ल नहीं लिखती, यह बिल्कुल ठीक है। स्वास्य्यकी लापरवाही न करके अुसे अच्छी तरह सुधार लेता। लिखने योग्य हो तब तो अच्छी तरह लिखना ही। अब मुझ पर बहुत दया करनेकी बात नहीं है।

बापूके आसीर्वाद

१३२

वर्घां, ३१-१०-'३५

चि॰ मणि,

तू वीमार क्यों पडती रहनी है? पिनृमक्तिका यह अयं तो नहीं करती कि पिना बीमार पडे तो तू भी बीमार हो जाय? माता-पिता अपग थे तब अवणने अपना घरीर बच्च जैसा बनाया और अपने कमें पर कावर रानकर दोनोंको यात्रा कराओं थी। किंग लियरकी लडकोने खुद तदुहस्त रहकर पिताकी सेवा की थी। तू क्यो बुद्धिया जैसी बन कर बैठी है? अपच न हो तो बुन्धार और बुन्धार न हो तो सरदी, बुछ न कुछ तो रहता ही है। जिमका कारण दूद कर बच्च जैसी काया क्यों नहीं बना डालती?

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल, ८९, वॉर्डन रोड, बम्बओ

वर्वा, १२–११–'३५

चि० मणि.

लिसके पीछेका भाग वापूको पढ़ा देना। अँसी खबर है कि जनाहरलालके व्यवहारसे सब बहुत खुझ हो गये थे।

वापू मजेमें होंगे। वे डॉक्टरोंको हंसाते होंगे¹। तू अपने स्वास्थ्यके विषयमें गाफिल न रहना।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल, ८९, वॉर्डन रोड, ' वम्बओ

१३४

(कानपुर)

२६**–८–'**३७

चि॰ मणि,

केवलरामं का पत्र तो तूने जो वापस दिये अन्हों में या। मुझे पता नहीं कि तारका पहला भाग नहीं या। यत्र दोनों निसके साथ मेजता हूं। आज मीरावहन दिल्लीसे आनेवाली गाड़ीम ६-८ पर आ रही है। राजकुमारी कल मुवह वम्बर्आसे आ रही है।

वापुके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल, पुरुपोत्तम विल्डिंग, ऑपेरा हाजुसके पास, वस्वओ

१. अुस समय पू० वापूकी नाकका ऑपरेशन कराया गया था।

२. स्व० केवलराम । अक आश्रमवासी ।

वि० मणि,

कजी वर्षोमें तुझे मेरे नाम पत्र लिखना पड़ा है। काफी खबरोसे भरा है। असी तरह लिखती रहना। नासिककी सिपाही-साला सम्बन्धी खबरको सच मानकर भेने दिप्पणी लिखी है। तू खेर या मुन्धीमें भिले सी बात भी करना।

वहांका अधिकारी वर्ग यदि मद्य-निपेधके काममें दिलसे सहयोग न दे, तो भित्रयोंको गवर्नरसे दृदताके साथ कहना चाहिये। युनका दिल जिस काममें नहीं, यह विश्वास होना चाहिये।

जमीनोके बाबत तो वल्लमभाशीका पत्र आया, बुसके पहले ही मैं लिख चुका था। अस सम्बन्धर्मे विधान-सभामें हुशी चर्चा भूसे भेजना।

अदलील साहित्यके बारेमें कदम अठाये ही नहीं जा सकते, यह मैंने नहीं कहा। अपनी राम जरूर दी। मुझे यह अन्देशा जरूर है कि लोगोकों गदगी अच्छी लगती है, अिसलिके यह थेकानेक दूर नहीं होगी। जिडानोकों ही घिन आये तब वह बन्द हो। मैं तो मानता हू कि अदलील लेख वर्गरा कानूनमें अन्द हो सकते हो तो अन्हें अस तरह बन्द करनेका प्रयत्न होना चाहिये। परन्तु अनना याद रख कि विद्यार्थीको नैसी बीजें पढनेको मजबूर करनेमें और अखबारोमें गदे लेख छापनेमें बडा फकें हैं।

१ नासिक जेलमें पुलिस ट्रेनिंग स्कूल (यानेदारोक) तालीम देनेवाली पाठशाला) है। वहा तालीम पानेवाले खुम्मीदयारोको शामके भोजनमें शराब दी जाती है, असा मैंने मुना था और असके बारेमें पूरु वापूजीको नवर दी थी।

२ राप्त और वारहोलीको जो जमीनें सरकारने जब्द कर ली यी और दूसरोको वेच दी यीं, अन्हे खरीदारोंसे वापस लेकर असल मालिकोको सींपनेके वारेमें विधात-सभामें विधेयक पेश हुआ था, अस पर हुओ चर्चा।

राजकोटका मामला अद्भुत है। जो हो रहा है वह टिका रहेगा तो लोग मुंहमांगा ले सकेंगे, अिसमें सन्देह नहीं। त्रावणकोर के वारेमें बापूने ठीक किया है। रामचन्द्रन्को वुलाकर अच्छा किया। यद्यपि वापूका पत्र आया अससे पहले मैं अपना वयान तो प्रकाशित कर चुका था। मेरा खयाल है कि मुझे वयान देना ही चाहिये था। अब तुरन्त त्रावणकोर जानेकी वात नहीं रहती।

नाकमें से पानी गलेमें टपकता रहे, यह विलकुल अच्छा नहीं कहा जा सकता। असे मिटाना ही चाहिये।

वड़ोदेकी वात समझा। भादरणमें जो कुछ हो वह वताना।

मैं १५ तारीखके आसपास वर्धा पहुंच जानेकी आशा रखता हूं। यहां^{*}का काम ९ तारीखको पूरा होगा।

१. राजकोट सत्याग्रहका प्रारम्भ अस समय हुआ था।

२. त्रावणकोर राज्यमें राज्यके विरुद्ध सत्याग्रह हो रहा था। अस समयके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अयरने पू० वापूको त्रावणकोर वुलाया था। बुन्होंने जवाव दिया था कि यदि मुझे जेलमें वन्द सत्याग्र-हियोंसे मिलने दिया जाय तो मेरा वहां आना सार्यक होगा।

३. ब्रिस वयानमें अन्होंने त्रावणकोरके विद्यार्थियोंके अपद्रवका अक्लेख करके अन्हें मन, वचन और कमंसे अहिसाके पालनका आदेश दिया था और लड़ाओं चलानेवालोंसे यह विचार करनेको कहा था यदि वे हिसाकी शिवतयोंको कावूमें न रख सकें तो लड़ाओंके हितमें ही सिवनय कानून-भंग स्थिगित करनेमें समझदारी है या नहीं। सम्पूर्ण वक्तव्यकें लिओं देखिये 'हरिजनसेवक', ता॰ २२-१०-'३८, पृ० २८७।

४. पूज्य वापूको तेज जुकाम होता था तव नाकका पानी गलेके भीतर अतर जाया करता था।

५. भादरणमें बड़ोदा राज्य प्रजा-मंडलके १९३८ के अधिवेशनके पूरु वापू अध्यक्ष थे।

६. अुस समय पू० वापूजी सरहद प्रान्तके प्रवासमें ये । अुतीका अुल्लेख है।

सुभाषवानुके वारेमें जो हो रहा है वह मेरे ध्यानमें है। अमीलिये मैने नार्य-समितिमें थोडीमी वर्चा तो की थी। परन्तु वापूकी राम मह रही कि जवाहरलालके आने तक राह देखें। असिलिओ में चुप रहा। अम बार अध्यक्षके चुनावमें कठिनाओं तो होगी हो। मैने 'हरिजन' में जो सुझाव दिया है अस पर वापू विचार करे। मेरी राम है कि जैसा हो रहा है वैसा होने देनेमें हानि है।

अब दोनों पत्रोंके अतार आ गये। बापूको फ़ुरसतमें पढ़ा देना। मेरा स्वास्थ्य सचमुच ही अताम रहना है। बापूको अस प्रान्तमें बाना चाहिये। मौलानाको साथ लेकर। बापके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल, पुरुपोत्तम विल्डिंग, ऑपरा हाजुसके सामने, वम्बजी

१३६

सेगाव-वर्षा, २८-११-¹३८

चि० मणि,

तेरा पत्र मिल गया। अितने कामोमें तू लिख सकेगी, यह आशा नहीं रखीं थी। दूर बैठा बैठा तेरे पराक्रम' देख रहा हू। तू पुण्यशाली है। तेरी हिम्मतके बारेमें मेरे मनमें कभी शका नहीं थी। दू जेलमें पयासमत्र न जाना। यह काम राजकोटबालोका है।

तेरा धरीर ठोक रहता होगा।

वापूके आशीर्जाद

मणिबहन पटेल, तारधरके पास, राजकोट

१ राजकोट सत्याग्रहके समय पूज्य बापूने मुझे राजकोट भेजा था। यह पत्र बहाके पत्ते पर लिखा गया है। बादमें मुझे वहा गिरपतार कर लिया गया था।

सेगांव-वर्घा, ५-१२-'३८

चि॰ मणि,

तेरा वर्णन विद्या है। तेरे कामका क्या पूछना? तू मेरा कहना मानकर शरीरमें तेल मलवाना अथवा स्वयं मलना। जो सिपाही अपना शरीर स्वस्य नहीं रखता वह सजाका पात्र होता है। असा ही होना चाहिये।

लोग अहिंसाका पाठ समझ गये हों और मारपीट वगैरा सहन कर लें, तो अनकी हार होती ही नहीं। महादेव यहीं हैं। मजेमें हैं। जानवृझ कर कम लिखते हैं। अस वार 'हरिजन' में वहुत लिखने दिया है। बैसा वार-वार नहीं होने दूंगा। कुछ भी जिम्मेदारी न होना अच्छा है। आजकल मेरा स्वास्थ्य तो ठीक ही है।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, तारघरके पास, राजकोट

१३८

सेगांव-वर्घा, २२-१२-'३८

चि॰ मणि,

्तू और मृदुला ठीक मिली हो। तेरे दोनों पत्र मिल गये। आराम अच्छी तरह लेना। तू कातती है यह वहुत अच्छा है। खुराक वगैराका हाल लिखा जा सकता हो तो लिखना। मृदुला समय किस तरह विताती है?

१. सूखी हवा और ठंडमें वच्चोंके गाल फट जाते हैं और खून निकलने लगता है। राजकोटकी सूखी हवा और ठंडमें मेरे सारे शरीरकी लगभग यही हालत हो गंजी थी।

२. श्री महादेवभाबीको अस समय रक्तचाप काफी रहता था।

महादेव कलकत्तेके पामकी गीशाला देवने ४ दिनके लिखे गरें हैं। २४ ता॰ को बा जानेकी समावना है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। बाको वहा आनेकी जिजाजन तो अभी नहीं मिली। क्या गुश्कुलके लिखे देहरादून जा रही हैं। मैं पहली जनवरीकी बारडोली जा रहा हू। तुझे और मृदुलाको बापके आसीवीं

श्री मणिवहन पटेल, स्टेट जेल, राजकोट (माठियावाड)

१३९

सेगाद वर्घा, १६-२-[/]३९

चि॰ मणि,

तेरा लम्बा यत और और दूसरे पत्र मिल गये। तूने जो जो कदम अठाये थुनमे में तो मुग्य हो गया हा। कहीं दोप निकालने जैसी बात नहीं। में देखता हूं कि तू सत्याग्रहका शास्त्र अच्छी तरह समझ गओ है। असलिओ विलक्ष निस्चिन्त हूं।

१ पूज्य वापू अज्ञाजत देते तमी वाहरका कोओ आयमी लडाओके लिओ राजकोट जा सकता था।

२ पूज्य बाको और मुझे पकडकर स्टेशनसे सीघे सणोसराके हाक-वगटेमें के जाकर रखा गया था। वह मकान सूना पडा था और वहा कोओ सुविधा नहीं थी। वहा पहुचनेके बाद पूज्य बाकी तबीयत विगड गओ। दूसरे दिन मुझे राजकोटके जेलमें हटा दिया गया। मैंने जब तक पूज्य बाके साथ मुझे था राजनीतिक के दियोंमें से पूज्य बाकों देखभाल कर सकनेवाली किमी बहाको न रखा जाय तब तक खाना लेनेने जिनकार कर दिया। जिस बीच पूज्य बाकों सणोसरासे अभ्वा हटा दिया गया था। तीसरे दिन मुझे भी त्रम्बा के गये। बहा पहुचनेके बाद पूज्य बाने मुझे खाना खिलाया। मृदुलाको पकडकर त्रम्बा लाये तो हम तीनो साथ हो गये।

मुझे राज्यकी ओरसे रोज तार नहीं मिलता। दो तीन आये थे। यहांसे रोज पत्र गये हैं। पहले तू बताती थी अुस पते पर लिखे थे। फिर मैंने राज्यसे शिकायत की कि मेरे पत्र क्यों नहीं मिलते, तब मुझे तार दिया गया कि पत्र फर्स्ट मेम्बरके मारफत भेजे जायं। अब मैं वैसा ही करता हं।

तुम्हारी तरफसे तो रोज मिलते ही हैं। अिसलिओ शान्ति है।
मृदुको अलग नहीं लिखता। वह चिन्ता न करे। क्या वहांका
भार कम है जो वह कांग्रेसका अठायेगी?

वापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन पटेल, स्टेट प्रिजनर, ठि॰ फर्स्ट मेम्बर ऑफ दि कौन्सिल, राजकोट (काठियावाड़)

१४०

सेगांव, १८–२-′३९

चि॰ मणि और मृदुला,

तुम दोनों वहां हो यह अश्विरवरका अनुप्रह है। तुम तीनों सबके साय हो यह मुझे अच्छा लगता है। परन्तु औश्वर जैसे रखे वैसे रहना है।

सुभाषवावू वगैराके वारेमें तुम्हें कुछ विचार करनेका नहीं है। बिसके लिओ तो तुम जेलमें ही हो। औश्वर मुझे जैसी सूझ देगा वैसा करता रहूंगा।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, कैदी, फर्स्ट मेम्बरके मारफत,

राजकोट

्राजसोट, ५–३–′३**९**

चि॰ मणि,

तू क्यों परेतान होती है? ये अनुभव क्या तेरे लिओ नमें हैं? अस मामलेमें तो तू भेरी बातासे बागे यह गभी है। मैं बगने आप बाया हू। धमें समझकर बाया हू। बीदवरकी प्रेरणाने बाया हू। जरा भी दुग्ती न होना। बावकल किमीको पत्र नहीं लिखता। बेक बाको लिखा या, यह तुमें लिख रहा ह।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल, फैदी, पस्ट मेम्बरके मारफत, राजकोट

१४२

मेवाग्राम-वर्षाः ४-५-'४०

चि० मणि,

तेरे मेजे हुओ आकडे अच्छे है। मुझे पत्र लिखनेकी अपेक्षा तुकाने तो अधिक अच्छा।

बापूसे पूछना कि वे अेक हजार मैं अुन्हें भेजूं या सीधे पृथ्वी-सिंहको। बापूकी तबीयत वसी रहनी है?

वापुके आशीर्वाद

श्री मणिवहन, मारफत सरदार पटेल, ६८, मरीन ड्राजिव, बम्बजी

सेवाग्राम-वर्षा, १३-६-'४०

चि० मणि,

यहां लालो तब व्यलवंतिसह के लिखे सेक सलार्मवाली घड़ी लेते लाना।

वापूके आशीवींद

श्री मणिवहन पटेल, मारफत सरदार पटेल, ६८, मरीन ड्रालिव, वम्बसी

१४४

सेवाग्राम-वर्घा, सी. पी. ७–५–′४१

चि० मणि.

नंदूबहन (कानूना) तेरी खूब शिकायत कर रही थीं। कहती थीं, हठ करके शरीरको गला रही है। अच्छी तरह खाती नहीं। मैं बिन्हें हारनेके लक्षण मानता हूं। सत्याप्रही अपना शरीर अच्छा ही रखता है। जिसल्जि मेरी खास सिफारिश है कि तू शरीरको सुवार।

सब वहनोंको आशीर्वाद। वहांके कामके समाचार मिलते ही रहते हैं।

मेरा स्वास्थ्य अुत्तम रहता है। वा दिल्लीमें है। वहुत दुवली हो गजी है।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, प्रिजनर, भरवडा सेण्ट्रल प्रिजन, यरवडा

१. वहांके अक आश्रमवासी।

सेवाग्राम-वर्घा, सी पी, १९-५-'४१

चि० मणि,

तेरा पत्र थाज मिला। आशा तो रखता हू कि यह तुते जेलमें ही मिलेगा। अक पत्र मैंने तेरे लिओ डाह्याभाशीको भेजा है। यह अच्छी खबर है कि तूने अपने स्वास्थ्यको सभाला है।

छ्टने पर तुझे थोडे समय बम्बओ रहना हो तो वहा रहकर मेरे पाम आ ही जाना। अहमदाबाद' के बारेमें मृदुला और गुलजारी-लाल आये हैं। यही हैं। बातें हो रही हैं। बापूको या तुझे जेलमें बैठकर असी बातका विचार ही नहीं करना चाहिये। अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं। जमनालालजीके बारेमें चिन्ताका विलकुल कारण नहीं। सब ठीक हो रहा है। मनु त्रिवेदी 'मजेमें है। बा खोडे दिनोमें दिल्लीमें आ जायगी। लीलावती (आसर) अनके साथ है।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, प्रिजनर, यरवडा मेंट्रल प्रिजन, यरवडा, पूना

१ अहमदावादके हिन्दू-मुस्लिम दगेका अुल्लेख है।

२ श्री गुलजारीलाल नदा। अहमदाबाद मजदूर-सघके मत्री।
कुछ समय वम्बशी राज्यके श्रममत्री। आजकल केन्द्रीय सरकारके
राष्ट्रीय योजना मत्री और राष्ट्रीय योजना-आयोगके अपाध्यक्ष।

२ पूनाके मेवामावी सञ्जन स्व० प्रो० जै० पी० त्रिवेदीके पुत्र।

सेवाग्राम-वर्वा, सी. पी., २०-५-¹४१

चि॰ मणि,

ं तुझे क्षेक पत्र लिखा है। जेलमें मिलना चाहिये। यह तेरे पत्रके अुत्तरमें है। पत्र कल मिला और रातसे पहले नहीं पढ़ सका।

तेरी तरह मैं यह कैसे मानूं कि यदि मैं अहमदावादमें होता तो जो दंगा हुआ वह न होता? आज किसीके लिओ असा कहना मुश्किल हैं। मैं ओश्वरके चलाये चलता हूं। असने मुझे यहां डाल दिया है। मैं जानता हूं कि गुजरातमें असे वहुतसे गांव हैं जहां मैं वस सकता था।

मनुभाओं वड़ी वहादुरी दिखला रहे हैं। कल ही सारा परिवार प्रार्थनामें आया था।

वा. तो आजकल नशी दिल्लीमें (निमोनियासे) रोगशय्या पर पड़ी है। बुखार आता है। लिखती है कि चिन्ताका कोशी कारण नहीं। कल मैंने लीलावतीको वहां भेजा है। जानकीवहन की तवीयत बहुत अच्छी कही जा सकती है। नंदूबहनने किस आवार पर खराब बताओं? वे पहले कभी नहीं धूमती थीं अुतना आजकल धूमती हैं। अच्छी तरह खाती हैं।

कन् की सगाओकी वात लटक रही है। अभी तो नहीं होगी, यही मानकर चलना है। लड़की भी अपने घर गओ है।

मीरावहन चोरवाड़में गरमी विता रही हैं। दुर्गावहन की तवीयत अच्छी होती जा रही है।

१. प्रो॰ त्रिवेदीके पुत्र। त्रिवेदीके देहान्तका अुल्लेख है।

२. स्व० जमनालालजी दजाजकी पत्नी।

३. श्री नारणदास गांबीका पुत्र।

४. स्व० महादेवभाओं देसाओकी पत्नी।

तू बहाना काम ठीक करके दो तीन दिन मेरे माथ रह जाय, यह मैं जरूर चाहता हू।

वापूके आशीर्वाद

चि॰ डाह्याभाजी,

मणिबह्न आये नव यह पत्र अुने दे देना।

वापूके आशीवदि

श्री डाह्यामाश्री पटेल, ६८, मरीन द्राश्रिन, बम्बश्री

680

सेवाग्राम-वर्घा, सी पी, ११-८-'४१

चि॰ मणि,

तेरा पत्र मिला था। किशोरलालभाओं ने तो जवाद दिया ही। मानुमती ना असा क्यो हुआ? डॉक्टर क्या कुछ भी नहीं कह सकते? बेबीका जीना कठिन है। जिये तो भी शायद दुवंलता रह ही जायगी।

वापूको मेरे पत्र पहुंचे क्या? जल्दी पहुचें अिसलिओ दोहरी सावधानी तो रखी थी।

तेरे परेशान होनेका कुछ भी कारण नहीं। हर हालतमें जेल जानेका धर्म थोडे ही है। बाहर वैठकर तू बापूका ही काम कर

१ आध्रमवासी स्व० किसोरलाल घ० मशरूवाला।

२ मेरी भाभी।

३ गुजरातमें बाढ-सकट आया था। असके लिजे चदा करनेमें मैं महादेवभाओं के साथ लगी हुओ थी! रही है। अस समय जेलमें जायगी तो मनको झुठा संतोप देगी। जानेका समय आने पर तुझे अेक श्रणके लिखे भी नहीं रोकूंगा। अभी तो जो गुजराती काम करें अुन्हें काम देते रहना है।

सुखे अच्छे अंजीर मुझे पांच पींड भेजना। वह व्याकरण मिल गया है। महादेव आ गये होंगे। यह वक किन्ना चंदा क्या

महादेव आ गये होंगे। अब तक कितना चंदा हुआ ? यहां ठीक चल रहा है।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल और श्री महादेव देसाओ, ६८, मरीन ड्राजिव, वम्बजी

43

१४८

सेवाग्राम, ३१-८-'४१

चि० मणि,

तुझे तो मैं जान-बूझकर नहीं लिख रहा था। अभी तुझे जेलमें नहीं भेजना है। समय आने पर तो भेजूंगा ही। तू वाहर रहकर भी काम तो कर ही रही है। तुझे भेजनेका समय जरूर आयेगा। अभी तो निश्चिन्त होकर सेवा करना और अपना स्वास्थ्य अच्छा कर लेना।

वापुके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, ६८, मरीन ड्रालिव, वम्बओ

(सेवाग्राम) ३–९–′४१

चि॰ मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने मारा ब्यौरा भेजा मो ठीक विसा।
मैने वल जमावाला का पत्र भेजा है। असके अनुसार तुरत अिलाज
करनेवा भेरा तो आग्रह है। त्वीयत बहुत गिर जानेके बाद जिलाज
वेवार भी जा सकता है। डॉ॰ नायूमाओं से चर्च कर छेनेकी मुझे
तो जरूरत मालूम होती है।

मुक्षे बरावर समाचार देती रहना।

बापूके जाशीर्वाद

श्री कणिवहन पटेल, ६८, मरीन ड्राजिब, वम्बजी

१५०

(महाबलेखर) २७-२-'४५

चि० मणि, 🔿

चि॰ डाह्याभाओं लिखने हैं वि तू वल छूट रही है। वे यह भी कहते हैं कि तेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। आनेकी सुबिधा हो तो तू यहा आ ही जाना। न आ सके तो पूरा पन लिखना। तुससे मिलनेको तो मैं अुत्सुक हू हो। बहुत समय हो गया है।

वापूर्वे आसीर्वाद

१ व्यक्तिगत सविनय भगके समय पू॰ बापूको स्वास्थ्यके कारण जेलसे छोड दिया गया था। अनुके स्वास्थ्यके ब्यौरेवार समाचार मैंने पू॰ वापूजीको लिखे थे।

२ बम्बजीके श्रेक प्राष्ट्रतिक चिकित्सक।

२ डॉ॰ नायूप्राओ पटेल, लेम॰ डी॰, वम्दशीके ओक प्रसिद्ध डॉक्टर।

महावलेखर, २२-४-'४५

चि० मणि,

तूने पत्र ठीक लिखा । मैं जानता हूं कि दूघ वगैराकी सुविवा वापूप्राप्त कर लेंगे । रे अिसलिओ चिन्ताकी बात ही नहीं।

तरा स्वास्थ्य विलकुल सुधर जाना चाहिये। तू अितने अधिक अेकाशन करती है, अिसके औचित्यके वारेमें मुझे शंका है। तेरे साथ मैंने चर्चा नहीं की, परन्तु मनमें यह वात वनी रही है। अिसे लिखनेका विशेष हेतु तो यह है कि अहमदाबादका काम निवटाकर तुझे यहां आ जाना है, यह याद रखना।

वहां सवको आशीर्वाद। डॉ॰ (कानूगा) अच्छे होंगे। वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन वल्लभभाशी पटेल, मारफत डॉ॰ कानूगा, जेलिसत्रिज, जहमदाबाद

१५२

महावलेखर, २७-४-'४५

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। पढ़ा। पढ़ते ही फाड़ दिया। भूलसे रख लिया था, परन्तु निजी देखकर तुरन्त ही मेरे पास पहुंचा दिया।

परन्तु तूने जो लिखा बुसमें निजी क्या है? मैंने तो तेरे सम्मानके लिखे और तुझे निर्भय करनेके लिखे ही फाड़ा है और जैसा ही तेरे पास भेज दूंगा।

१. पू॰ वापू अुस समय अहमदनगरके किलेमें नजरवन्द थे। अुनके स्वास्थ्यके समाचार मेरे नामके पत्रमें आये थे। वे मैंने पू० वापूजीको लिखे थे।

अपवास तो सायद हममें सबसे अधिक मैने किये होंगे। दक्षिण अमीकामें तो चाहे जिस बहाने कर डालता था। अक वर्षसे अधिक समय तक अंकारान भी किया। मेरी राय है कि अमिनी अपेसा अल्पाहार बहुत बड़ी चीज है। अपवासका स्थान है, मगर मृत्युके निमित्त हरिगज नहीं। जन्मके निमित्त क्यों नहीं ? मैने यह भी किया है, परन्तु विचार करके छोड़ दिया। अससे तू अपने अंकारानकी बात समझ ले। सरीर जीस्वरका घर है। असे ज्योका त्यों ही रखना चाहिये।

तरा सुधडपन क्या में नहीं जानता? मोतीलालजीने तो तुझे पहला नम्बर दिया था। परन्तु तुझे साधियोंके प्रति अदार रहना चाहिये। तू असा नहीं करती शिमलिजे तेरा पडोमी-धमं भग होता है। फिर तू अपना दोप मान हेती है। मानना या तो दोपको पकड रखनेके लिखे या दोपको निकालनेके लिखे होना है। क्या दू दोपको निकालना नहीं चाहती? तू अपनी सुधडता दूसरोको दे और अपनीकी रक्षा तो कर ही। मेरी तरह अपने लायक साफ कर हेना। जेलमें रहनर भी यह कला नहीं सीखी? महादेवके पाससे तूने क्या लिया? अनकी अदारता तूने देखी थी?

जितना तो तेरे लिखे बहुत हो गया। अगर पूरा जवाब मिल गया हो तो यहा आ जा। मेरे लिखे मत आना। आये तो घर्म समझकर और मनको अदार बनाकर या बनानेके लिखे आना। अगर मुझे बुरा लगा हो तो यहा आकर क्या लेगी? अपने दोपोको पहाडके समान मानें, और दूसरोंके दौप पहाड जैसे हो तो भी अन्हें राजकणके समान मानें तब मेल बैठेगा।

कुछ भी खानगी न रखनेका नियम बना ले तो असकी नकल भेज देता। बहुतोंके समझने लायक है।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहुन बल्लममाओ पटेल, मारफत डॉ॰ कानूंगा, अहमदाबाद

१ पडित मोनीरगळ नेहरू।

महाबलेश्वर, ३–५–'४५

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। वह स्पष्ट है।

अपवासके वारेमें तू लिखती है, अतः मैं सूचित करता हूं कि . युत्ते केवल शरीर-शुद्धिके लिये ही कर। तव तुझे खुद ही अपना पता लग जायगा। और अुसका आध्यात्मिक फल मिलनेवाला होगा तो मिल जायगा और तू वहम या आडम्बरसे वच जायगी। महादेव या वाके लिखे और कुछ नहीं तो अपवास तो करें, यह विचार विलकुल गलत है। वे जानते हों तो सुन्हें क्लेश ही हो। प्रियजन चल वसें तव अनके लिओ अनका प्रिय और कठिन काम हम करें। विसिल्जि महादेव जैसे मीठे वननेकी कोशिश करें। वाके समान आस्तिक वननेका प्रयत्न करें। ये दो अुदाहरण तो जवान पर आ गये, सिसलिओ दे दिये। दूसरे और दिये जा सकते हैं। शरीर केवल थीरवरके रहने या आत्माको पहचाननेका घर है यह जान लें, तो सव कुछ अपने आप ठिकाने आ जाय। अँसा हो जाय तो घर्मके नाम पर चल. रहा ढोंग मिट जाय। तेरा जीवन सरल है बिसलिओ और वहुतसे प्रलोभनोंको तू पार कर सकी है अिसलिने मैं अितना परिश्रम तेरे लिखे कर रहा हूं। तू सव तरहसे अूंची अुठ जाय तो मैं जानता हूं कि तू वहुत अधिक काम कर सकती है।

बिसी कारणसे तुझे यहां अयवा आश्रममें खींच लाना है। वापू स्वयं यही चाहते हैं, लिसलिओ तुझे खींचनेका मनमें अविक अुत्साह होता है। असा हो तब तो तू भी नहीं चाहेगी और मैं भी नहीं चाहंगा कि अक घड़ी भी तू अुन्हें छोड़कर कहीं रहे। और तू मेरे आसपास होगी तो तुझमें सहनशीलता बढ़ेगी, क्योंकि यह स्थल असा है जहां अनेक स्वभावोंके अनुकूल वननेकी और अलिप्त रहनेकी जरूरत है। अर्थात् हम गुणग्राही बनकर रहें। दूसरोका अवलोकन करके हम अनके गुणोका अनुकरण करे, और अवगुणोको सहन करें, वयोकि अवगुणोको दूर करनेका सबसे अच्छा अपाय यही है। अिसलिओ जल्दी आना।

नदूबहन, दीवान मास्टर, कानूगा वगैराके समाचार तूने भेजे

यह ठीक किया।

अव तो सवेरा हो गया और रोशनी बुझा रहा हू, असिलिओ बस।

वहा सबको आसीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

चि॰ मणिबहन पटेल, मारफत् थी डाह्यामासी पटेल, मरीन लांकिन्स, वम्बकी

१५४

महाबलेश्वर, ५-५-'४५

चि॰ मणि,

तूने अच्छा पत्र लिखा। जो खबर तूने दी वह और कोशी मुझे न देता। सायका पत्र कानजीभाओ^र को दे आना। अब तो तू यहा आनेवाली है, जिसलिओ अविक नहीं लिख रहा हू। क्ल नरहरि (परीख), मणिलाल (गाधी), कमलनयन और सत्यनारायण आये थे।

१ स्व० जीवनलाल दीवान।

२ श्री क्न्हैयालाल नानाभाओ देनाओ। गुजरात काग्रेस समितिके १९४६ से १९५६ तक अध्यक्ष। १९४६ से सविधान-सभाके सदस्य। असके बाद १९५६ तक छोत्रसभाके सदस्य।

३ श्री जमनालाल दजाजके पुत्र।

४ दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समितिके मुत्री।

लाज मुन्ती आयेंगे। कमलनयन और मुन्ती तो जैसे आये वैसे चले जायंगे।

तुम सबको

वापुके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, मारफत श्री डाह्याभाओ पटेल, ६८, मरीन ड्राअिव, वम्वओ

१५५

(सेवाग्राम) २५-७-'४५

चि० मणि,

अब तू क्यों पत्र लिखने लगी? मुझे आशा भी नहीं रखनी चाहिये।

यह तो तुझे पुष्पा के वारेमें लिख रहा हूं। वह बहुत दुःख पा रही है। असने मुझे मिलनेको लिखा है। परन्तु तू अससे मिलने जायगी तो ठीक है। वह अपने घर तो होगी ही। पता है: नअी हनुमान गली, शरडाकी चाल, दूसरी मंजिल, कमरा नं० १२, मणिलाल पोपटलाल दोशीके मारफत।

ं तेरा स्वास्य्य ठीक होगा।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, मारफत श्री डाह्याभाओ पटेल, ६८, मरीन ड्राअिव, वम्बओ

१. वम्बआकी यह लड़की घरसे भागकर पू० वापूजीके पास चली गंबी थी। बुन्होंने असे समझांकर घर वापस भेज दिया था। पर वह फिर आश्रममें लीट आशी। बाजकल श्री भणसालीके पास आश्रममें रहती है।

पूना, २७-११-४५

चि० मणि,

तेरे दो पत्र मिले। कानजीमाजीके नामका पत्र तेरे पास भेज रहा हु। तू अपनी डाक्के साथ भेज देना।

यरवडा पैक्टके धारेमें बेक समालका विचार कराना। पैक्टमें दम वर्षकी बात है। परन्तु वह १९३५ के कातूनमें नहीं है। तो अपका अमल कानूनमें कराया जा सकेगा या नहीं? पकवामा विचार करें। कौमलमें मिलना हो तो मिलें। मेरी राय स्पष्ट है। कानून सहायता न मी करे। राजनीतिक रुपमें लडा जा सकता है, जिस विषयमें दो मत नहीं हा सकते। यह जरूर सोचना है कि जिस समय यह लडाओं छेडी जाय या नहीं। परन्तु जिसकी चर्ची तुम्हारे यहा आने पर कर लेगे। वापके आसीर्वाद

धी मणिवहन पटेल, ६८, मरीन ड्राबिद, वम्बजी

१५७

[यह पत्र पू० बापूजीने मोनमें लिखा या।]

(वाल्मीकि मदिर, नजी दिल्ली, १९४५ के बाद)

नक्ल करनेका काम तो बनूको सींपा है। मैने नुझसे कहा या कि करूने लिखवाना। तेरी की हुओ नक्ल है, जिसलिओ जिसे पास करता हू। और यही दूगा। परन्तु जिसमें दोष है। हमेशा हाशिया जरूर छोडना चाहिये। रोज पत्र आने हैं। अनुका तू अवलोकन करती

श्री मगण्डास पक्वासा बम्बजीके लेक सालीसिटर। बम्बजीकी कॉमिलके अध्यक्ष थे। आजक्ल मध्यप्रदेशके गवर्नर।

हो तो पता चलेगा कि तैयार किये हुओ पत्रोंमें हाशिया जरूर होता है। अब दूसरा मत लिखना। यह तो भविष्यके लिओ तुझे शिक्षा है। यह तो मैने तुझे सिर्फ बता दिया।

१५८

सेवाग्राम, १४–२–'४६

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने बच्छे समाचार दिये हैं।

'धारासमानो मोह'' (विधान-सभाक्षोंका मोह) गुजरातीर्ने होने पर भी सबके लिखे है।

अखवारकी कतरन लीटा रहा हूं। तेरे मुझावों पर जितना अमल हो सकेगा करूंगा।

तू अपना स्वास्थ्य संभालना। अब तो जल्दी ही मिलना है, निसल्जि अधिक नहीं लिखूंगा।

चापूके आगीर्वाद

१५९

26-3-183

चि० मणि,

यह पत्र देखना। सरदारको पड़ाना हो तो पड़ा देना। गमय न मिले तो यह बात ही मत करना। तो होना है वह टी जायगा। वाउके लागीवीर

अखद का पत्र हीटा देना या भेज देना।

१. देशिये, 'हरिजनमेदन', १०-२-'४६, प्०८।

२. श्री अववरमाधी नावा। नपार्नीके राविसी केताणम आश्रमनियामी। आवरक लोजसभागि मदस्य।

६४'--६--१६ रेलमें ४-३० बने

चि॰ मणि,

गायका पत्र पटकर जो करना हो सो कर। तेरी अनन्य पिनृमक्तिने तेरे हाथोमें महान सेवा करनेका अवसर दिया है। जिसका जो जुपयोग करना हो करना।

सावमारो ^१ के बारेमें जो पत्र मैने लिसा असमें कुछ तस्य है क्या ? अन लोगोने ब्यौरेकार लिसा है।

सायका पत्र राजकुमारीको देना।

वापुके आसीर्वाद

श्री मणिवहन,

ठि० मरदार पटेल,
१ बौरगजेव रोड,

नजी दिल्छी

१६१

मोदपुर, ११-८-¹४७

चि० मणि,

सायने पत्र पर तो डाह्याभाओको हस्ताक्षर करने हैं, जैसा लगता है। तू देख लेना। मुझे तो जिस विभागना पता भी नही। शायद आश्रमके हस्ताक्षर चाहिये। तू देख लेना और फिर खो करना हो वह लिखना।

नाइमीरने बारेमें तो मैं सरदारको लिख चुना हूं। वह मिला होगा। लम्बा वयान जो जवाहरलालनो भेजा है वह सरदारने लिखे भी है।

१ निर्वासित-सम्बधी पत्र।

यहां तो समस्या अलझी हुआ है। आशा तो है कि सुलझ जायगी। मैंने कल भाषणमें जो कहा अससे पता चलेगा कि मुझे यहां क्यों रुकना पड़ा।

प्रफुल्ल वगैरा मिलते रहते हैं।

खाकसार लाहौरमें मिले थे। अन्हें पत्र दिया था सो मिला होगा। कामसे सांस लेनेकी भी फुरसत मिलती है या नहीं?

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, ठि० सरदार पटेल, १ औरंगजेव रोड, नजी दिल्ली

१६२

कलकत्ता, १३–८–′४७

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। हस्ताक्षर करनेके कागज मैने तुझे ज्योंके त्यों वापस भेज दिये। मैने असा समझा है कि अन पर मेरे हस्ताक्षरोंकी जरूरत नहीं है।

वरसातके विना क्या होगा १? यह स्वतंत्रता महंगी पड़ती मालूम होती है।

मालूम होता है सरदारके स्वास्थ्य पर अिस कामका पूरा-पूरा बोझ पडेगा।

सायका पत्र पढ़कर सरदारको पढ़वा देना। अनका अक भी मिनट लेना चोरी करने जैसा लगता है। वापूके आशोर्वाद

मणिवहन पटेल, नजी दिल्ली

गुजरात, काठियावाड़, कच्छमें अस साल भारी अकाल था।
 १४३

्कलक्ता) २६–८–′४७

चि॰ मणि,

तुझ पर मुझे दया भावी है। परन्तु दया कैसी ? तू भार अुठाने योग्य है। अिमलिजे अुठाती रहना और सरदारका भार कुछ हलका करना।

रामस्वामी को बहुत चोट दाओं, यह सो नुझसे सुना। थेक पत्र असा था जरूर, परन्तु मैंने अप पर विश्वाम नहीं किया था। मैंने तो पत्र लिखा ही नहीं था। अब लिख्गा।

मायके पत्र पहुचा देना।

वापुके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, नग्री दिल्ली

१६४

(बलकत्ता)

30-6-180

चि॰ मणि,

सव पत्र साथमें है। ययास्थान पहुना देता। तुझ पर हदने उधादा नाम तो नहीं लाद रहा हूं ? जिसी तरह सब पत्र जल्दी पहुचा सकता हूँ। जवाहरलालवाला पत्र सरदारको पडवानर जिस तरह जल्दी मिले जुस तरह मैज देता।

बापूके जासीर्वाद

श्री मणित्रहन पटेल, नयी दिरली

१ त्रावणकोरकी श्रेक समामें सर सी० पी० रामस्वामी पर हमना हुआ या और अन्हें गभीर चोट आशी थी।

(कलकत्ता) १-९-'४३

चिरू मणि,

तुने कामका भार नहीं लगता, यह अच्छा है। कोश्री तो सरदारके पास पूरा हाय बंदानेवाला चाहिये।

भेरा पत्र तू अग्हें फुरसत्में पड़ाना।

नुगीला ' का असे भेज देता।

यहां तो मन्त्र रातको अकल्पिन बात हो गयी है। जिन्हें छुरा लगा कहा जाता है अनुहें छुरा ज्या ही नहीं। दो आदमी लड़े तो जहर पे। शुनमें यह हार गया। अधिक पता अब चलेगा। अभी नहाकर आया और यह लियने बैठा हूं।

वापूके आशीवदि

श्री मणियहून पटेल, नभी दिल्ली

१६६

(कलकत्ता) २–९–'४७

चि० मणि,

मत्र पत्रोंकी व्यवस्था कर देना। तू तो मेरे अपवासको अिशारेमें समस गओ होगी। राजाजीने बहुत मायापच्ची की, परन्तु जैसे जैसे वे देलील करते गये वैसे वैसे मैं मजबूत होता गया। पंद्रह दिनकी दोस्ती झूटी ही थी क्या?

वापूके आशीर्वाद

श्री मंणिवहन पटेल, नश्री दिल्ली

पू॰ वापूजीके मंत्री श्री प्यारेलालको बहुन डाँ॰ सुजीला नैयर।
 दिल्ली विश्वान-सभाकी सदस्य थीं। बाजकल अध्यक्ष।

२. कलकत्तेमें थोड़े समय जो जान्ति रही थी वह।

चि॰ मणि,

आज वहारे लिजे रवाना हो रहा हू, असिलिजे अवना ही।
नेरा हदन तो ठीन है, मगर अममें सार नही है। अतने दवानने बाद
दिन्हीं तो आना ही चाहिंगे। वहा सरदार और अवाहर निश्चय
नरेंगे कि बग किया जाय। मेरे रहनेकी व्यवस्था जुन्हें जहा करनी
हो वहा करें। विडला हाजुमका मैं वहिष्कार नहीं करता। परनु
आराम मिठे या न मिले मुझे मगी-निवास अच्छा लगता है। मरदारकी
आवक्ष भी मुझे वही रखनेमें है। रानको वहा कोशी न आ मके,
जिममें हवें नहीं। गाडी दिल्ली अवन्त्रेग। अजहूष्ण में वह देना।
वार्के जानीवाद

श्री मणिवहत पटेल, नजी दिल्लो

१६८

(विडला भवन, नऔ दिल्ली) २९–९–'४७

चि॰ मणि,

मायमें नारणदान गाधीका पत्र है। अन्हें तार देकर मेरा जवाब मिलने तक रोक दिया है। परन्तु क्या करना चाहिये, यह सरदारने पूछकर मुझे बताना।

१ दिल्लोरे थी वजहरण चारीदाला। पू० बापूजीके अंक भक्त।

दूसरी चीज पट्टणीका तार है। वहां भी यही आया होगा। शुसका क्या करना है? मैंने समझा है कि शामलदास जो कुछ करता है वह सरदारकी सहमतिसे करता है। शिसका असर भी पूछ कर वताना।

दोनों चीजें वापत भेज देना।

वापूके आशोर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, मारफत सरदार पटेल, नजी दिल्ली

१६९

न० दि० २९-१२-'४७

चि० मणि,

पत्रवाहक सेवकराम हरिजनोंके गुद्ध सेवक है। सब हरिजनोंको सिवसे लाना ही चाहिये और वम्बजी क्षिलाकेमें कच्छ, काठियावाड, गुज-रात, शुदयपुर, जीवपुर वगैरामें बसा ही देना चाहिये। जिसके लिजे सरदार जितना कर सकें अुतना करें।

वापूके आशोवदि

श्री मणिवहन पटेल, मारफत सरदार पटेल, नजी दिल्ली

१. भावनगरके श्री अनंतराम पट्टणी।

२. स्व० शामलदास गांघी। पू० वापूजीके भतीजे।

(विडला भवन, नओ दिल्ली) १३-१-१४८

चि० मणि,

आज मरदारके साथ बात हुओ। जिसलिने अब और नहीं। मुझे बहावलपुरके लोगोंमे मिलना है। फिर बुलाजूगा । मुझे गल्त-फहुमी कैंमे हुआ, यह समझमें नहीं आता। सुसे ठीफ करुगा।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल, नश्री दिरली

१ बहावलपुर राज्यके, जो पाकिस्तानमें चला गया है, सरकारी नौकर।

पूर्ति

डाह्याभाओं पटेल तथा अुनके पुत्रको

१

यरवडा मंदिर, ७-८-'३२

चि॰ डाह्यामाओ,

महादेवके चश्मेका अक कांच टूट गया है, अिसिलिओ वे परेशान ब्रहोते हैं। यहां वह कांच मिल नहीं सकता। यह चश्मा पिछले साल जून-जुलाओं हों असिकरने ' फोर्ट-स्थित व्हिटनकी कंपनीमें वनवाया था। असका नम्बर व्हिटनके यहां जरूर होगा। लेकिन वहां न मिले तो डॉ॰ हीरालाल पटेले, जिन्होंने महादेवकी आंखोंकी परीक्षा की थी और नम्बर विया था अनके यहां यह नम्बर मिलेगा। अगर भास्करसे मिला जा सके तो अनसे मिलकर व्हिटनकी टुकानसे यह नम्बर निकलवाना और चश्मा वनवाकर तुरन्त भेजना। अस चश्मेके कांच और डंडीका माप भी शायद अनके वहां होगा। परन्तु न हो तो माप साथवाले पत्र पर भेजा है। भास्कर न हो तो डॉक्टर हीरालालसे , मिलना वे वनवा देंगे। भास्करको पिछले सप्ताह महादेवने अक रिजस्टर्ड पत्र भेजा था। वह अन्हें मिला नहीं दीखता। करमचन्दकी पत्नी सब विलकुल अच्छी होंगी।

१. डॉक्टर भास्कर पटेल, जिन्होंने वम्बजीमें लड़ाओं के दौरानमें कांग्रेसका कामचलाजू अस्पताल चलाया था। अनकी सेवाओं वोरसद प्लेग निवारण कार्यमें वहुत अपयोगी सिद्ध हुओ थीं। १९५१ से १९५६ तक वम्बजीकी विद्यान-सभाके सदस्य। १९५६ से वम्बजी राज्यके मद्यनिपेध विभागके अपमंत्री।

२. वम्बजीके आंखोंके अक डॉक्टर।

मणिबह्नका पत्र अभी जिन दिनोमें तो नही आया। महादेशका नाम चरमेके जिना बन्द हो गया है। अमिलिओ जन्त्री भेज देना। वादा मजेमें होगा। हम तीनी मजेमें हैं।

बापूके आसीर्वाद

आज वापूने डॉ॰ अन्सारीको तुम्हारे पने पर अक पण लिया है। वह अन्हें पहुंचा आना। वे ११ तारीखको अम्बजीसे रवाना होनेबाले हैं, असलिये नौ दम तारीखको तो बम्बजीमें ही होंगे।

अस्मान सोभानी वे यहा ठहरे होंगे। नहीं वो जहां ठहरे हों वहारा पता अस्मानने यहाने मिलेगा। तलारा करने पत्र पहुंचा जाना। वापके आगीर्वाद

' नि॰ डाह्यामात्री पटेन्न, रामनिवास, पारेश स्ट्रीट, बम्बजी-४

₹

य० म० २६-१०-1३२

वि॰ हाह्यामाओ,

मिणवहनका पत्र भी अब तो सुम्हे नियमित भिलना सभव है। शिमिल्जे तुम्हारे पढ़ने या सुननेकी सामग्री बढ़ गंभी। परन्तु माहित्य पढ़नेके साय अब तुम्हारे बिस्तर छोड़नेका ममग्र भी नजदीक आता जा रहा है न ? फिर भी बिस्तर छोड़नेकी अभीरता न होंगी चाहिये। यह तो जानते हो न कि बिस्तरमें भी सेवा हो सकती है?

बापुके आशीर्वाद

श्री बाह्याभाजी पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, बम्बजी-४

१ बम्बओंके अंक मिल-मालिक

3

१९-११-'३२

य० मं०

चि॰ डाह्याभावी,

तुम्हारे स्वास्थ्यके समाचार रोज मिलते रहते हैं। असी व्यावियां भी हमारी परीक्षाके लिखे आती हैं। तुम खूद धीरजसे सहन कर रहे हों, असा भाओं करमचन्द लिखते हैं। तुमसे यही आशा रखी जा सकती है। मणिवहनकी चिन्ता न करना।

प्रभु तुम्हारी रक्षा करेगा ही।

वापूके आशीकदि

श्री डाह्याभाओ पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, वम्बओ-४

४

य० मं० २२-११-'३२

चि॰ डाह्याभाओ,

देवदास तुम्हारे कुगल-समाचार देता है और कहता है कि हमारे पत्र तुम्हें रोज मिलें तो तुम्हें प्रसन्नता होगी। हम तो जान-बूमकर तुम्हें नहीं लिखते, यद्यपि रोज आगीर्वाद तो जाते ही है। रोज तुम्हारा स्मरण होता है। अब पत्र भी मिलेंगे।

वापुके आगीर्वाद

श्री डाह्याभाकी पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, वम्बजी – ४

यरवडा जेल, २५–११~'३२

चि॰ डाह्यामाजी,

मि॰ नटराजन जिन्तते है

"I have every hope and pray that Dahyabhai will pull through the remaining few days without complication. His age and active habits and his naturally strong constitution are most potent assets. He is a favourite at our home, having been with us nearly all the time when he was living with his uncle. He calls Kamakoti¹ 'Akka' like her brothers and sister and is always a welcome visitor without any ceremony² "

अन्हें मैंने पत्र लिखा था। असके अत्तरमें अन्होंने जो पत्र लिखा या असीमें से पूपरका अदरण दिया है। कल भाओं करमचन्दका पत्र देरसे मिला था। मैं अस्पृदयनाके वारेमें आये हुओ लोगोंके साथ व्यस्त था, असिन्जि कल नहीं लिख सका। मालूम होना है तुम्हारा बुखार घीरे घीरे जुनरता जा रहा है। अच्छी तरह बाराम लिया जाता हो और खाने-पीने वगैराके नियमोमें भूल नहोती हो तो टाअफाजिड

१. स्व० नटराजनकी लडकी।

र मुझे पूरी आसा है और मैं प्रायंना करता हू कि, बाकी के थोड़े दिन डाह्मामाओ विना किसी खुपद्रवके निकाल देंगे। अनकी अमर, सिक्य जीवन तथा स्वाभाविक रूपमें मजबून दारीर अनके हकमें हैं। हमारे घर वे सबके लाडले हैं। जब वे अपने चाचाके यहा रहते थे तब अधिक समय हमारे यही बिताने थे। कामकोटीको अमके भाजियो और बहनके साथ वे भी 'अक्का' वहने हैं। हमारे यहा वे घरके सदस्य जैमे ही हैं।

वुखारसे फायदा ही होता है, क्योंकि शरीरसे सब जहर निकल जाता है।

. तुम आनन्दमें होगे।

वापूके आशोवदि

श्री डाह्याभाओ पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, वम्बओ-४

६

य० मॅ० २७-११-1३२

चि॰ हाह्याभाओं,

माज तुम्हारी तवीयतके और भी अच्छे समाचार हैं।

कल मैं लिख चुका हूं कि वीमार भी सेवा कर सकता है। वह जिस प्रकार मिली हुनी शान्तिका अपयोग भगवानका चिन्तन करनेमें करे, अपने कोधकों, अपनी अधीरताकों रोक कर सेवा करनेवालोंमें प्रेम फैला कर करे। पश्चिमका और जेक यहांका अुदाहरण मेरे सामने हैं। फ्रांसकों अके अठारह वर्षकी लड़कीने अपनी अत्यंत गंभीर बीमारीमें अपनी नुगन्य खितनी फैलाओं कि सब अुसे 'सेण्ट' की पदवी मिली हैं। जुसने तो अखण्ड निद्राका सेवन किया।

पोरवन्दरके पास विल्लाके लाग महाराजको काँद्र हो गया था। वे विल्लाके शिवालयमें आसनवद्ध होकर बैठ गये। नित्य रामनाम जपते। रामायण पढ़ते। अन्तमें रोममुक्त हुने और प्रत्यात कथाकार बने। अन्हे मैने देला था। अनको कथा मुनो थी।

जो भीदवर-भक्त है वह तो बीमारीका भी सदुपयोग कर सकता है। बीमारीसे हारता नहीं।

बार्क आसीर्वाद

वि॰ डाह्यामानी पटेल, गर्मानवास, पारेन स्ट्रीट, सण्डहस्ट रोड, बस्त्री - ४

13

य० म० १७—१२—'३२

चि॰ डाह्यानात्री,

तुम्हारा नाम अभी पूरा नहीं हुना, परन्तु तुम हिम्मत नहीं हार
सनने। रोगना मिटना रोगी पर आधार रसता है, यह जानते होने।
रोगी कभी निरास होता ही नहीं और नधीर भी नहीं होता। जब तक
दु स भोगना हो तब तक भोगे, परन्तु अमने साथ जूझता रहे। गभी
दवानों और मारी सुरानोंने रामनाममें अधिव शक्ति है, यह अनुभव न
निया हो तो कर देखना। अमनी शक्ति विद्युत-शिनने अधिक है। वह
तुम्ह शान्ति और अुत्साह देगा। तुम पत्र लिखनेना लोग रसते दिखाओ
देते हो। यह लोभ छोडना चाहिये। तुम्हारा वर्तव्य अस ममय पूर्ध
आराम लेना है। विनोदमें दो बानय मित्रोंको या हमारे जैसे बुजुगोंको
लिखाये जा सनने हैं, परन्तु दफ्तम्के कामना विचार नहीं किया जा
सन्ता। जिनना मान लेना। औरवर तुम्हारा कन्याण ही नरेगा।

यह पत्र मैंने बायें हायसे लिखा है।

बापूके आसीर्वाद

डाह्याभाओं व० पटेल, रामनिवास, पारेच स्ट्रीट, बम्बओं – ४

(य० मं०) २०-१२-'३२

चि॰ डाह्याभाकी,

लम्बा पत्र लिखना था, परन्तु समय नहीं रहा। अब तो जल्दी अच्छे हो जाना है। वा, वेलावहन और वाल मेरे साय वैठे हैं। वापूके आगीर्वाद

श्री डाह्याभाओ पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, वम्वओ – ४

९

(य० मे०) २२-१२-'३२

चि॰ डाह्यामाञी,

तुम्हारे विषयमें अभी तो असे समाचार आ रहे हैं कि मेरे लिखनेकी कोओ वात रहती नहीं। फिर भी अितनासा लिखता हूं कि न तो वीमारीका विचार करना, न दफ्तरका। हो सके तो केवल ओश्वरको ही याद रखो और गर्दन असके हाथमें सौंप दो। वह भजन याद है? "मारी नाड तमारे हाथे हिर संभाळजो रे।"

वापुके आगीर्वाद

श्री डाह्याभाकी व॰ पटेल, र रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, वम्बकी – ४

^{&#}x27; १. श्री लक्ष्मीदास बासरकी पत्नी।

२. हे हरि ! मेरी गर्दन तुम्हारे हायमें है, जिसकी रक्षा करना।

पर्गेनुडी, पूना, २६-८-′३३

वि॰ डाह्यशमाओं,

तुम्हारी ओरमे नाओं भी पत्र नहीं, यह बादनर्पकी बात है। नाभिक्ष अन्तिम बार बज गये थे? यहांके जो समावार हो वे देना। मणिबहनरी क्या राजर है? अनके गाय कीन हैं? अनका स्वास्य कैमा रहा। है? अनमें कोओ मुलाकात करना है? तुम्हारा बाम कैमा चल रहा है? बाबारा क्या हाल है? मुज़में रोज रोज गक्ति आती जा रही है। विलाका बिलकुल कारण मही।

बापूके बातीयाँद

22

घारा, १४--११-⁷३३

वि॰ हाह्याभार्थी,

तुम्हारी भावना और तुम्हारे दुन्तकों में सममता हूँ। मेरी भावना और भेरा मानम तुम मणिबहनने पत्रमें जान सत्रोंगे। जहां में अपग हों जात्र यहां क्या वरू ने मिपाही हे हायसे तलवार छीन को तो जैसे वह वेवार हो जाता है बैसे मेरे हायसे सवितय भग छीन हो तो में नितम्मा यन जात्रूगा। मेरा सारा जीवन प्रतिन्ना वद्ध रहा है। मेरी प्रतिन्ना तो यह है कि या सो मुने जेलमें रहना चाहिये अथवा बाहर रहू तो मारी यिन हरिजन-वायमें लगाना चाहिये। दूसरे वामोंगें में अपना मन भी नहीं लगा सवता। विद्वलमाओंके दोष तो अनके साथ गरे। अनके गुण बहुत थे। अनका समरण हम सबको मुर्सित रहना है।

१ स्व० नाका (श्री बिद्वलभाओ) की दमशान-यात्राके अवसर पर पू० वापूजी बम्बओं नहीं गये थे। यह पत्र जुस प्रसमको ध्यानमें प्रस कर लिखा गया है।

और तुम्हें शायद पता नहीं होगा कि विट्ठलभाओं मैंने पत्र भी लिखा था और अनका मेरे पास मीठा जवाव भी आया था। मेरा निजी सम्बन्ध तो टूटा ही नहीं था। मतभेद सम्बन्धों नें वाबक नहीं होते। मुझे तुम्हें यह समझानेकी जरूरत भी नहीं होनी चाहिये। परन्तु मणिवहन लिखती हैं कि तुम्हें और दूसरे भतीजोंको भी कुछ दुःख हुआ है। असिलिओ अितेना समझानेका प्रयत्न किया है। बल्लभभाओं के बाहर न होनेसे मुझे बड़ी कठिनाओं होती है। वे बाहर हों तो पारि-वारिक गलतफहमियां दूर करनेका काम मैं अन पर ही छोड़ दूं। अनके जलमें होनेसे मुझ पर गलतफहमी दूर करनेका दोहरा भार रहता है। अब भी कुछ दुःख रह जाय तो मुझे दिल खोलकर लिखनेमें जरा भी संकोच न करना।

पत्र वर्घा लिखना।

वापूके आशीर्वाद

श्री बाह्याभाकी वल्लभभाकी पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, ' वम्बकी – ४

१२ ् .

(चिललदा)

१९–११–'३३

चि॰ डाह्याभाओ,

तुम्हें मैंने पत्र लिखा है। वह मिला होगा। सायमें गोरघनमाओका पत्र' है। असे पढ़कर अुन्हें देना। तुम्हारा समाधान न हो तो मुझसे

१. भाओ गोरधनभाओ,

मणिवहन लिखती हैं कि इमशान-कियाके तमय मैं वम्बजी नहीं आया, जिससे तुम्हें दु:ख हुआ है। जेक प्रकारते यह मुझे अच्छा लगता है। तुम्हारा दु:ख सूचित करता है कि तुम मुझे कुटुम्बियोंमें मानते हो। असा माननेका तुम्हें अधिकार है। परन्तु मुझे कुटुम्बी मानते लडना तुम्हारा धर्म है, यह न भूलना। वा और मणिके पत्र अुन्हें पहुचा देना।

वापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाओ पटेल, रामनिवास, पारेल स्ट्रीट, वम्बजी – ४

हो तो जहा मेरा काम समझमें न आये वहा मुझे पूछना चाहिये। मेरे न ञानेमें विट्ठलभाजीके साथ मेरे मतभेद्रोका जरा भी स्थान नहीं था। मेरे न जानेका कारण मेरी आजकी परिस्थिति ही थी, मैं केवल हरिजन-कार्यके लिजे ही जेलसे बाहर रहा हू। यह कार्यक्रम बनाया जा चुका था। मरकारी अकुश जो सहन करने योग्य न हो असे महन करनेको मै तैयार नही हाता। दूनरी तरह भी मुझे वहा अपना कोजी अपयोग नही जान पडा था। मृत्यु-सम्बन्धी अस्तर-क्रियाके बारेमें मेरे विचार भी मुझे अनुपयोगी बना देते । जिस प्रकार जिस दृष्टिसे देखें बुसी दृष्टिसे यह दिखेगा कि मेरा वहा आना जरूरी नही था। अितना ही नहीं, विलक जनुचित था। कुछ वार्ने जो हुन्नी अन्हें मैं तो होने भी न देना। तुम्हें तो जितना ही बता देना काँफी होना चाहिये कि विद्रलभाश्रीके साथके मेरे (मत) भेद असमें जरा भी कारणभूत नहीं थे। तुम नहीं जामते होंगे कि अुनकी बीमारीके समाचार आने पर मैंने अुन्हें पत्र लिखा था। और अुसना अुन्होने लवा और मीठा अुत्तर भी मेजा था। बीमारी बहुत बढी तब तार भी दिया था। अुमका भी जवाब मिला था। और तुम्हे भी मैंने सारी वातें वताते रहनेको लिखा या । तुम्हारे तारको मिल-मालिक-सघ (अहमदाबाद)के मत्री गोरघनभाओका समझ कर अुन्हे कृतज्ञताका पत्र मैंने लिखा। अन्होंने समाचार दिया कि तार भेजनेवाले वे नहीं थे। मुझे आसा है कि अितनी सफाओं तुम्हे शान्ति देगी। न दे तो पूछ छेना।

(य० मं० नवम्बर, १९३३)

चि॰ डाह्याभाओं,

तुम्हारा पत्र मिला था। प्रस्तु कामके कारण समय पर अत्तर नहीं दे सका। मणिवहनसे अभी तो हर वार मिल आना ही ठीक है। जाओ तब अससे कहना कि अक दिन भी असा नहीं जाता जब मैं असका विचार न करता हो अूं। परन्तु चिन्ता तो रत्तीभर नहीं करता क्योंकि असकी सहन-शक्ति और बृढ़ता पर मेरा पूरा भरोसा है।

वापूके पास जाओ तव कहना कि मैंने पत्र लिखे विना अेक भी सप्ताह नहीं छोड़ा।

काका का वसीयतनामा पढ़ लिया। असे वम्बजीमें स्वीकार करानेमें कठिनाओं तो होगी ही। परन्तु मेरी राय यह है कि असके वारेमें हमें कुछ भी नहीं करना है। जो जाना हो वह भले ही सुभाप वोसके हाथमें जाय। मैं मानता हूं कि वे जो कुछ करेंगे वह सार्वजिनक अपयोगकी दृष्टिसे ही करेंगे।

⁶वावाके समाचार देना । मैं ठीक हूं।

वापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाक्षी वल्लभभाक्षी पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, वम्बक्षी – ४

१. स्व० विट्ठलभाओ।

(कालीकट) १३–१–'३४

चि॰ डाह्यानाओं,

तुम्हारा पत्र मिला। तीन पत्र स्यभग क्षेत्र गाव मिले, मह देलीपैयीना नमूना बहा जा सकता है।

महादेवकी कडी परीक्षा हो रही है। समन्न है अनुना स्वास्थ्य कुछ गिर आष। परन्तु और आच नही आयेगी। जीवणानीके नाम पत्र आया था, अनुके जवायमें भैने रुम्बा सदेशा भेजा है। परन्तु जब तुम्हें रिखनेका अवसर आये तम अस प्रकार लियना

Whilst I need not receive Mahadev's letters, he must not think that I cannot have time to read them. The Gita portion was technical and I felt that there was no immediate need for me to give my opinion. And the fact is that I have so little regard for my own technical meaning of the verses. Where the meaning does not fit in with my interpretation as a whole, I should naturally have to examine it, but speaking in general terms one meaning would be to me as good as any other and therefore I should readily accept Mahadev's considered interpretation in preference to my own which after all must have been an adoption of some single author's version. He should, therefore, prosecute his researches and his work of translation without waiting

१ यह पत्र डाह्यामाजीको सम्बोधन करके लिया गया है। परन्तु सरदारके लिखे था, जो खुम समय नासिक जेलमें थे। महादेव-भाजी अस समय वेलगाव जेलमें थे और खुन्हें श्री जीवणजी देसाजीके मारफत लिखा जाता था।

for my opinion. When it is all completed, of course I shall have ample time, God willing, to go through it.

I take it that Mahadev has read B. Shaw's 'Adventures of the Black Girl in her search for God'. I am sending him today 'Adventures of the White Girl in her search for God' by Cff. Maxwell. If he gets it safely, he will acknowledge it in his next letter.

मैं वेलगांव पहुंचूंगा तो मणि और महादेवसे मिलनेका प्रयत्न जरूर करूंगा।

वापुके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाशी पटेल, रामनिवास, पारेख स्ट्रीट, वम्बशी – ४

१. महादेवके पत्र मेरे नाम आने ही चाहिये बैसा हुँ जाग्रह तो में नहीं करता, परन्तु असते अुन्हें यह नहीं लगना चाहिये कि अुनके पत्र पड़नेका मेरे पास समय नहीं है। गीतावाला भाग शास्त्रीय था। और मुसे लगा कि बुस पर मुझे राव देनेकी तत्काल जरूरत नहीं थी। असल वात तो यह है कि श्लोकोंका में स्वयं जो अये करू अुनके वारेमें मुझे बहुत कम आदर है। कुल मिलाकर मेरी अपनी व्याख्याके साथ जहां किसी श्लोकके अयंका मेल न बैठे वहां, जैसा कि स्वाभाविक है, में अुस अयंकी जांच करूंगा, परन्तु आम तौर पर कहूं तो मेरे लिजे तो अुसका अक अर्य दूसरे अयंके वरावर ही स्वीकार्य होगा। जिसलिओ में तो अपने अर्यकी अपेक्षा महादेवके वहुत अध्ययनपूर्ण अर्यकी तुरन्त स्वीकार कर लूंगा। कारण, मेरा अर्य तो मेरा स्वीकार किया हुआ किसी अक ही भाष्यकारका अर्य होगा। जिसलिओ महादेवको मेरी रायकी प्रतीक्षा किये विना अपना संशोधन और अनुवादका काम जारी रखना चाहिये। वह पूरा, हो जायगा तव अीक्वरेच्छा होगी तो यह सब पढ़ लेनेका मुझे काफी अवकाश मिलेगा।

चि॰ हाह्यामात्री,

वल्लममाओकी तबीयतके स्योरेबार समाचार मुगे लौटती हाकने भेजो।

मणिवहनसे वहना कि मुझे स्पौरेवार पत्र लिखे। अपने स्वाम्य्यके^र पूरे समाचार दे। महादेव^र तो खबर छायेंगे ही।

तुम्हारा काम ठीक चल रहा होगा।

बापुके आधीर्वाद

डाह्याभाओं बल्लभभाओं पटेल, रामनिवास, पारेव स्ट्रीट, बम्बओं -- ४

15

सेवाग्राम-वर्षा, सी पी. ९-3-'४१

चि॰ हाह्याभाशी,

सायका पत्र यदि सरदारको मिल सकता हो तो सुले तौर पर भेज देना या दे देना।

तुम्हारी गृहस्यी अत्तम चल रही होगी और बाबा मजा करता होगा।

में मान लेता हू कि महादेवने बी० धाँ की 'ओश्वरकी शोधमें काली कन्याके साहस' नामक पुस्तक पढ़ी होगी। आज में अुन्हें मैक्सवेलकी 'ओश्वरकी शोधमें गोरी कन्याके साहस' पुस्तक मेज रहा हू। यह अुन्हें सही-सलामन मिल जाय तो अपने दूसरे पत्रमें वे असकी पहुंच लिखें।

र ता० १४-७-४३४ के दिन पू० बागूको नामिक जेलमे स्वास्म्यके कारण छोड दिया था।

२ मैं भी ता०८ – ७ – '३४ को छूटी थी। ३ महादेवभाशी भी ता०१ – ७ – '३४ को छूटे थे। यह याद रखना कि तुम्हें और शान्तिकुमारको २० लाख अिकट्ठें करने ही होंगे । मैं आशा रखूगा।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहनसे मिलो तो कहना कि तबीयत खूव सुघारे।

वापू

श्री डाह्याभाशी पटेल, ६८, मरीन ड्रालिव, वम्बबी

१७

सेवाग्राम-वर्घा, सी. पी. ७-५-'४१

वि॰ डाह्याभाकी,

सायके पत्र यथास्यान भेज सको तो भेज देना।

महादेवका पत्र या तो ज्योंका त्यों भेज देना या असकी नकल भेज देना।

तुम्हारा गृहस्थी ठीक चल रही होगी। वावाको दो पंक्तियां लिखनेको प्रेरित करना।

वापुके आशीर्वाद

श्री डाह्याभावी पटेल, ६८, मरीन ड्राजिव, वम्बनी

१८

त्तेवाग्राम, १५–८–'४४

नि॰ डाह्यामाञी,

मुझे तुम्हारे घर रहनेके लिखे वहुत लाग्रह किया गया, परन्तु मैं पसीजा नहीं। किसीकी नाराजगी होगी, महज बिसलिखे विङ्ला-भवन

रे. डाह्मामाओ और शान्तिकुमार वर्घो गये थे तब खादीके सुत्पादनके लिन्ने वीस लाख रुपये जमा करनेकी वात हुनी थी। जिसीका जिक है।

मैं छोड़ नहीं सकता। तुम्हारे यहां रहना तो मुझे पसन्द ही होगा। मैंने तुम्हारा घर कभी देखा ही नहीं। परन्तु मुझे तो जो कर्तव्य स्पे असीना पालन करना चाहिये।

मै सनिवारको वहा पहुंचनेकी आसा रखता हूं। समद है रिवन् बारको बायस जा सक्।

सबको आशिष।

बापूने आसीर्वाद

थी डाह्याभाओं पटेल, ६८, मरीन ड्राजिव, बम्बजी

29 -

सेवाग्राम, १९-१०-१४४

चि॰ डाह्याभाजी,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा खयाल है कि हम तलाशी की शर्त हरिगज नहीं मान सकते। तलाशीकी शर्त पर ही जाना हो तो जानेका लोभ छोड दिया जाय। मेरा खयाल है कि अन लोगोने यह शर्त न रखी हो तो हो आना और तलाशी लेना चाहें तो अनकार कर देना।

मणिबहनको ओरवर समालनेवाला है। यह बडो जल्दीमें लिख रहा है।

बापूके बाशीर्वाद

थी डाह्यामाओं पटेल, . ६८, मरीन ड्राञ्जिव, वम्बजी

वेलगाव जेलमें अधिकारी राजनीतिक कैदियोंसे मिलने आनेवालोकी पहले तलाशी छेना चाहते थे। अुसीका अुल्लेख है।

डाह्याभाअी पटेलके पुत्रको्

8

वर्वा, ७-१०-'३३

चि॰ वावा,

तेरा पत्र मिला। अक्षर मोतीके दाने जैसे लिखना सीखना। बुआके साय जरूर आना। मुझे अच्छा लगेगा। खेलनेको भी मिलेगा। तेरे जैसे और वालक भी यहां हैं। दादा को पत्र लिखता है क्या? वापूके आशीर्वाद

२

वोरसद, ३१-५-'३५

चि॰ वाबा,

लाज तो तेरी वर्षगांठ है, अँसा मणिवहन कहती हैं। अस दिन तू क्या करेगा? कुछ न कुछ सेवाका काम नहीं करेगा? करना हो तो तू मणिवहनसे पूछना। तू बड़ा तो होगा ही। वैसाही समझदार भी वनना। वापके आशीर्वाद

₹

सेगांव-वर्घा, ३-६-'३८

चि॰ वावा,

तेरा पत्र आज ही मिला। तेरी कौनसी वर्पगांठ है? यह लिखना कैसे मूल गया? और जो आशीर्वाद मांगता है वह क्या कुछ देता नहीं? तूं क्या देता है? नये सालमें क्या नया काम करेगा?

वापूके आशीर्वाद

१. मैं।

२. पूज्य वापू ।

गांघीजीकी कुछ नंत्री पुस्तकें ओसा – मेरी नजरमें

लेलक गांधीओ; सम्रा० आर० के० प्रभु०

शीमाश्री धर्मसे सथा बाश्रिवलसे गाधीजीका पहला परिचय कव हुआ, बाश्रिवलके कौनसे भागोका अनके मन पर गहरा प्रभाव पडा, भुनकी दृष्टिमें श्रीमाके जीवन-कार्य और सन्देशका मूल्य, धर्म-परिवर्तनकी प्रवृत्ति पर खुनके विचार, पश्चिमके वर्तमान श्रीसाश्री धर्मके कार्रमें भूनका मत श्रादि विषयोका समावेश श्रिस मग्रहमें किया गया है। अन्तमें 'गिरि-प्रवचन' का सार भी दिशा गया है।

कीमत ०३५

डावसर्च ०.१३ 🕜

गांवोको मददमें

लेखकः गांधीजी; अनु॰ सोमेश्वर पुरोहित

शिस पुस्तिकामें दी गंभी गांधीजीकी सूचनाओं पर अगर भारतके गांव और अुनके सेवक पूरा ध्यान दें तथा अन सूचनाओंको अमृतमें अुतारे, तो सारे गांव साफ-सुपरे, स्वस्य, प्रसप्त और सुखी बन सकते हैं। सबसे बडा जोर गांधीजीने जिस बात पर दिया है कि अगर गांवके लोग आलम छोडकर आपमी सहयोगसे परिश्रम करें, तो वे अपने गांवोको किसी बाहरी मददके बिना भी सुख और आनन्दके धाम बना सकते हैं।

कीमत ०४०

डाक्सर्च ० १३

गीताका संदेश

लेलक गायीजी; सप्रा० आर० के० प्रभु

अस पुस्तिकामें गीता और अहिसा, गीता और यज्ञकी भावना, हिन्दू धर्ममें गीताका स्थान, गीताके कृष्ण, हिन्दू विद्यार्थी और गीताका शिक्षण तथा गीताकी बेन्द्रीय शिक्षा जैसे विषयोकी मक्षेपमें स्पष्ट चर्ची की गओ है। असुमें गीताके अमर सन्देशका सार आ जाता है।

कीमत ०३०

डाक्लर्च ०१३

मंगल-प्रभात

लेखकः गांघीजो; अनु० अमृतलाल नाणावटी

सन् १९३० में गांघीजी यरवडा जेलमें थे। वहांसे वे प्रत्येक मंगलवारको आश्रमके ब्रतों पर विवेचन लिखकर सावरमती आश्रमके सदस्योंको मेजा करते थे। जिसमें सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह आदि आश्रम-ब्रतोंका गांघीजी द्वारा किया हुआ सरल और सुवोध विवेचन पाठकोंको मिलेगा। जिस हिन्दी अनुवादमें सिर्फ बर्दू जाननेवालोंकी सुविधाके लिखे आसान अुर्दू शब्द भी दिये गये हैं। कीमत ०.३७

मेरा समाजवाद

लेखक: गांघीजी; संग्रा० आर० के० प्रभु

गांचीजी समाजवादका अयं सर्वोदय करते थे। अनका कहना या कि भारतका समाजवाद 'सर्व भूमि गोपालकी' और 'तेन त्यक्तेन मूंजीयाः' अन मंत्रोंमें समा जाता है। प्रेम, शांति और समताका ध्येय रखनेवाले समाजवादकी स्थापना करनेमें आहसक साधन ही सफल हो सकते हैं। असी विचारकी चर्चा अस पुस्तिकामें की गशी है। कीमत o.४०

मेरे सपनोंका भारत

लेखक: गांबीजी: संग्रा० सार० के० प्रमु

विस संग्रहमें भारतके सामाजिक, वाधिक, राजनीतिक, धार्मिक वादि सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर गांधीजीके विचार पेश किये गये हैं। जिनसे पता चलता है कि राष्ट्रपिता स्वतंत्र भारतसे क्या क्या बाशायें रखते थे और असका कैसा निर्माण करना चाहते थे। राष्ट्रपित डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद अपनी प्रस्तावनामें लिखते हैं: "श्री आर० के॰ प्रभुने गांधीजीके अत्यन्त प्रभावशाली और अर्थपूर्ण अद्भरणोंका संग्रह जिस पुस्तकमें किया है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक गांधीजीकी शिक्षाके बुनियादी असूलोंको प्रस्तुत करनेवाले साहित्यमें जेक कीमती वृद्धि करेगी।"

- डाकखर्च १.००

विश्वशांतिका अहिंसक मार्ग

लेखक गांधीजी; गया० आर० के० प्रमु

आज विश्वमें शातिकी स्थापना करनेके लिओ दुनियाके समस्त राष्ट्र और अनके नेता प्रयत्न कर रहे हैं। जिस ध्येयकी मिडिका गाधीजीने अविमान सच्चा और अहिंसक मार्ग यह बताया है: दुनियाके सारे राष्ट्र अव-दूसरेका शोषण करनेवाली माम्राज्यवादी नीतिको छोडें, परम्पर प्रेम और सहिष्णुताकी भावना बढ़ायें और युद्धके सहारक शस्त्रोका त्याग करें, तो ही स्थायी शांति कायम हो सकती है। यही अस पुस्तकका केन्द्रीय विचार है।

कीमन ०४०

ा । व्या इतिस्ति । १३

शरीर-श्रम 🕐

लेखकः गांधीजी; सग्रा० रवीन्द्र वेळेकर

हमारे समाजमें शरीरकी महनतको और महनत करने रीटी कमानेवालाको हलकी नजरसे देखा जाता है। गाधीजीने श्रमकी प्रति-प्टाको बढानेका प्रयत्न किया। यहा श्रिस विषयमें गाधीजीके जो विचार पेश किये गये है अनसे शरीर-श्रमको व्यास्था और अमके महत्त्वका, अमकी आवश्यकताका और समाजको असमे होनेवाले लामोका पता चलता है।

कीमत ०२५ ँँ । ो ी डाक्सर्च ०१३

सन्तति-नियमन

सही मार्ग और गलत मार्ग लेखक गाधीजी; सप्रा० आर० के० प्रभु

शिम पुस्तिकामें सन्तिति-नियमनके सही श्रुपायो और गलत श्रुपायोना विचार किया गया है। गाधीजी कृत्रिम साधनीकी मददसे सन्तित-नियमन करनेके सख्त विरोधी थे। श्रिमना श्रुत्तम मार्ग वे आत्म-सयमको ही भानते थे, जो मानव-जानिको श्रूचा श्रुठानेवाला और असका कल्याण-करनेवाला है।

असका कल्याण करनेवाला है। नीमत ०,४६ में RHUPAL Con डानखर्च ०१३